जैन समाज नहीं, जैन धर्म है

हिन्दुस्तान में रहने वाला नागरिक हिंदू है

हार्दिक हुंडिया
प्रधान संपादक

स्टार में शान... रिपोर्ट में जान...

RNI No. : MAHHIN/2008/25059
STAR REPORT (HINDI) PRGI Regd. No. : 97616

स्टार रिपोर्ट™

STAR REPORT SEPTEMBER 2026 | Volume : 19 | Issue : 09 | Mumbai | Pages : 60 | Price Rs.100/-

मिलावटखोरों का सफाया कर रहे हैं आईएस तुकाराम मुंढे

समर्पण की मिसाल हैं कैंसर के डॉक्टर नागराज हुइलगोल

मरीजों के लिए आशा की किरण है न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. मनोज राजानी

जापान के जैन धर्म प्रेमी मुंबई में चार्तुमास की भक्ति में हुए लीन

समतागुण रसिक मुनिराज निपुणरत्न विजय जी म.सा.

अदाणी समूह:

एक छोटे व्यापार से वैश्विक औद्योगिक साम्राज्य तक का सफर

18 साल की दहलीज़ पार करके नई ऊर्जा के साथ तारक मेहता का उल्टा चश्मा

निर्माता आसित मोदी को मिलेगा

"मैन ऑफ द मिलेनियम" सम्मान

ऐतिहासिक पहल

एक दिन पूरा विश्व मनायेगा

"इंन्टरनेशनल डायमंड डे"

हीरा सबके लिए, हीरा सबका है।

INTERNATIONAL DIAMOND DAY

हीरा उद्योग को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में एक नई सोच

पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं प्रमुख राजनीतिज्ञ प्रदिप जैन आदित्य के सुपुत्र गौरव के विवाह में सामाजिक एंव राजनैतिक हस्तियां ने दिये अनमोल आर्शीवाद

दोस्त नंबर वन भी हैं गोविंदा

प्रिंट मीडिया के आख़िरी महानायकः बाबा शिंगोटे

जगत के नाथ श्री कृष्ण में विशेष श्रद्धा रखते हैं परीमल नथवाणी

हम आभारी हैं
सुधीर मेहता
भरत शाह
मंगल प्रभात लोढ़ा
विजय शाह
दिनेश अग्रवाल
अरविंद अजबाणी
रमेश मुथा
सम्पतराज चौधरी
ललित अदाणी
बिपिन पुनमिया
पृथ्वीराज कोठारी
वाघजी वोरा
आनंद पंडित
आसिफ कुरैशी
रिजवान मर्चेंट
गौतम जैन
आसित मोदी
प्रवीण कोटक
बिपिन गाला
श्रीकांत झवेरी
गजराज पगारिया
मनीष मेहता
राजकुमार दुबे
श्रीपाल शाह
हंसमुख गढेचा
जिग्नेश शाह
कुमार मेहता
कौशिक मेहता
इन्दर राणावत
चंपालाल भंडारी
किरण संघवी
माणेक मेहता
महावीर चौधरी

जैन समाज नहीं, जैन धर्म है
हिन्दुस्तान में रहने वाला नागरिक हिंदू है - हार्दिक हुंडिया

"जैन धर्म का इतिहास लाखो साल पुराना है, जैन एक ऐसा धर्म है जिस में त्याग, तपस्या, साधना, सयंम, व्रत और समता जैसे अनेक कई गुणों का भंडार है। जैन धर्म पालने वाले हिन्दुस्तान के ही हिंदू है ये बात कहते हुए जैन समाज के अग्रणी हार्दिक हुँडिया ने कहा की जो लोग हिंदू और जैन के बीच तनाव पैदा करके ख़ुदके स्वार्थ के लिए गंदी राजनीति करना चाहते है ऐसे लोगो को समाज द्वारा पहचानकर समाज के सामने खुल्ला करना चाहिए और ऐसे लोगो की बातो में भी नहीं आना चाहिए।

हिंदू मेरे हिसाब से एक प्रजावाचक शब्द है। जब अमेरिका में रहने वाला नागरिक अमेरिकन, जापान में रहने वाला जापानी, पाकिस्तान में रहने वाला नागरिक पाकिस्तानी तो हिंदुस्थान में रहने वाला नागरिक हिंदू है या नहीं ? हार्दिक हुंडिया ने ये तीखा सवाल उन लोगो से किया है जो हिंदू और जैनो की बीच राजनीति करना चाहते है ? आज भी कई जैनो भगवान शंकर के शिव भक्त भक्त है, उनके घरों में अजैन देव देवियों के मंदिर है। हार्दिक हुंडिया ने कहा की हमारे जैन धर्म के २४ तीर्थंकर हुए है सब क्षत्रिय थे।

हिन्दुस्तान में कई धर्म है जिस में जैन धर्म भी हिन्दुस्तान की संस्कृति का ही भाग है। जैन कभी हिन्दुस्तान से अलग नहीं थे, नहीं है और नहीं होंगे क्योंकी ये भी हिन्दुस्तान का ही भाग है। हम हमारा इतिहास देखते है तो भगवान श्री नेमीनाथ दादा और भगवान श्री कृष्ण एक दूसरे पितराई भाई-भाई थे। हिंदुस्तानियों का गौरव जैन धर्म ने कभी भी अपने आप को हिंदुओ से अलग नहीं समझा। हिंदू और जैनो में दरार डालने वाले लोग ना हिंदूओ के लिए, ना जैन धर्म के लिये कुछ नहीं करने वाले। यदि हम दोनों भाई के बीच भेदभाव पैदा करते है तो ऐसे लोगो से दूरी बनाये रखें , वो हिंदू तरफ़ी बात करते है तो पहले वो बताए की हिंदुओं के लिए आपने क्या किया ?

हिन्दुस्तान का हिंदू जो भी धर्म का अनुयाई है और उसने वास्तव में धर्म शिखा होता तो क्या वो भाई भाई के बीच तनाव पैदा करता ? अरे तनाव पैदा करने वाली बात भी नहीं करता?

हार्दिक हुंडिया ने कहा कि आज हिंदुस्तानियों को एक होने की जरूरत है, वहाँ हिंदू प्रजा के बीच तनाव पैदा करने वाली बात भी नहीं करनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ धारा शास्त्री श्री हरिशंकर जैन, विष्णु जैन, जैन धर्म के अनुआई होकर अपनी जान की बाज़ी लगाकर अजैन मंदिरों के लिए लड़ते हैं, क्यों?

वो मानते है की मैं हिंदुस्तान का हिंदू हूँ। हिन्दुस्तान की धरोहर को कोई भी नुकसान ना हो वो देखना हम सभी का फ़र्ज़ है। कई जैन तीर्थों में किसी विधर्मीओ ने हमला किया है तो वहाँ हिन्दुस्तान के हिंदू आकर खड़े हुए है, वहाँ जैन अजैन का भेद भाव नहीं था तभी तो हम देश को, धर्म को संभाल पाये है। हिंदुस्तान में जैसे हर धर्म है वैसे जैन भी एक धर्म है जो भारतीय संस्कृति का हिस्सा है। हम हिन्दुस्तानी एक थे, हैं और एक ही रहेंगे।

व्यंग चित्रकार
राज पाटील

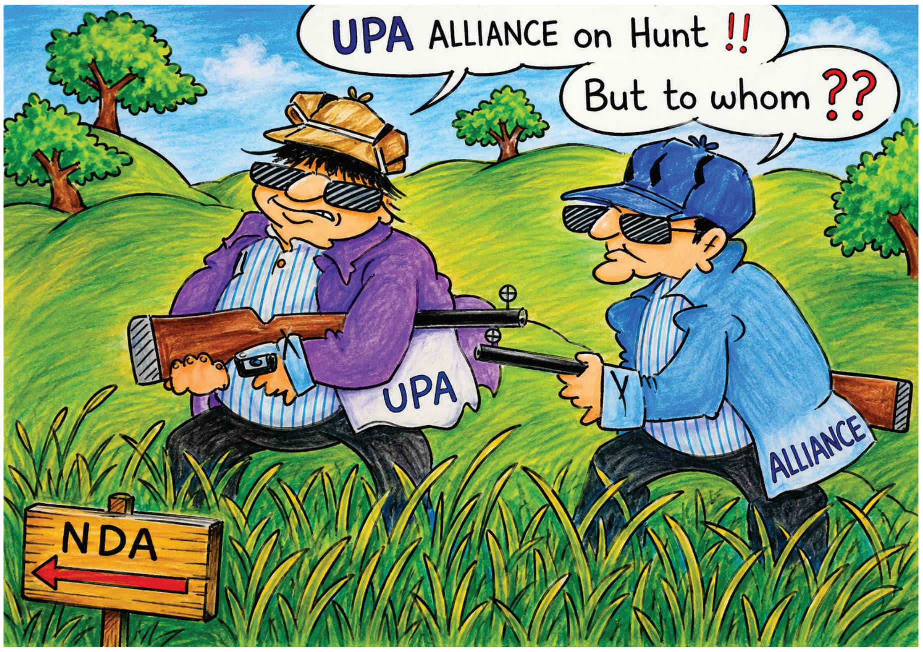

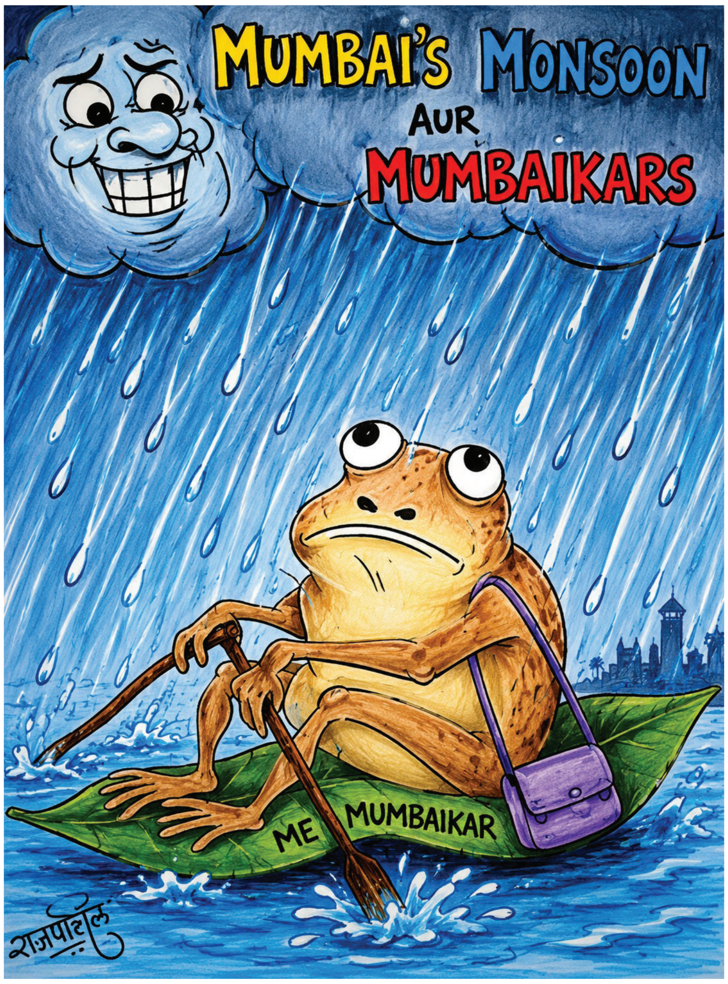

स्टार में शान... रिपोर्ट में जान...

स्टार रिपोर्ट

STAR REPORT

हार्दिक हुंडिया
प्रधान संपादक

सुनिता हुंडिया
निर्देशक एवं परिकल्पना

एड. आसिफ कुरैशी
कानूनी सलाहकार

रश्मि दवे
सह संपादक

राकेश हुंडिया
गुजरात ब्यूरो प्रमुख, अहमदाबाद

राज पाटील व्यंग चित्रकार

आशुतोष गुप्ता
क्रिएटिव हेड

श्रद्धा रायबान
क्रिएटिव असिस्टेंट

अशोक दोशी
सलाहकार

Phone : 9769611111
9167251251

E-mail : hardik.starreport@gmail.com
hardik.internationaldiamondday@gmail.com

(किसी भी विवाद के लिये न्याय क्षेत्र मुंबई ही होगा)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक हार्दिक एस.हुंडिया द्वारा निराह्ली ग्राफिक्स, 1201-ए, हबटाउन विवा, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, शंकरवाड़ी, जोगेश्वरी (पुर्व), मुंबई-400060 से मुद्रित और 1201-ए, हबटाउन विवा, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, शंकरवाड़ी, जोगेश्वरी (पुर्व), मुंबई-400060 से प्रकाशित

संपादकः हार्दिक एस. हुंडिया

स्टार में खास... विषयावली

03 | **संपादकीय**
हिन्दुस्तान में रहने वाला नागरिक हिंदू है - हार्दिक हुंडिया

08 | **स्टार कवर स्टोरी**
हीरा है सबके लिए

10 | **आईडीडी विशेष**
एक दिन पूरा विश्व मनायेगा इंटरनेशनल डायमंड डे

12 | **स्टार सख्शीयत**
अदाणी समूहः एक छोटे व्यापार से औद्योगिक समूह तक

17 | **स्टार फेस्टिवल**
श्रीकृष्ण का जन्म रहस्य उनके जीवन से मिलती है धर्म, कर्म और सत्य की प्रेरणा

18 | **स्टार अनाउंसमेंट**
निर्माता आसित मोदी को मिलेगा "मैन ऑफ द मिलेनियम सम्मान"

20 | **स्टार स्टोरी**
तारक मेहता का उल्टा चश्मा हुआ 18 साल का

25 | **आध्यात्म**
जापान के जैन धर्म प्रेमी मुंबई में चार्तुमास की भक्ति में हुए लीन

26 | **स्टार रिलीजन**
जापान में बनेगा विश्व का गुरु मंदिर बनेगा

29 | **मित्रता दिवस विशेष**
कृष्ण सुदामा की दोस्ती

30 | **स्टार सख्शीयत**
मिलावटखोरों का सफाया कर रहे हैं एफडीए के सिंघम सम्राट तुकाराम मुंढे

33 | **स्टार श्रद्धांजली**
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जीवनगाथा

34 | **स्टार सख्शीयत**
प्रिंट मीडिया के आखिरी महानायकः बाबा शिंगोटे

37 | **पर्दाफास**
IPO में वितीय आंकड़ों की हेराफेरी सट्टेबाजी पर नकेल कसने का समय आ गया हैः रमेश बागरेचा

38 | **स्टार फैक्ट चेक**
सर्जनकर्ता भगवान का विसजर्न क्यों ?

41 | **स्टार ब्रेकिंग**
मुंबई का हरियाली तीज समारोह बना आकर्षण का केंद्र

42 | **स्टार सख्शीयत**
अनिल गलगलीः संघर्ष, पत्रकारिता और जनहित की आवाज़ का सफर

43 | **गुरू पूर्णिमा विशेष**
जरुरी है गुरु का आशीर्वाद

44 | **स्टार सख्शीयत**
सपनों को साकार करने की जीत पत्रकार इन्द्रजीत

46 | **कलमकारी कला**
भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी ने ओबामा को भेंट किया कच्छ की रोगन आर्ट कला का पेन्टींग

48 | **स्टार सख्शीयत**
कैंसर उपचार के क्षेत्र में समर्पण की मिसाल डॉ. नागराज हुइलगोल

50 | **स्टार ब्रेकिंग**
पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रमुख राजनीतिक प्रदिप जैन आदित्य के सुपुत्र गौरव के विवाह में सामाजिक एवं राजनैतिक हस्तियां ने दिये अनमोल आर्शीवाद

52 | **स्टार सख्शीयत**
मरीजों के लिए आशा का किरण है डॉ. मनोज राजानी वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट

54 | **स्टार सख्शीयत**
श्रीकृष्ण में विशेष श्रद्धा रखते हैं परिमल नथवाणी

56 | **स्टार सख्शीयत**
दोस्त नंबर वन भी हैं गोविंदा

58 | **छमा पर्व विशेष**
ऐसा व्यवहार रखो कि बोलने की जरुरत न पड़े मिच्छामी दुक्कड़म

42

44

ONE TEXT CAN WAIT, A LIFE CAN'T WAIT

अमित शाह

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

दिनांक : 27 जुलाई, 2026

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि **स्टार रिपोर्ट** द्वारा आदिवासी समाज की गुजरात की लोकगायिका, **पद्मश्री दीवाली बेन भील जी** को समर्पित विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं इस विशेषांक से जुड़े सभी पदाधिकारियों, संपादकीय मंडल एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

जूनागढ़, गुजरात की पावन धरा से निकलकर अपनी कोकिल स्वर से गुजरात ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व में लोकसंगीत की रसधारा प्रवाहित करने वाली दीवाली बेन भील जी का जीवन हम सभी के लिए एक महान प्रेरणा है। अपनी मधुर एवं ओजस्वी लोकगायकी के माध्यम से उन्होंने गुजरात की सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया। उनका जीवन इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि लोककला और लोकसंस्कृति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती हैं तथा उनका संरक्षण हमारी साझा जिम्मेदारी है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में हमारी सरकार **'अमृत काल'** में भारत की सांस्कृतिक विरासत, जनजातीय गौरव एवं लोककलाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए निरंतर कार्य कर रही है। **'विकसित भारत@2047'** के संकल्प की आधारशिला हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएँ और विविध लोकधाराएँ हैं। ऐसे में दीवाली बेन भील जी जैसी विभूतियों का जीवन और कृतित्व समाज को अपनी जड़ों से जुड़े रहने तथा सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए निरंतर प्रेरित करता रहेगा।

आदिवासी समाज की सांस्कृतिक चेतना को सशक्त बनाने तथा लोक परंपराओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में **पद्मश्री दीवाली बेन भील जी** का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक उनके प्रेरणास्पद जीवन एवं लोकसंगीत के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान से नई पीढ़ी को परिचित कराते हुए भारतीय लोक एवं आदिवासी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान, गौरव एवं आत्मीयता की भावना को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

मंगलकामनाओं सहित,

आपका

(अमित शाह)

श्री हार्दिक हुंडिया
स्टार रिपोर्ट, ए-1201, 12वाँ तल,
हबटाउन विवा, शंकरवाड़ी, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे,
जोगेश्वरी (ईस्ट), मुंबई, महाराष्ट्र – 400 060

कार्यालय : गृह मंत्रालय, कर्तव्य भवन–03, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 23092462, 23094686, फैक्स : 23094221

हीरा है सबके लिए- हार्दिक हुंडिया

संस्थापक एवं प्रणेता इन्टरनेशनल डायमंड डे ।

हीरा सदा के लिए तो है ही पर अब इन्टरनेशनल डायमंड डे के संस्थापक हार्दिक हुंडिया ने एक नया स्लोगन संसार के सभी हीरा प्रेमीओं के लिए दिया है हीरा सब के लिए..

१२ अगस्त के दिन संसार को, उद्योग जगत को और भारतीय रत्न कलाकार भाईयों के मान में, भारत के हीरों के व्यापकता का महत्व और बढ़ाने के साथ-साथ कोहिनूर हीरे जैसे अनमोल महानुभावों का समाज में, संसार में अनुठे योगदान पर उनका "कोहिनूर ऑफ इन्डिया" सम्मान से सम्मानित करना यह विचार खुद हीरे जैसे विचार रखते हैं, हीरे जैसे तटस्थ हैं, सम्मान की भावना लिए हर समय समाज को पारदर्शी और निष्पक्ष खबर से जागृत करने वाले पत्रकार जगत के आईकोन, गुजराती भाषा में हीरा माणेक अखबार, हिन्दी में स्टार रिपोर्ट मेगेज़िन और अंग्रेजी भाषा में इन्टरनेशनल डायमंड डे बुक को प्रकाशित करने वाले निर्भिक कलम प्रहरी हार्दिक हुंडिया अपने ह्रदय में व्यापार ,उद्योग, धर्म के लिए उच्च विचार लेकर चलते हैं।

हार्दिक हुंडिया अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए कहा कि सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ पवित्र भूमि भारत में मेरा जन्म हुआ इस से बड़े सौभाग्य की बात मेरे लिये हम सभी के लिये और क्या होगी? देश में सकारात्मक पत्रकारिता करते करते करीब २९ साल पूरे हो गये, सबसे ज्यादा मान, इज्जत, सम्मान मुझे हीरा बाज़ार से मिला है। अभी सभी क्षेत्र से आशीर्वाद मिल रहे है। हीरा माणेक, स्टार रिपोर्ट और इंटरनेशनल डायमंड डे ये तीनों अखबारो ने मुझे बहुत कुछ दिया है, इसके लिए आप सभी का ऋणी रहूँगा।

हीरा बाज़ार की सकारात्मक खबरें प्रकाशित करते करते एक अनमोल विचार आया कि हीरा है सदा के लिये लेकिन सबके लिये कब बने?

समाज का कोई भी इंसान अच्छा काम करता है तो वो समाज का हीरो है। ये अनमोल विचार के साथ १२ अगस्त को ज्योतिष शास्त्र के अनुसार "इन्टरनेशनल डायमंड डे" की स्थापना की, देश के विविध क्षेत्र में अनमोल कार्य करने वाले महानुभावों को "कोहिनूर ऑफ़ इंडिया" का सम्मान १२ अगस्त "इन्टरनेशनल डायमंड डे" के दिन दिया है।

विदेश से जो डे भारत में आये है- किस डे, हग डे जो भारतीय संस्कृति को बदनाम करते हैं

लेकिन हमारा "इन्टरनेशनल डायमंड डे" यानी हमारी ज़िंदगी में ख़ुशिया भरने वाला हमारा व्यापार और वो व्यापार को साथ और सहकार देने वाले सफ़ाई कर्मचारी से लेकर मालिक तक सभी का साथ मिला तब सभी का विकास हुआ। हीरा बाज़ार की बात करूँ तो खदान से निकला पत्थर जब हीरा बनकरके ज्वैलरी में फिट हो कर डायमंड लवर जब अपने तन पर पहनते है तब तक करोड़ों लोगो को रोज़ी रोटी मिल जाती है।

आइये हम सब मिलकर हमारे देश का स्थापित डे यानी "इन्टरनेशनल डायमंड डे" पूरी दुनिया में हीरे की तरह चमके यही भावना के साथ आपका साथ सहकार चाहिये। "पत्थर भी हीरा बने, हीरो का ये हार बनाये, आओ हम सभी मिलकर , इन्टरनेशनल डायमंड डे मनायें"

"हीरा है सदा के लिये" दुनिया का एक बहुत प्रसिद्ध विज्ञापन नारा है, जिसे डी बियर्स कंपनी ने 1948 में बनाया था। परंतु हार्दिक हुंडिया का कहना है कि हीरा सदा के लिए के साथ साथ सब के लिए ह। आधुनिक समय में प्रयोगशाला (लैब) में कम कीमत पर हीरे बनने के कारण इसे "सब के लिए" भी कहा जाना ज्यादा लाज़मी है। हीरे के बारे में मुख्य बातें सदा के लिए हीरा दुनिया की सबसे मजबूत चीज है, जो आसानी से खराब या पुरानी नहीं होती। सब के लिए लैब में बनने वाले कृत्रिम हीरों ने इसे आम लोगों के बजट में ला दिया है। इनका उपयोग सुंदर गहने बनाने और भारी उद्योगों में काटने के औजारों के रूप में होता है।

"हीरा है सदा के लिए" विज्ञापन की दुनिया का एक प्रसिद्ध नारा है, जिसे वर्ष 1947 में फ्रांसिस गेरेटी ने डी बीयर्स कंपनी के लिए गढ़ा था। इसका उद्देश्य हीरे को शाश्वत प्रेम और सगाई की अंगूठियों से जोड़ना था। यह नारा 1947 विज्ञापन एजेंसी एन.डब्लू. अय्यर की कॉपीराइटर फ्रांसिस गेरेटी ने यह वाक्य लिखा था। इस नारे ने हीरे को केवल एक पत्थर से बदलकर सच्चे प्यार और प्रतिबद्धता का प्रतीक बना दिया। सदी का सर्वश्रेष्ठ नारा साल 1999 में विज्ञापन युग ने इसे 20वीं सदी का सबसे महान विज्ञापन नारा घोषित किया था।

विज्ञान और वास्तविकता

कठोरता रसायन विज्ञान के अनुसार हीरा कार्बन का सबसे कठोर प्राकृतिक रूप है। बेहतरीन मनोवैज्ञानिक मार्केटिंग रणनीति थी जिसने दुनिया भर के बाजारों और संस्कृतियों को बदल दिया। हीरा एक पारदर्शी रत्न है। यह रासायनिक रूप से कार्बन का शुद्धतम रूप है। हीरा में प्रत्येक कार्बन परमाणु चार अन्य कार्बन परमाणुओं के साथ सह-संयोजी बन्ध द्वारा जुड़ा रहता है। कार्बन परमाणुओं के बाहरी कक्ष में उपस्थित सभी चारों इलेक्ट्रान सह-संयोजी बन्ध में भाग ले लेते हैं तथा एक भी इलेक्ट्रान संवतंत्र नहीं होता है।

इसलिए हीरा ऊष्मा तथा विद्युत का कुचालन होता है। हीरा में सभी कार्बन परमाणु बहुत ही शक्तिशाली सह-संयोजी बन्ध द्वारा जुड़े होते हैं, इसलिए यह बहुत कठोर होता है। हीरा प्राकृतिक पदार्थों में सबसे कठोर पदार्थ है इसकी कठोरता के कारण इसका प्रयोग कई उद्योगो तथा आभूषणों में किया जाता है। हीरे केवल सफ़ेद ही नहीं होते अशुद्धियों के कारण इसका शेड नीला, लाल, संतरा, पीला, हरा व काला होता है। हरा हीरा सबसे दुर्लभ है। हीरे को यदि ओवन में ७६३ डिग्री सेल्सियस पर गरम किया जाये, तो यह जलकर कार्बन डाइ-आक्साइड बना लेता है तथा बिल्कूल ही राख नहीं बचती है। इससे यह प्रमाणित होता है कि हीरा कार्बन का शुद्ध रूप है। हीरा रासायनिक तौर पर बहुत निष्क्रिय होता है एव सभी घोलकों में अघुलनशील होता है। इसका आपेक्षिक घनत्व ३.५१ होता है।

बहुत अधिक चमक होने के कारण हीरा को जवाहरात के रूप में उपयोग किया जाता है। हीरा उष्मीय किरणों के प्रति बहुत अधिक संवेदनशील होता है, इसलिए अतिशुद्ध थर्मामीटर बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। काले हीरे का उपयोग काँच काटने, दूसरे हीरे के काटने, हीरे पर पोलिशिंग करने तथा चट्टानों में छेद करने के लिए किया जाता है। हीरा खदान से निकाला जाता है। और बाद में पॉलिशिंग कर के चमकाया जाता है।

भारत से निकले हैं कई बेशकीमती हीरे

१८वीं शताब्दी में दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील में हीरों की खदानों का पता चलने से पहले तक दुनिया भर में भारत की गोलकुंडा खान से निकले हीरों की धाक थी। लेकिन यहाँ से निकले अधिकांश भारतीय हीरे या तो लापता हैं या विदेशी संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं। इनमें से एक हीरा ब्रिटेन की महारानी के ताज में जड़ा कोहिनूर भी है। सबसे अधिक वजन वाला हीरा ग्रेट मुगल गोलकुंडा की खान से १६५० में जब निकला तो इसका वजन ७८७ कैरेट था। जो कोहिनूर से करीब छह गुना अधिक था। आज कहाँ है किसी को पता नहीं।

ऐसा ही एक बहुमूल्य हीरा अहमदाबाद डायमंड था जो बाबर ने १५२६ में पानीपत की लड़ाई के बाद ग्वालियर के राजा विक्रमजीत को हराकर हांसिल किया था। इस दुर्लभ हीरे को आखिरी बार १९९० में लंदन के क्रिस्ले ऑक्सन हाउस की नीलामी में देखा गया था। द रिजेंट नामक १७०२ के आसपास गोलकुंडा की खान से निकला हीरा ४१० कैरेट था। जो बाद में नेपोलियन के पास पहुँचा। यह हीरा अब १४० कैरेट का हो चुका है और पेरिस के लेवोरे म्यूजियम में रखा गया है। इसी प्रकार ब्रोलिटी ऑफ इंडिया का ९०.८ कैरेट के ब्रोलिटी जिसे कोहिनूर से भी पुराना बताया जाता है, १२वीं शताब्दी में फ्रांस की महारानी ने खरीदा। आज यह कहाँ है कोई नहीं जानता।

एक और गुमनाम हीरा २०० कैरेट का ओरलोव था जिसे १८वीं शताब्दी में मैसूर के मंदिर की एक मूर्ति की आंख से फ्रांस के व्यापारी ने चुराया था। कुछ गुमनाम भारतीय हीरेः ग्रेट मुगल (२८० कैरेट), ओरलोव (२०० कैरेट), द रिजेंट (१४० कैरेट), ब्रोलिटी ऑफ इंडिया (९०.८ कैरेट), अहमदाबाद डायमंड (७८.८ कैरेट), द ब्लू होप (४५.५२ कैरेट), आगरा डायमंड (३२.२ कैरेट), द नेपाल (७८.४१)

दुनिया के ९० फीसदी हीरों के तराशने का काम भारत में होता है, ऐसे में यहाँ हीरा उद्योग के फलने-फूलने की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं।

"इन्टरनेशनल डायमंड डे" के प्रणेता एंव संस्थापक हार्दिक हुंडिया द्वारा स्थापित १२ अगस्त डायमंड डे संसार को हीरे के प्रति समर्पण और प्रेम के साथ साथ भारतीय हीरा व्यापार के साथ साथ वो सब इस दिन को मनाये जिसने अपने देश के विकास में अनुठा योगदान दिया है।

हर व्यक्ति हीरि पहने, खुशीयां मनाये। धनतेरस के दिन चांदी, अक्षय तृतिया के दिन सोना और "इन्टरनेशनल डायमंड डे" के दिन हीरा खरीदकर हीरे का मान बढ़ाये। "इन्टरनेशनल डायमंड डे" ना मेरा ना आपका पर ये हम सभी का है।

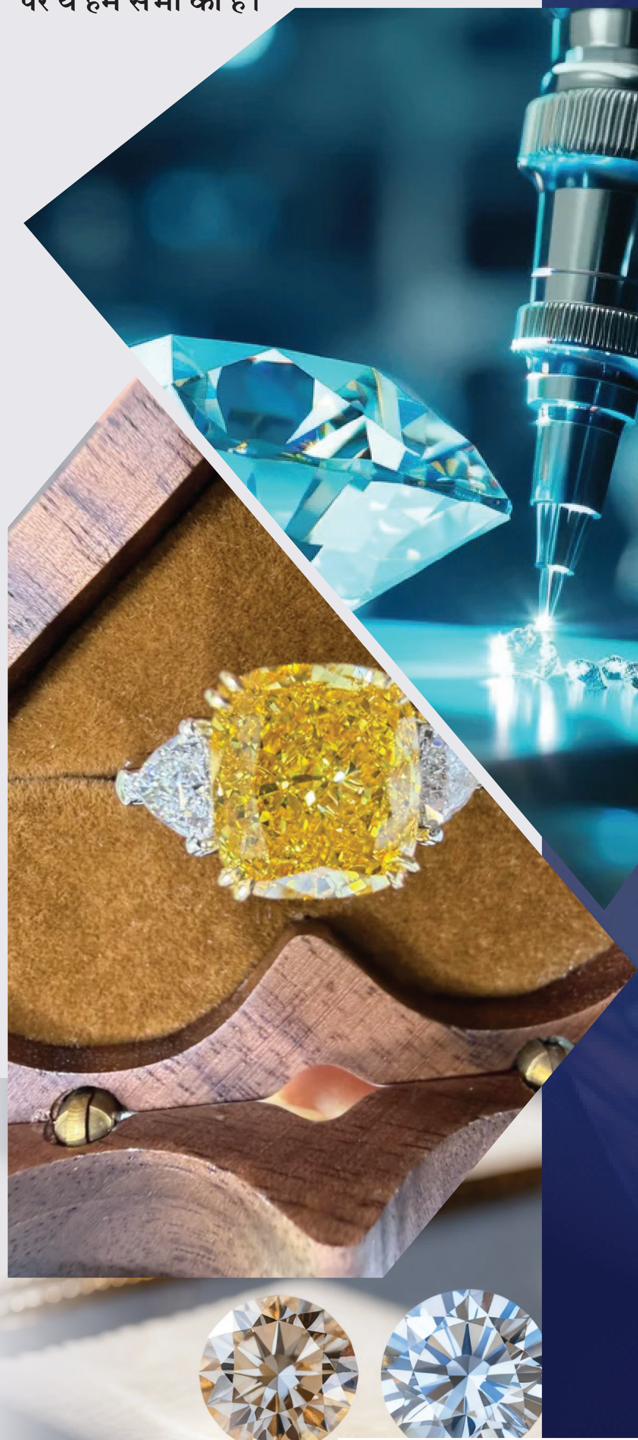

एक दिन पूरा विश्व इंटरनेशनल डायमंड डे मनाएगा !

- हार्दिक हुंडिया

विश्व में भारत आज हीरा उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। दुनिया के बड़े बड़े उद्योगपति, राजा, महाराजा, देश के प्रधान मंत्री। राष्ट्रपतिने यदि कोई रियल डायमंड की ज्वेलरी पहनी हो तो हो सकता है की उसमें जो हीरा फिट किया गया हो उसे भारत के रत्न कलाकर ने तैयार किया हो ? १२ अगस्त को "इंटरनेशनल डायमंड डे" के स्थापक हार्दिक हुंडिया ने आज मुंबई में घोषणा करते हुए कहा की हीरा पहले हर एक लोग नहीं पहन सकते थे, सिर्फ़ हम ये सुनकर खुश होते थे की हीरा है सदा के लिए लेकिन अब व्याख्या बदल चुकी है अब हार्दिक हुंडिया का स्लोगन है हीरा है सभी के लिए।

हमारे देश में अब लैब ग्रोन डायमंड का चलन बहुत बढ़ गया है क्युकी ये डायमंड रियल डायमंड जैसा दिखता है लेकिन भाव में सिर्फ़ १५ से २० पर्सेंट ही रियल डायमंड के सामने होता है तो हर कोई ये डायमंड की ज्वेलरी पहन सकते है। १२ अगस्त को इंटरनेशनल डायमंड डे मैगज़ीन द्वारा १२ लोगो को कोहिनूर ऑफ़ इंडिया सम्मान से सम्मानित करने का देश और विदेश में हमारे देश का नाम रोशन करने वाले को सम्मानित करने का मौक़ा मिला है।

हार्दिक हुंडिया ने बताया कि जिसमे हीरा बाज़ार के "मैन ऑफ द मिलेनियम", डायमंड किंग भरत शाह, रोज़ी ब्लू वाले अरुण मेहता, गोल्ड किंग पृथ्वीराज कोठारी, पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के भतीजे एपीजे सलिम, सू श्री लत्ता मंगेशकर, फ़िल्म निर्माता और बिल्डर आनंद पंडित लोकमत ग्रुप के चेयरमैन विजय दर्ड़ा, वरिष्ठ धाराशास्त्री अश्विन आँखंड, शिरिल श्रॉफ, विष्णु जैन, उज्ज्वल निकम, आसिफ कुरेसी, रिजवान मर्चेंट, दुबई से विजय भाई शाह , आशित भाई मेहता, तारक मेहता के निर्माता आशित मोदी, कवि , कलाकार शैलेश लोढ़ा, विश्व हिंदू परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष और हीरा बाज़ार के भीष्म पितामह आनंद शंकर जी पंड्या, समीर वानखेड़े, जैसे कई महानुभावों को सम्मानित करने का मौक़ा मिला है।

हार्दिक हुंडिया ना बताया की भारत सरकार भी लैबग्रोन डायमंड को बढ़ावा दे रही है जो हीरा उद्योग के लिए अच्छी बात है। देखना एक दिन पूरा विश्व इंटरनेशनल डायमंड डे मनाएगा और सभी डायमंड प्रेमी हीरा भी अपने अपने बजट में पहन पाएंगे ।

....

अब तक के कोहिनूर ऑफ इंडिया

भरतभाई शाह
(द मुंबई डायमंड मर्चेंट एसोसियेशन)

पृथ्वीराज भाई कोठारी,
(अध्यक्ष – इंडियन बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसियेशन)

अरुण मेहता (रोज़ी ब्लू)

आनंद शंकर पंड्या
(रेवा शंकर एंड कंपनी)

आसित मेहता (ब्ल्यू स्टार)

आसित मोदी
(निर्माता , तारक मेहता का उल्टा चश्मा)

कमलेश झवेरी
(पूर्व अध्यक्ष,
भारत डायमंड बुर्स)

कौशिक मेहता
(पूर्व चरमेंन, द जेम्स एंड ज्वेलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल)

मुकेश गढ़वी,
(सांसद , बी के डिस्ट्रिक्ट)

रिज़वान मर्चेंट
(वरिष्ठ धाराशास्त्री)

समीर वानखेड़े
(वरिष्ठ अधिकारी , भारत सरकार)

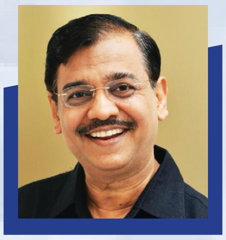
उज्ज्वल निकम
(वरिष्ठ सरकारी धाराशास्त्री)

आनंद पंडित (लोटस बिल्डर , फ़िल्म निर्माता)

आसिफ़ कुरैशी
(पूर्व अध्यक्ष , बार काउंसिल ऑफ़ गोवा एंड महाराष्ट्र)

अश्विन आंखंड
वरिष्ठ धारा शास्त्री)

एपीजे एम जे शेख़ सलीम
(पास्ट प्रेसिडेंट ऑफ़ इंडिया, आदरणीय श्री अब्दुल कलाम के भतीजे

राजन शाही
(निर्माता, अनुपमा सीरियल)

दिनेश अग्रवाल
(इंफ्रास्ट्रक्चर इंडस्ट्रीज़)

कुमार मेहता
(शेरू जेम्स)

रमेश मुथा
(उद्योगपती)

राज के पुरोहित
(राजनेता)

टी एस कल्याणरमण
(कल्याण ज्वेलर्स)

विजय दर्डा
(लोकमत ग्रुप)

विजय शाह
(डायमंड मर्चेंट (दुबई)

लता मंगेशकर जी
(स्वर कोकिला)

रोहिणी गावणकर
(स्वातंत्र्य सेनानी

हरिशंकर जैन
(वरिष्ठ धाराशास्त्री)

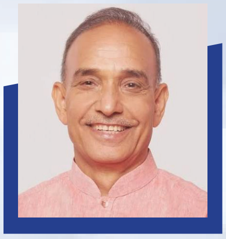
सत्यपाल सिंह
(राजनेता , पोलीस)

जयेश भैरवीया
(वरिष्ठ धाराशास्त्री)

सिरिल श्रॉफ़
(वरिष्ठ धाराशास्त्री)

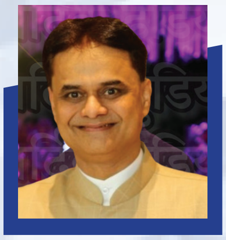
बिपिन पुनमिया
(विमल बुलियन)

यशवंत शाह
(जय हिंद डेइली)

प्रवीण दीक्षित
(पुर्व डीजीपी)

शैलेष लोढ़ा
(कलाकार ,
कवि , लेखक)

रोहित शाह
(डायमंड मर्चेंट)

महेन्द्र गांधी
(पूर्व अध्यक्ष , श्री डायमंड मर्चेंट एसोसियेसन)

अदाणी समूह : एक छोटे व्यापार से वैश्विक औद्योगिक साम्राज्य तक का सफर

वस्तु व्यापार से शुरू हुई यात्रा, जिसने बंदरगाह, ऊर्जा, परिवहन, हवाई अड्डे और हरित ऊर्जा तक बनाया अपना विस्तार भारत के औद्योगिक विकास की कहानी में पिछले कुछ दशकों में जिन कारोबारी समूहों ने तेजी से अपनी पहचान बनाई है, उनमें अदाणी समूह का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। एक छोटे स्तर के वस्तु व्यापार से शुरू हुई यह यात्रा आज बंदरगाहों, ऊर्जा, बिजली, हवाई अड्डों, सड़क, रेल, सीमेंट, नवीकरणीय ऊर्जा, प्राकृतिक संसाधन, रक्षा, अंतरिक्ष, डेटा केंद्र, मीडिया और उपभोक्ता कारोबार जैसे अनेक क्षेत्रों तक पहुंच चुकी है...

अदाणी समूह की शुरुआत वर्ष १९८८ में अहमदाबाद से हुई। इससे पहले समूह के संस्थापक गौतम अदाणी ने १९७८ में मुंबई में हीरा छंटाई के काम से अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की थी। बाद में वे गुजरात लौटे और व्यापार के क्षेत्र में आगे बढ़े। वर्ष १९८८ में उन्होंने अदाणी एक्सपोर्ट्स की स्थापना की, जो कृषि वस्तुओं और वस्तु व्यापार से जुड़ी कंपनी थी। यही कंपनी आगे चलकर अदाणी एंटरप्राइजेज के रूप में समूह की प्रमुख कंपनियों में शामिल हुई। १९८८ : एक नए कारोबारी सफर की शुरुआत अदाणी समूह की कहानी किसी बड़े औद्योगिक संयंत्र से नहीं, बल्कि व्यापार से शुरू हुई। अहमदाबाद में स्थापित अदाणी एक्सपोर्ट्स ने कृषि वस्तुओं और विभिन्न वस्तुओं के व्यापार के माध्यम से अपने कारोबार का विस्तार शुरू किया। व्यापार के इस शुरुआती अनुभव ने समूह को अंतरराष्ट्रीय बाजार, आयात-निर्यात और आपूर्ति व्यवस्था की समझ दी। आने वाले वर्षों में इसी अनुभव को आधार बनाकर समूह ने व्यापार से आगे बढ़ते हुए बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में प्रवेश किया। वर्ष १९९४ अदाणी समूह के इतिहास में महत्वपूर्ण रहा। अदाणी एक्सपोर्ट्स को भारतीय शेयर बाजार में सूचीबद्ध किया गया। कंपनी का प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम निर्धारित मात्रा से लगभग २५ गुना अधिक अभिदान प्राप्त करने में सफल रहा। इसी समय गुजरात समुद्री मंडल से मुंद्रा में निजी उपयोग के लिए जहाजी घाट स्थापित करने की अनुमति मिली। यह निर्णय आगे चलकर अदाणी समूह के सबसे महत्वपूर्ण विस्तारों में से एक का आधार बना।

देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदार दे रहा है अदाणी ग्रुप...

वर्ष १९९५ में गौतम अदाणी ने गुजरात के मुंद्रा क्षेत्र में बंदरगाह के विकास की दिशा में कदम बढ़ाया। कांडला बंदरगाह से प्रभावित होकर उन्होंने मुंद्रा को एक बड़े व्यापारिक प्रवेश द्वार के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा। मुंद्रा की भौगोलिक स्थिति और समुद्री संपर्क को देखते हुए यहां बंदरगाह तथा उससे जुड़ी परिवहन सुविधाओं का लगातार विकास किया गया। आने वाले वर्षों में मुंद्रा बंदरगाह अदाणी समूह की पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया और समूह ने व्यापार से बुनियादी ढांचे की ओर अपनी दिशा मजबूत की। वर्ष १९९६ में अदाणी समूह ने अपने संस्थापक के माता-पिता की स्मृति में श्री शांतिलाल भुदरमल अदाणी धर्मार्थ न्यास की स्थापना की। इसके माध्यम से जरूरतमंद और वंचित वर्गों के लिए सामाजिक कार्यों की शुरुआत की गई।

नई सदी के साथ अदाणी समूह के कारोबार का स्वरूप तेजी से बदलने लगा। प्राकृतिक संसाधनों, कोयला व्यापार, खनन और बिजली उत्पादन जैसे क्षेत्रों में समूह ने विस्तार किया। बंदरगाह और वस्तु व्यापार के बाद ऊर्जा क्षेत्र में प्रवेश ने समूह के लिए एक नया अध्याय खोला। बिजली उत्पादन और उससे जुड़े बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाया गया। इसी दौर में समूह ने ऊर्जा क्षेत्र को अपने प्रमुख कारोबारी क्षेत्रों में शामिल कर लिया। यह वह समय था जब अदाणी समूह ने केवल व्यापार करने वाली कंपनी के बजाय बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा तैयार करने वाले औद्योगिक समूह का रूप लेना शुरू किया। अगले दशक में अदाणी समूह ने विस्तार की गति और तेज कर दी।

बंदरगाहों, ऊर्जा, बिजली, प्राकृतिक संसाधनों और परिवहन के साथ-साथ समूह ने नए क्षेत्रों में भी प्रवेश किया। समूह ने भारत के विभिन्न हिस्सों में बंदरगाहों और माल ढुलाई से जुड़ी सुविधाओं का विस्तार किया। बिजली उत्पादन तथा बिजली प्रसारण में भी बड़े निवेश हुए।

इसी दौरान समूह ने नवीकरणीय ऊर्जा को भी अपनी दीर्घकालीन रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश बढ़ाया गया। वर्ष २०१६ में तमिलनाडु के कामुथी में बड़े सौर ऊर्जा संयंत्र का संचालन शुरू हुआ। इसके बाद हरित ऊर्जा क्षेत्र में अदाणी समूह का विस्तार लगातार जारी रहा। अदाणी समूह ने सीमेंट उद्योग में भी बड़ा विस्तार किया। अंबुजा सीमेंट्स और एसीसी जैसी प्रमुख कंपनियों के अधिग्रहण के बाद समूह की निर्माण सामग्री के क्षेत्र में स्थिति मजबूत हुई। सीमेंट क्षेत्र में प्रवेश ने समूह को भारत के बुनियादी ढांचा और निर्माण क्षेत्र से और गहराई से जोड़ दिया। वर्ष २०२६ में समूह के सीमेंट कारोबार में बिक्री की मात्रा में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। मीडिया, रक्षा और नई प्रौद्योगिकी समय के साथ समूह ने पारंपरिक बुनियादी ढांचे से आगे बढ़कर मीडिया, रक्षा एवं अंतरिक्ष, डेटा केंद्र और अन्य नई प्रौद्योगिकी आधारित क्षेत्रों में भी प्रवेश किया। समूह के वर्तमान कारोबार में बुनियादी ढांचा, ऊर्जा एवं उपयोगिता, परिवहन एवं माल ढुलाई, उपभोक्ता उत्पाद, सामग्री, मीडिया, अचल संपत्ति और खेल सहित कई क्षेत्र शामिल हैं।

वर्ष २०२२ अदाणी समूह के लिए असाधारण वृद्धि का वर्ष रहा। समूह की विभिन्न कंपनियों के बाजार मूल्य में तेज वृद्धि हुई और गौतम अदाणी दुनिया के सबसे अधिक संपत्ति वाले व्यक्तियों में शामिल हुए। इस तेजी ने अदाणी समूह को भारत के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय कारोबारी जगत में भी व्यापक चर्चा के केंद्र में ला दिया।

आज अदाणी समूह के सामने एक ओर भारत के विकास और बुनियादी ढांचे में बड़ी भूमिका निभाने के अवसर हैं, तो दूसरी ओर वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और प्रशासनिक विश्वसनीयता को लेकर अपेक्षाएं भी उतनी ही बड़ी हैं। एक छोटे व्यापार से शुरू हुई अदाणी समूह की कहानी आज उस मुकाम पर है, जहां उसका अगला अध्याय केवल विस्तार से नहीं, बल्कि भरोसे, जिम्मेदारी और दीर्घकालीन विकास से तय होगा।

आलोचना को भी एक अवसर के रूप में देखता हुं - गौतम अदाणी

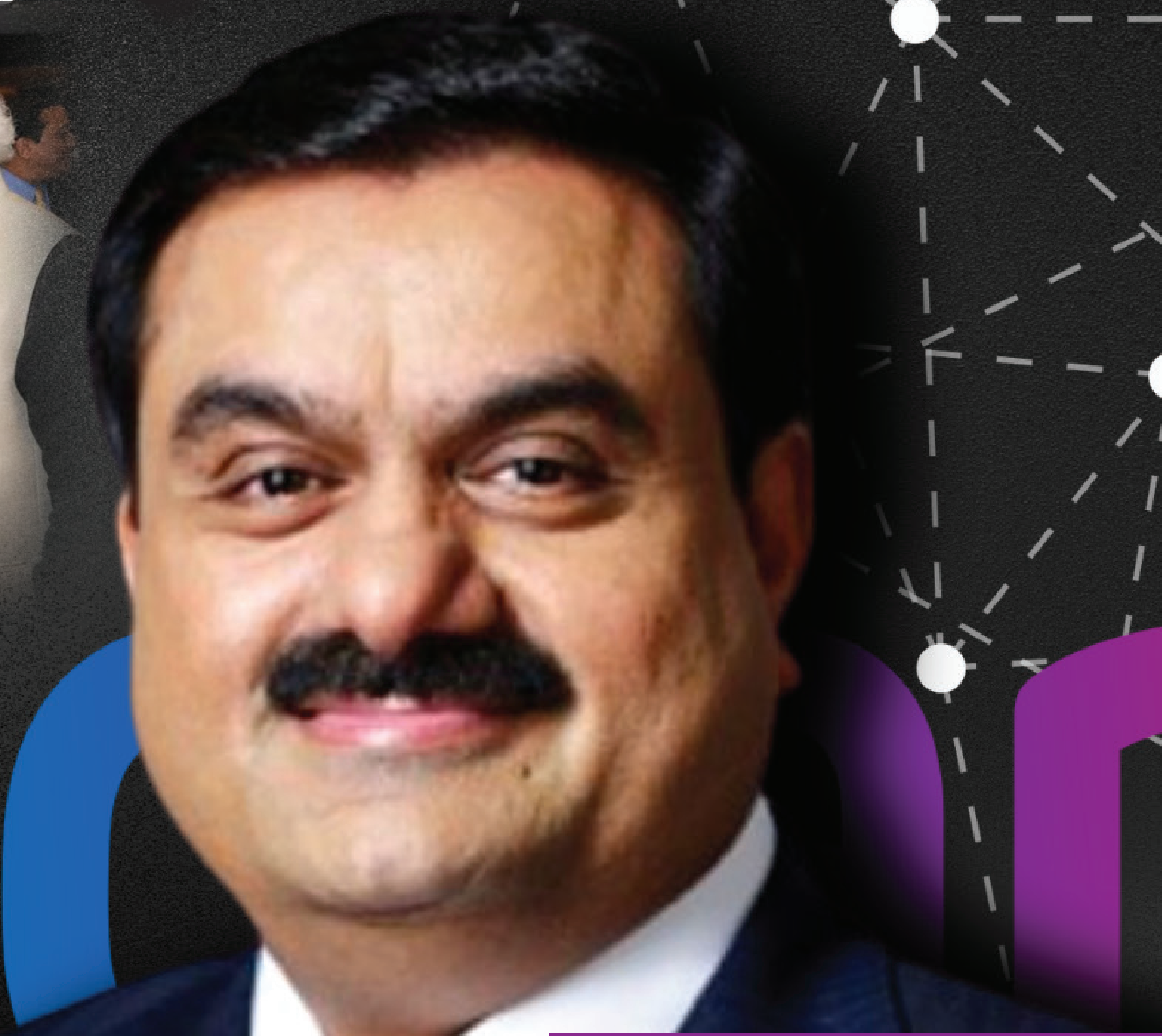

अदाणी समुह के चेयरपर्सन और जग प्रसिद्ध उद्योगपति गौतम अदाणी ने अमेरिकी अदालत द्वारा उनके खिलाफ आपराधिक आरोप खारिज किए जाने के बाद, अदाणी समूह के चेयरमेन गौतम अदाणी ने अपने संघर्ष और कानूनी सफर पर खुलकर बात की। गौतम अदाणी का बयान और मुख्य बातें अमेरिकी कोर्ट से राहत मिलने के बाद उन्होंने न्याय व्यवस्था पर भरोसा जताया। उन्होंने कहा कि यह कानूनी लड़ाई कठिन थी, लेकिन इससे उनका हौंसला और विनम्रता और बढ़ी है। 16 साल की उम्र में मुंबई आने और अपने शुरुआती संघर्षों को याद किया। आलोचकों और कठिन सवाल पूछने वालों का भी आभार व्यक्त किया। गौतम अदाणी के अमेरिकी कोर्ट से राहत मिलने के बाद अपनी बात रखी…

भारत देश में रोजगार के अवसर और लाखों लोगों को रोजगार देने वाले अदाणी ग्रुप के गौतम अदाणी जैसे उद्योगपति देश को मिलना हमारा सौभाग्य है : हार्दिक हुंडिया

अमेरिका की अदालत के फैंसले के बाद पहली बार अपने दिल की बात अपनों के साथ की है। उन्होंने कहा कि अदाणी परिवार के साथियों इस अच्छे समाचार ने निश्चित रूप से खुशी दी। लेकिन उससे भी अधिक उसने मुझे विनम्र बनाया। आप सब जानते हैं कि हमने शुरुआत से ही अपने ऊपर लगाए हुए आरोपों को स्पष्ट रूप से नकारा था। इसलिए आप शायद यह उम्मीद कर रहे होंगे कि मैं आज कहूंगा हमारा स्टैंड विंडिकेट हुआ है। नहीं मैं ऐसा नहीं कहूंगा क्योंकि आज खुद को सही साबित करने से अधिक मेरे लिए उस पूरी यात्रा को विनम्र से याद करना महत्वपूर्ण है। एक ऐसी यात्रा जो कठिन थी लेकिन जिसने मुझे बहुत कुछ सिखाया बहुत कुछ समझाया और सबसे बढ़कर जीवन लोगों और रिश्तों को एक नई दृष्टि से देखने का अवसर दिया।

यह प्रोसेस लगभग दो साल तक चली। यात्रा कठिन भी था और पीड़ादायक भी थी। लेकिन उसने रूल ऑफ लॉ और न्याय व्यवस्था में मेरे विश्वास को और मजबूत किया। अपने सत्य पर विश्वास रखना जरूरी है। लेकिन अपने सत्य के लिए खड़ा भी होना पड़ता है और लड़ना भी पड़ता है। वह भी पूरी निडरता के साथ और आज जब यह अध्याय समाप्त हो चुका है तो न्याय व्यवस्था में मेरा विश्वास पहले से और अधिक मजबूत हुआ है। एक फर्स्ट जनरेशन एंटरप्रेन्योर के रूप में मैं यह भी कभी नहीं भूल सकता कि अदाणी की अपनी यात्रा भी रूल ऑफ लॉ से मिली उसी लेवल प्लेइंग फील्ड और अवसरों की कहानी है। इस यात्रा ने मुझे अपने लोगों की शक्ति भी दिखाई। जब बाहर बहुत शोर था तब हमारी टीम्स, एंप्लाइज, वर्कर्स, सप्लायर्स, वेंडर्स, कॉन्ट्रैक्टर्स और पार्टनर्स चुपचाप अपना काम कर रहे थे और शायद इसीलिए जिन वर्षों को हमारे सबसे कठिन वर्ष कहा गया वही हमारे ग्रुप के इतिहास के सबसे अच्छे वर्षों में से भी रहा।

प्रशंसा इसका क्रेडिट आप सबको जाता है। और इस यात्रा ने इंसानियत में मेरे विश्वास को भी और गहरा किया है। देश में जहां भी गया ऐसे लोगों ऐसे लोग मिले जिन्हें मैं जानता तक नहीं था। कोई हाथ पकड़ कर कहता हम आपके साथ हैं। कोई कहता हम आपके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। कई लोग बिना कुछ कहे केवल हाथ जोड़ लेते थे। उनका मुझसे कोई स्वार्थ नहीं था। केवल स्नेह था। उस स्नेह को मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा। मैं उन लोगों का भी आभारी हूं जिन्होंने हमारी आलोचना की और कठिन प्रश्न पूछे। आलोचना को भी मैं हमेशा एक अवसर के रूप में देखता हूं। आलोचना का उद्देश्य है कुछ भी हो मेरे लिए वह अपने भीतर देखने और खुद बेहतर बनाने का अवसर है और अंत में ईश्वर का आभार ईश्वर ने जीवन में मुझे मेरी अपेक्षा की कक्षाओं से भी बहुत अधिक ज्यादा दिया है। अच्छे समय भी दिए और कठिन परीक्षा है भी।

आज मैं यह नहीं पूछता कि यह परीक्षा क्यों आई? मैं इस बात के लिए आभारी हूं कि उसने मुझे कुछ और सीखने और कुछ और समझने और शायद कुछ और विनम्र बनने का अवसर दिया। आज जब मैं इस पूरे अध्याय को पीछे मुड़कर देखता हूं तो मेरे मन में विनम्रता आभार और इस यात्रा से मिली सीख है। लेकिन साथियों यह रुकने का समय नहीं है। अपनी अचीवमेंट पर आराम करने का भी समय नहीं है। एक अध्याय समाप्त हुआ है। लेकिन हमारी यात्रा बहुत लंबी है। और हमारी जिम्मेदारी उससे भी बड़ी इसीलिए आइए इस यात्रा की लर्निंग के साथ लेकर और मेहनत करें और हर दिन बेहतर बने और मिलकर विकसित भारत के सपने को साकार करें। अंत में आपके विश्वास के लिए आपके साथ के लिए, आपके स्नेह के लिए आप सबका दिल से धन्यवाद।

हार्दिक हुंडिया ने पहले ही कर दिया था सजिश का खुलासा

पुरी दुनिया में अदाणी ग्रुप एंव गौतम अदाणी के अमेरिकी हीडनबर्ग मामले को कवर स्टोरी बनाकर टिप्पणी हो रही थी तब हमेशा सच्चाई का सम्मान करने वाले स्टार रिपोर्ट मेगेज़िन के प्रधान संपादक हार्दिक हुंडिया जी ने स्पष्ट शब्दों में इस विवाद को बेबुनियाद बताया था। उन्होंने अदाणी ग्रुप एंव गौतम भाई की विश्वसनीयता और विश्वव्यापी कामगीरी का ब्योरा देते हुए कहा कि मान्यता देश के विकास में, रोज़गार में गौतम भाई का जो योगदान है। वो सर्वाधिक श्रेष्ठ है। हार्दिक हुंडिया जी ने कहा कि श्री गौतम भाई अदाणी देश के यह एक ऐसे उद्योगपति जो वर्ल्ड के अंदर आज की तारीख में सबसे अच्छा और ज्यादा नाम कमाया है।

इनकी ईमानदारी उनकी मेहनत से उन्होंने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ देश को सवांरा है, शायद इनकी जितनी भी प्रशंसा करो इतनी कम है, पालनपुर के बाद मुंबई के अंदर हीरा व्यवसाय करने आने वाले खुद का रोजगार ढूंढने वाले आज लाखों लोगों को रोजगार दे रहे हैं। वर्तमान में जो बातें इनके लिए चल रही है मैं देश के लोगों को दो हाथ जोड़कर विनंती करता हूं एक ऐसे देश के उद्योगपति है जो देश के लिए देश के लिए जितना भी हो सके इतना करने के लिए तैयार है।

विरोध करने वाले ओ! देश के महानुभावों जरा सोचो आपके घर में ऐसी चीज़ नहीं होगी जो गौतम भाई ने बनाई नहीं होगी, हमारे देश के लिए। चाहे कोरोना की परिस्थिति हो या देश के लिए कहीं भी जरूरत हो चाहे धार्मिक हो चाहे सामाजिक हो हर जगह खड़ा रहने वाला एक इंसान और वो है गौतम भाई अदाणी। क्योंकि उन्होंने खुद ने एक छोटे से कस्बे के अंदर खुद को देखा है उन्होंने खुद ने बचपन के अंदर वो परिस्थिति देखी है की एक सामान्य आदमी किस तरह मुसीबत से गुजरता है वो जब पालनपुर के अंदर एक स्कूल के उद्घाटन में गौतम भाई और डॉक्टर प्रीतिबेन साथ में गए तब जिस तरह लोगों से मिले और उन्होंने जो बचपन की बातें और लोगों को याद किया लोग ताजुब़ रह गए की गौतमभाई आज भी जिस जगह से ऊपर पहुंचे उनको यह सब सारी बातें याद है जो इंसान सबका भला चाहता है वह कभी किसी को नुकसान नहीं करेगा।

श्री गौतम भाई एक ऐसे इंसान हैं आप ये जो फौरन की जितनी भी कंपनी है, आप उसके साथ तुलना करो आज इतना शेर का भाव गिरने के बाद भी गौतमभाई ने एक भी कर्मचारी को छुट्टी नहीं दी ये कितनी बड़ी बात है , कितना बड़ा सोचते है ये, इस इंसान के लिए खाली इतना ही सोचो की जो इंसान हमारा है वो हमसे कभी धोखा तो छोड़ो लेकिन हमेशा हमको फायदा ही कराएगा और गौतम भाई जैसे देश के उद्योगपति भी वर्ल्ड में नाम कमाते हैं तो हमारे देश के लिए उससे बड़ी गौरव की बात क्या होती है।

नरेंद्र भाई मोदी देश के यशस्वी प्रधानमंत्री देश के उद्योगपति गौतम भाई अब दोनों देखिए घंटो मेहनत, हिम्मत और नीति से ऊपर आए हैं तो इन दोनों को जितना हम सलाम करें इतना कम है और गौतम भाई के लिए मैं एक ही बात कहूंगा की ऐसा उद्योगपति देश को मिला है हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

शुभ संदेश

भाई हार्दिक हुंडिया जी,
जय जिनेंद्र,

आप स्टार रिपोर्ट का दीवाली विशेषांक पद्मश्री से सम्मानित प्रसिद्ध लोकगायिका दिवालीबैन भिल, जिनके सबसे प्रसिद्ध लोकप्रिय गीतों में "सोना वाटकड़ी रे", "मारे तोडले बैतो रे मोर", और "पाप तारु प्रकाश" शामिल हैं, के बारे में निकालने जा रहे हैं, जिनकी एक प्रतिमा भी जूनागढ़ में आपके करकमलों से स्थापित हुई थी। मैं अपनी ओर से आपको बहुत शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ और आपके द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य की बहुत बहुत अनुमोदना करता हूँ।

– प्रदीप जैन
पूर्व केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार

हार्दिक जी ने सिर्फ परंपराओं को निभाने तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज को यह समझाया कि केवल उत्सव मनाना ही काफी नहीं है—नैतिक मूल्यों से लैस और प्रभावशाली नेतृत्व तैयार करना सबसे बड़ी ज़रूरत है।

राजनीति और उच्च पदों पर ऐसे लोगों को लाने की प्रेरणा देना जो 'शिथिलाचार न होने दें', यह दर्शाता है कि हार्दिक जी समाज में सत्य, निष्ठा और अनुशासन का प्रवाह देखना चाहते हैं।

सच्ची 'शासन भक्ति': उत्सवों की चकाचौंध से ऊपर उठकर धर्म और समाज की वास्तविक शक्ति (मजबूत चरित्र और नेतृत्व) को पहचानना ही एक सच्चे शासन प्रेमी की पहचान है, और हार्दिक जी ने इस संदेश से यह साबित किया है।

"हार्दिक हुंडिया जी की सोच को नमन! जहाँ लोग सिर्फ आयोजनों में उलझ जाते हैं, वहाँ आपने समाज को सही दिशा दिखाई है—कि असली ताकत उत्सवों में नहीं, बल्कि उच्च नैतिक मूल्यों के साथ उच्च पदों पर आसीन समर्थ नेतृत्व में है। आपकी यह दूरदर्शिता और निष्ठा वास्तव में प्रेरणादायक है!"

मांगीलाल सोलंकी, मुंबई

आदरणीय हार्दिक भाई साहब
सादर अभिवादन,

आशा है आप सपरिवार कुशल मंगल होंगे। सकारात्मक सोच व पुरूषार्थ की भावना से आपके द्वारा सम्पादित भारत की सबसे खूबसूरत पत्रिका स्टार रिपोर्ट मुझे लगातार प्राप्त हो रही है बहुत ही ज्ञान वर्धक सामाज एवं संत समाज की दिनचर्या पर सटिक आलेख के साथ आपका समर्पण वन्दनिय एवं अविस्मरणीय है इसके लिए आपको हृदय की असीम गहराइयों के साथ बहुत बहुत धन्यवाद साधुवाद। आपके एवं आपके पुरे परिवार के यशस्वी सुखमय दिर्घायुष्य जीवन की ढेरसारी मंगलमयी शुभकामनाए। आपका स्नेह सहयोग अपनत्व हमेशा बना रहे।

- **सुजानमल कोचट्टा**
वरिष्ठ पत्रकार एवं वरिष्ठ मार्गदर्शक आल इंडिया जैन कांफ्रेंस दिल्ली

दिवालीबेन भील जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं नमन

दिवालीबेन भील जी केवल भील समाज ही नहीं, बल्कि पूरे भारत की लोक-संगीत परंपरा की अमूल्य धरोहर थीं। आदिवासी समाज से आने के बावजूद उन्होंने अपनी अद्भुत प्रतिभा, मधुर स्वर और ईश्वर-भक्ति से लोकसंगीत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी गायकी में भक्ति, संस्कृति और लोकजीवन की आत्मा बसती थी। उनके द्वारा गाए गए लोकगीत, गरबा और भजन आज भी लोगों के हृदय में उसी श्रद्धा और प्रेम के साथ जीवित हैं। उनकी विशिष्ट गायन शैली और मधुर आवाज़ ने लाखों श्रोताओं के दिलों में एक अमिट स्थान बनाया है। आज भी उनके गीत हर भक्ति संध्या, गरबा महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शान बने हुए हैं। यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि ऐसे महान व्यक्तित्व की प्रतिमा का अनावरण हमारे कल्याणमित्र *श्री हार्दिकभाई हुंडिया* के करकमलों से संपन्न हुआ। यह केवल भील समाज के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त समाज के लिए गर्व का क्षण है। जैन समाज भी दिवालीबेन जी के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक योगदान के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेगा।

-महेन्द्रभाई जैन

जय जिनेन्द्र

जागो धर्मप्रेमियों, जागो!

AIJA (आईजा) के अध्यक्ष श्री हार्दिकभाई हुंडिया, जैसे निष्ठावान व्यक्तित्व आज बिना किसी स्वार्थ के, केवल अपने आत्मबल के बलबूते पर जैन शासन की आन, बान और शान के लिए संघर्ष कर रहे हैं। समाज में बढ़ रहे शिथिलाचार को समाप्त करने के लिए वे बिना किसी डर के सत्य बोल रहे हैं और अपनी लेखनी चला रहे हैं। ज़रा सोचिए, यदि भारत के हर गाँव, हर नगर और हर संघ से ऐसे ही 3-4 निडर और धर्मनिष्ठ योद्धा शासन रक्षा के लिए आगे आ जाएँ, तो शिथिलाचार का नामो-निशान मिट जाएगा! सत्य और न्याय की इस लड़ाई में जब-जब धर्म पर कोई विपत्ति या संकट आया है, हार्दिक हुंडिया ने सदैव अपनी पूरी शक्ति से शासन का परचम लहराया है। हमारा पहला और अंतिम परिचय केवल 'जैन' है—हमें संप्रदायों की सीमाओं से ऊपर उठकर धर्म की मूल आत्मा को बचाना होगा।

जब विचार शुद्ध और उद्देश्य निष्काम हो, तो समाज की बड़ी से बड़ी बुराई और शिथिलाचार को भी परास्त किया जा सकता है इतिहास गवाह है कि शासन की रक्षा हमेशा पदों से नहीं, बल्कि अटूट समर्पण और निर्भीक संकल्पों से होती है। आज समय की पुकार है कि हम मतभेदों को भुलाकर संगठित हों, क्योंकि हमारी एकता ही जैन शासन की सबसे बड़ी शक्ति है, भगवान महावीर के सिद्धांतों को केवल शब्दों में नहीं, बल्कि अपने आचरण और क्रियाओं में जीवंत करने का यही सही समय है। यदि हम आज भी शांत बैठे रहे, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमसे जवाब मांगेगी—इसलिए सत्य के साथ खड़े होना ही सच्चा धर्म है।मौन रहकर गलत को सहना भी शिथिलाचार को बढ़ावा देना है; हमें भी अपनी आवाज़ को मुखर करना होगा।जैन धर्म की रक्षा का दायित्व केवल कुछ लोगों का नहीं, बल्कि हममें से हर एक धर्मप्रेमी का परम कर्तव्य है। "देव गुरु आज्ञा विरुद्ध कुछ लिखा गया हो तो मिच्छामि दुक्कड़म।"

— नवीन दोशी, सूरत

श्रीकृष्ण का जन्म रहस्य
उनके जीवन से मिलती है धर्म, कर्म और सत्य की प्रेरणा

श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म के ऐसे महान व्यक्तित्व हैं, जिनका जीवन केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन के लिए प्रेरणा का विशाल स्रोत है। उनका जन्म ऐसे समय हुआ जब अत्याचार, भय और अधर्म का वातावरण था। कंस के अत्याचार से मथुरा की जनता त्रस्त थी और धर्म की रक्षा के लिए एक ऐसे व्यक्तित्व का अवतरण हुआ, जिसने अपने कर्मों से यह संदेश दिया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, सत्य और धर्म का मार्ग कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

रहस्यमय परिस्थितियों में हुआ जन्म

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा की कारागार में देवकी और वसुदेव के पुत्र के रूप में हुआ। देवकी के भाई कंस को आकाशवाणी से ज्ञात हुआ कि देवकी की आठवीं संतान उसके अंत का कारण बनेगी। भय और सत्ता के अहंकार में कंस ने देवकी और वसुदेव को कारागार में बंद कर दिया।

देवकी की संतानों का वध करने वाले कंस के अत्याचार के बीच श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। मान्यता है कि उनके जन्म के समय कारागार के द्वार खुल गए, पहरेदार निद्रा में चले गए और वसुदेव नवजात कृष्ण को लेकर यमुना पार गोकुल पहुंचे। वहां उन्होंने कृष्ण को नंद और यशोदा के संरक्षण में सौंप दिया।

यह प्रसंग केवल एक धार्मिक कथा नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से यह भी बताता है कि जब अंधकार अपने चरम पर होता है, तब आशा का प्रकाश जन्म लेता है।

जन्म से ही संघर्ष, लेकिन जीवन में मुस्कान

श्रीकृष्ण का बचपन सामान्य परिस्थितियों में नहीं बीता। एक ओर कंस का भय था तो दूसरी ओर अनेक संकट उनके सामने आते रहे। पूतना, शकटासुर, कालिया नाग और अन्य संकटों के प्रसंग उनके बाल जीवन से जुड़े हैं। फिर भी श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व भय से नहीं, आनंद और उत्साह से भरा दिखाई देता है। उनकी बांसुरी, गोप-गोपियों के साथ उनकी लीलाएं और वृंदावन का जीवन यह संदेश देता है कि कठिन परिस्थितियों में भी जीवन की सुंदरता और सकारात्मकता को बनाए रखना चाहिए।

श्रीकृष्ण का जीवन कर्म का संदेश देता है

महाभारत के युद्धक्षेत्र में अर्जुन जब अपने ही संबंधियों को सामने देखकर विचलित हुए, तब श्रीकृष्ण ने उन्हें कर्म और कर्तव्य का मार्ग समझाया। भगवद्गीता में दिया गया उनका संदेश आज भी मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। श्रीकृष्ण ने कर्म करने पर जोर दिया और परिणाम की चिंता में कर्तव्य से विमुख न होने की प्रेरणा दी। उनका संदेश था कि मनुष्य को अपने धर्म और कर्तव्य का पालन ईमानदारी से करना चाहिए।

संकट में धैर्य रखें। कर्तव्य से पीछे न हटें। सत्य और न्याय का साथ दें। परिस्थितियों के अनुसार बुद्धिमानी से निर्णय लें। रिश्तों में प्रेम और सम्मान बनाए रखें। सफलता-असफलता में मन का संतुलन बनाए रखें।

STAR REPORT BREAKING

निर्माता आसित मोदी को मिलेगा "मैन ऑफ द मिलेनियम" सम्मान

देश और विदेश में बसते भारतीय कला प्रेमी जनता यानी बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक सब के दिलो में ख़ुशी के साथ संस्कार देने वाली सीरियल के निर्माता, निर्देशक, कलाकार आसित भाई मोदी कला जगत के "मैन ऑफ़ द मिलेनियम" है। स्टार में शान, रिपोर्ट में जान यानी सकारात्मक सोच का खजाना स्टार रिपोर्ट के प्रधान संपादक हार्दिक हुंडिया ने कहा की ये पद की इतनी जल्दी घोषणा इसलिए कर रहा हूँ क्युकी ऐसी संस्कारी सीरियल ना भूतो ना भविष्यती है ..

"तारक मेहता का उल्टा चश्मा" के सामाजिक संदेशों की सराहना करते हुए हार्दिक हुंडिया ने की बड़ी घोषणा...

फ़िल्म जगत में अमिताभ बच्चन "मैन ऑफ द मिलेनियम" है तो विश्व के हीरा जगत में हमारा देश भारत हीरा उत्पादन में प्रथम स्थान पर है जिनके "मैन ऑफ द मिलेनियम" भरत शाह है। ये सम्मान हार्दिक हुंडिया का हीरा बाज़ार में प्रकाशित अख़बार हीरा माणेक द्वारा दिया गया था। ये सम्मान समारोह में देश के केंद्रीय मंत्री सुन्दरलाल पटवा, लत्ता मंगेशकर, गोविंदा, जैकी श्रॉफ, अमरीश पूरी के साथ पूरा हीरा बाज़ार साक्षी था।

हार्दिक हुंडिया ने कहा तारक मेहता उल्टा चश्मा का सीरियल जब शुरू हुई तब इतना बड़ा टाइटल , नए नए कलाकार , हास्य के साथ एक एक हास्य के संस्कार देने वाले डायलॉग , कभी किसी ने सोचा भी नहीं था कि ये सीरियल आज १८ साल में प्रवेश कर देगी और वो भी बड़े आनंद और ख़ुशी के साथ। इस सीरियल के एक एक पात्र के बारे में ५ साल से बच्चे से लेकर ८५ साल के बुजुर्ग तक सभी को पता है।

गोकुल धाम सोसायटी का प्रेम, एकता, एक दूसरे के प्रति संस्कार और मदद की भावना, जीवन में चढ़ाव उतार सब दिखाना वो भी सकारात्मक रूप से मतलब सब कला प्रेमी लोगो से एक ही आवाज़ आती है की आशित भाई आपने कमाल कर दिया। गुजराती, मराठी, पंजाबी , साउथ इंडियन, बंगाली, मुस्लिम, पत्रकार जैसे संस्कारी पात्रों से हास्य के साथ सकारात्मक ज्ञान देना कोई आसित भाई से सीखें। तारक मेहता की पूरी टीम को बधाई देते हार्दिक हुंडिया ने कहा कि स्टार में शान रिपोर्ट में जान स्टार रिपोर्ट मैगज़ीन द्वारा तारक मेहता का उल्टा चश्मा के सीरियल के निर्माता आसित भाई मोदी को सीरियल के द्वारा सकारात्मक संदेश दुनिया को देने के लिए कला जगत के लिए "मैन ऑफ द मिलेनियम" सम्मान दिया जाएगा।

आसित भाई ने १८ साल सीरियल में समाज की वो घटना भी बताई है जो समाज को नुकशान करती है , लेकिन साथ साथ उनका उपाय भी बताया है जो बहुत बड़ी बात है। घर-घर सुसंस्कारों की नदिया बहाने वाले आसित भाई का उपकार देश और विदेश की कलाप्रेमी जनता कभी नहीं भूलेगी। अभी अभी तो बोलना शिखा है वो।

बच्चा भी तारक मेहता का उल्टा चश्मा के सभी पात्रों का नाम पहले बोलता है जैसे जेठा लाल, दया भाभी, चंपक चाचा , भिड़े , माधवी भाभी , तारक मेहता , अंजलि भाभी , पत्रकार पोपट लाल, सोढ़ी , रोशन भाभी , अब्दुल , टपु सेना . सकारात्मक सोच का खजाना स्टार रिपोर्ट जल्द ही संस्कार के साथ ज्ञान देने वाली सीरियल के निर्माता आसित मोदी को कला जगत का "मैन ऑफ द मिलेनियम" अवार्ड से सम्मानित करेंगे।

18 साल की दहलीज़ पार कर के

नई ऊर्जा के साथ

तारक मेहता का उल्टा चश्मा

घर घर में सह परिवार साथ में सब टीवी पर से प्रसारित धारावाहिक तारक मेहता का उल्टा चश्मा को देखना चुकते नहीं है, क्योंकि आज के युग में चेहरे पर मुस्कान, अपनों का प्यार, सांप्रदायिक सौहार्द का जीवंत संदेश यह धारावाहिक दे रही है। तारक मेहता का उल्टा चश्मा' भारत का सबसे लोकप्रिय हिंदी हास्य धारावाहिक है, जो 28 जुलाई 2008 से Sony SAB पर प्रसारित हो रहा है। आसित कुमार मोदी द्वारा निर्मित यह शो तारक मेहता के प्रसिद्ध गुजराती कॉलम 'तारक महेता ना उंधा चश्मा' पर आधारित है। इस धारावाहिक की कहानी मुंबई के गोकुलधाम की है, जहाँ अलग अलग जगह, संस्कृति और परम्पराओं के लोग एक दूसरे के साथ खुशी से रहते है। सीरियल में मानवता पर और निर्दोष कॉमेडी पर जोर दिया जाता है।

जेठालाल चम्पकलाल गड़ा (दिलीप जोशी) एक व्यापारी(इलेक्ट्रॉनिक शोरूम) है जो सुबह बहुत देर से उठते है और उन्हें जलेबी फाफड़ा बहुत अच्छा लगता है। लेकिन सभी लोग इसे परेशान करते हैं, घर में बेटा टप्पू और पत्नी दया और कभी कभी साला सुन्दर। इसके अलावा कभी कभी दुकान में भी इसे परेशान होना पड़ता है। इनकी पत्नी दया जेठालाल गड़ा (दिशा वकानी) मुख्यतः कभी भी गरबा करने लगती है। टप्पू हमेंशा शैतानी करने की सोचता है और अपने शिक्षक आत्माराम तुकाराम भिड़े जो गोकुलधाम सोसायटी के एकमेव सेक्रेटरी हैं जिनको वो सताता रहता है। कई बार वह क्रिकेट बॉल द्वारा भिड़े के घर की खिड़की का काँच तोड़ चुका है।

आत्माराम भिड़े बच्चों को पढ़ाते हैं और काफी बचत करने के पीछे रहते हैं। माधवी भिडे आचार पापड़ बनाकर बेचती है और हमेशा हंसती रहती है। जेठालाल के बापूजी चंपक लाल जयंतीलाल खिमजी गड़ा ज्ञान की बातें करते है। सोसाइटी के सभी लोग बापूजी का बहुत आदर करते है। पोपटलाल एक पत्रकार है, जो हमेंशा अपने छाते के साथ ही रहते है और अपनी शादी के लिए चिंतित रहते है। इसके अलावा तारक मेहता जेठालाल के परम मित्र हैं एक लेखक हैं और उसे हमेशा मुसीबतों से बचाते हैं। उनकी पत्नी अंजलि डायेट फूड और विविध काढ़े बनाकर अपने पति को पीलाती है। डॉ. हंसराज हाथी कों हमेंशा कुछ न कुछ खाना पसंद है। वह कभी खाने पर नियंत्रण नहीं कर पाते है, जिस कारण वह मोटे हो गये लेकिन मोटापे को कम करने के हर प्रयास पर उन्हें विफलता ही मिलती है। उनकी पत्नी कोमल भी अपने किरदार को पूरा न्याय देती है।

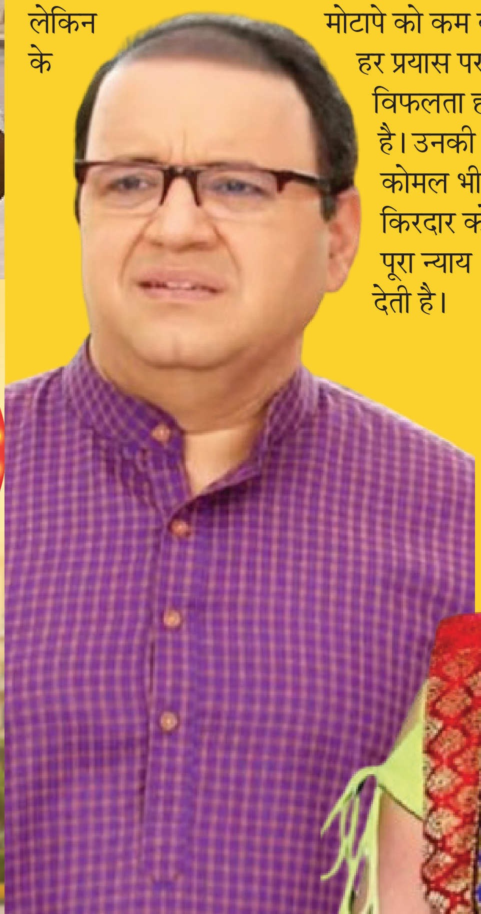

जेठालाल के दुकान में नट्टू काका और बाघा रहते हैं। नट्टू काका हमेशा जेठालाल को अपनी पगार बढ़ाने के लिए कहते हैं। लेकिन बेहद ईमानदार तथा कार्य के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं। बाघा इनका भतीजा तथा गड़ा इलैक्ट्रोनिक्स में काम करने वाला इलेक्ट्रॉनिक तकनीशियन है। बाघा की सगाई बावरी से हो चुकी है। गड़ा इलैक्ट्रौनिक्स मे कभी कभी मदन भी दिखाई देता है। यह सब कलाकार है, जहाँ अलग अलग जगह, संस्कृति और परम्पराओं के लोग एक दूसरे के साथ खुशी से रहते है। सीरियल में मानवता पर और निर्दोष कॉमेडी पर जोर दिया जाता है।

इस धारावाहिक के सभी कलाकार अपने १८ वे साल के प्रवेश पर बहुत ही गौरांवित महसूस कर रहे हैं और अपने आप को इस धारावाहिक में जुड़ने पर अपनी प्रशंसा व्यक्त करते इस धारावाहिक के सेन्टर ओफ एट्रेक्शन जेठालाल उर्फ दिलीप जोशी ने कहा कि “तारक मेहता का उल्टा चश्मा” ने 18 साल पूरे होने पर खुशी हो रही है। असित मोदी ने उन्हें चंपकलाल या जेठालाल में से एक किरदार चुनने का विकल्प दिया था। शुरुआत में वह दोनों ही किरदारों को लेकर उत्साहित नहीं थे। बाद में उन्होंने जेठालाल का किरदार चुना और आज उन्हें इस सफर के 18 साल पूरे होने पर खुशी है।

इस धारावाहिक की अन्य कलाकार मुनमुन दत्ता (बबीता जी) से पूछा गया कि क्या जेठालाल और बबीता जी के मीम्स के बारे में आप क्या सोचती हैं?

मुनमुन दत्ता ने कहा कि वह लोगों की बातों को ज्यादा महत्व नहीं देतीं। 18 साल बाद लोग उन्हें बबीता जी के किरदार से पहचानते हैं और वह इसके लिए आभारी हैं।

मंदार चंदवडकर (भिड़े) ने बताया कि वह मैकेनिकल इंजीनियर हैं और दुबई में भी काम कर चुके हैं। एक्टिंग उनका जुनून था और बाद में उन्हें भिड़े का किरदार मिला। उन्होंने बताया कि करीब 23 साल की उम्र में उनके बाल तेजी से झड़ने लगे थे। उस समय उन्हें यह बात परेशान करती थी, लेकिन बाद में यही लुक उनके लिए फायदा बन गया और आसित मोदी को उनका लुक पसंद आया।

इस धारावाहिक के निर्माता निर्देशक आसित कुमार मोदी ने अमित भट्ट (चंपक चाचा) के बारे में बताते हुए कहा कि चंपकलाल के किरदार के लिए अमित भट्ट को गंजा लुक रखना पड़ता था और उन्होंने करीब दो साल तक नियमित रूप से सिर शेव किया। उन्होंने अमित की इस मेहनत और समर्पण की तारीफ की।

श्याम पाठक (पोपटलाल) के बारे में असित मोदी ने कहा कि श्याम पाठक की मेहनत और समर्पण की तारीफ की, खासकर कोविड के समय की। यह सुनकर श्याम भावुक हो गए।

मयूर वकानी (सुंदरलाल) ने कहा की वह अपने सफर और अपनी बहन दिशा वकानी को याद करते हुए भावुक हो गए। उन्होंने आसित मोदी के साथ अपने रिश्ते और शो के सफर के बारे में भी बात की और मजाक में कहा कि उन्होंने जेठालाल से भी ज्यादा आसित मोदी को "स्कैम" किया है, जो सुंदरलाल के पैसे मांगने वाले किरदार से जुड़ा मजाक था।

स्टार रिपोर्ट मेगेज़िन की और से आशित कुमार मोदी एंव तारक मेहता की पुरी टीम को १८ साल की पूर्णता पर हार्दिक शुभकामनाएं।

RAJ JAIN

ARZOO JAIN

DINTARA JEWELS PVT. LTD.

Lab Grown Diamond Jewellery

Shop No.**3/4,** Round Chawl,
Mumbaidevi Road, Tambakata,
Kalbadevi, Mumbai,
Maharashtra - **400002.**

Intercom : **2781#**

Tel.: **022-61832871**

E-mail :
shine@dintara.in

Shop online at :

www.dintara.in

जापान के जैन धर्म प्रेमी मुंबई में चातुर्मास की भक्ति में हुए लीन

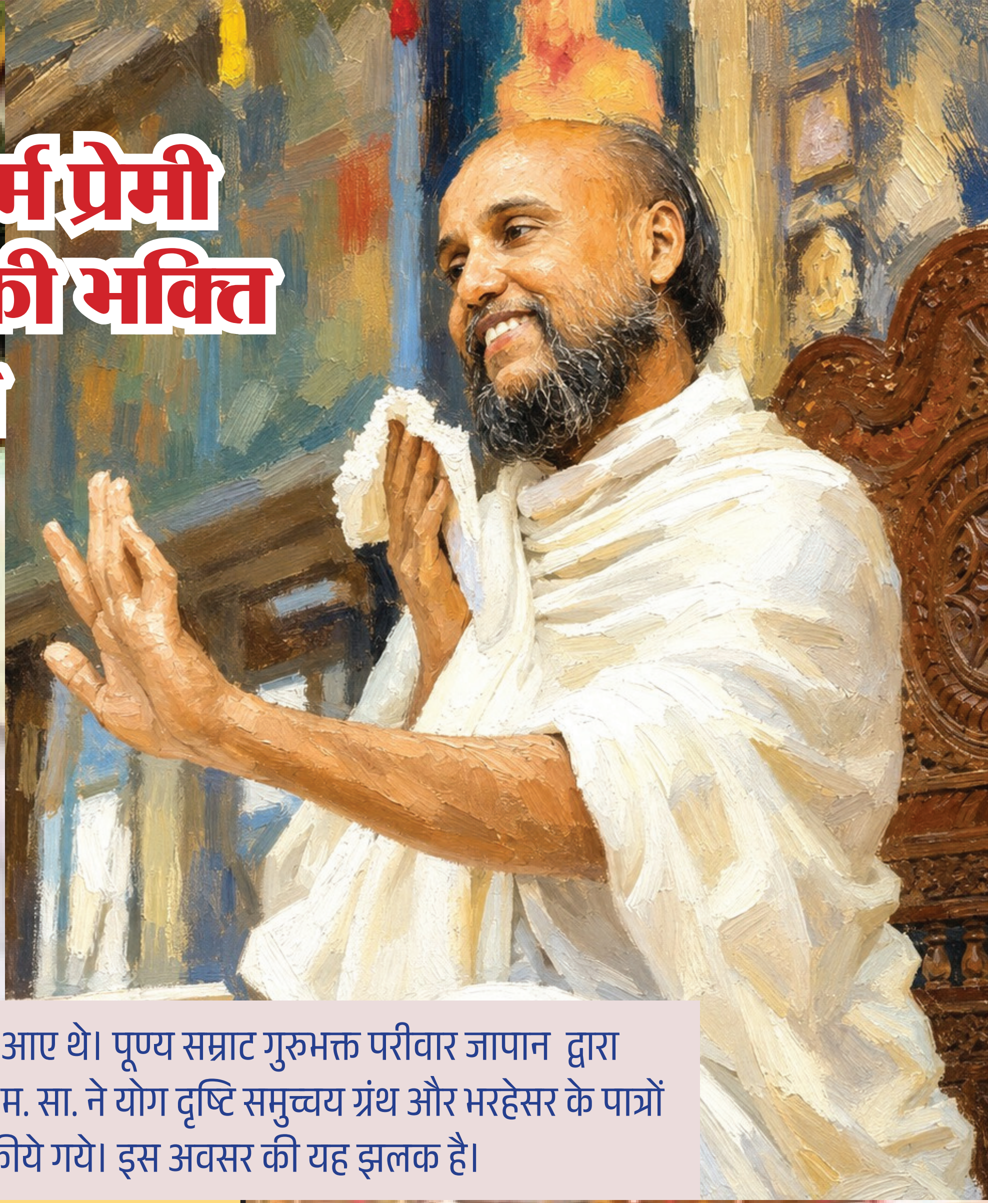

जापानी जैन भायंदर में मुंबई चातुर्मास प्रवेश में आए थे। पूण्य सम्राट गुरुभक्त परीवार जापान द्वारा समतागुण रसिक प.पु. मुनिराज निपुण रत्न विजय जी म. सा. ने योग दृष्टि समुच्चय ग्रंथ और भरहेसर के पात्रों की जीवन यात्रा यह दोनों ग्रंथ अर्पण कीये गये। इस अवसर की यह झलक है।

जापानी जैनों के सद्गुण

1. अपने खर्चे से चातुर्मास प्रवेश में आए
2. अपने खर्चे से ही ठहरे।
3. सफेद के अलावा वस्त्र नहीं पहने।
4. शोभायात्रा में खुले पैर ही चले।
5. जापानी पुरुष महात्मा के पीछे ही चले, आगे नहीं गए।
6. जापानी बहनें साध्वीजी भगवंत के पीछे ही चलीं।
7. जैन धर्म के झंडे, जो उन्होंने पकड़े थे, वो दो घंटे तक शोभायात्रा में पकड़े ही रखे।
8. 5 साल से लेकर 70 साल तक की जापानी श्राविकाओं ने लगातार सिर ढका हुआ रखा।

सुबह आठ बजे बावन जिनालय की परिक्रमा में जापानी लोग भगवान के दर्शन कर रहे थे, तब हर भगवान के सामने 2-5 सेकंड खड़े होकर अहोभावपूर्वक दर्शन करते थे!

9. साढ़े आठ बजे शोभायात्रा शुरू हुई और ग्यारह बजे तक चली, आगे-पीछे नहीं हुए।
10. उसके बाद प्रवचन सभा शुरू हुई और दोपहर दो बजे तक चली, तब तक एक भी जापानी अपनी जगह से नहीं हिला! आपस में बातचीत भी नहीं की!
11. जापानियों ने गुरु वंदन कराया।
12. जापानियों ने श्री निपुण रत्न विजयजी महाराज को कमली ओढ़ाने और ग्रंथ भेंट करने का चढ़ावा लिया।
13. जापान में आकर चातुर्मास करने की भावना व्यक्त की, (पर वो संभव नहीं है) इसलिए उन्होंने भारत में जहाँ श्री निपुण रत्न विजयजी चातुर्मास करें वहाँ का लाभ/ शिविर/गुरुकुलवास का लाभ देने की विनती की।
14. जापानी शुद्ध शाकाहारी हैं ही, साथ में नमस्कार महामंत्र के आराधक भी हैं!

श्री जयंतसेन सूरीजी ने तुलसी बहन को दीक्षा न देते हुए कहा कि तुम जापान में जैन धर्म और अहिंसा का प्रचार करो!

नमस्कार महामंत्र का जाप करो।

शुरुआत में तुलसी बहन 15-16 घंटे नवकार जाप करती थीं!

आज भी रोज कुछ घंटे जाप करती हैं, प्रतिक्रमण सूत्र करती हैं, और पढ़ाती हैं!

15. तुलसी बहन ने जैन धर्म का प्रचार करने के लिए शादी भी नहीं की।

एक अनुमान के अनुसार 5000 जापानियों ने मांसाहार छोड़ दिया है!

जापानी जैन उच्च शिक्षित हैं और विभिन्न क्षेत्रों में बहुत आगे हैं!

जय जिन शासन

इतनी श्रद्धा, अनुशासन और सादगी देखकर प्रेरणा मिलती है।

जापान में जैन धर्म का जय-जयकार

जापान में विश्व का पहला गुरु मंदिर बनेगा

सोने में सुगंध मिल जाये तो क्या कहना! हां जी जापान में जो कार्य होने जा रहा है वो सो टच सोने में सुगंध का मिलना जैसी अद्भुत, अकल्पनीय, अविस्मरणीय घटना है। जापान में गुरु मंदिर का सर्जन विश्व के जैन धर्म के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों से यह गाथा लिखी जायेगी। गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराजा की गुरुमूर्ति की स्थापना से विश्व वंदनीय जैन धर्म का पुरे संसार में जय-जय कार होने जा रहा है।

समतागुण रसिक मुनिराज निपुणरत्न विजय जी म.सा.

जापान में जैन धर्म की जड़ें कहीं अधिक गहरी और पुरानी हैं। बात 1950 के दशक की है। उस समय भारत सरकार ने जापान के लगभग 40 युवा विद्यार्थियों को भारत में अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति (स्पॉन्सरशिप) प्रदान की थी। ये विद्यार्थी भारत आए और जैन दर्शन से इतने प्रभावित हुए कि वहीं से जापान में जैन धर्म के अध्ययन के बीज बोए गए। इसके बाद कई दशकों तक जापान में जैन धर्म का अध्ययन केवल विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों और ग्रंथों के अनुवाद तक ही सीमित रहा। दूसरी ओर, 20वीं सदी की शुरुआत में ही भारत के कुछ जैन परिवार व्यापार के उद्देश्य से जापान जाकर बस गए थे। गुजरात और राजस्थान के हीरा एवं ज्वेलरी व्यवसाय से जुड़े व्यापारी कोबे और टोक्यो जैसे शहरों में स्थायी रूप से रहने लगे। अपने धर्म और संस्कृति को जीवित रखने के लिए उन्होंने वर्ष 1985 में कोबे शहर में भगवान महावीर स्वामी जैन मंदिर की स्थापना की। मुंबई से लाई गई भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा की वहाँ विधिवत प्राण-प्रतिष्ठा की गई। तब से यह मंदिर जापान में रहने वाले भारतीय जैन समुदाय की आस्था का प्रमुख केंद्र बन गया। जापान के स्थानीय लोगों द्वारा जैन धर्म अपनाने की घटनाएँ अपेक्षाकृत नई हैं। वर्ष 2000 के शुरुआती वर्षों में स्थानीय जापानी लोगों की जैन धर्म के प्रति रुचि अचानक बढ़ने लगी। बौद्ध धर्म की कुछ मान्यताओं से असंतुष्ट कुछ शोधकर्ताओं और जिज्ञासुओं को जैन धर्म के अहिंसा, संयम और तपस्या के सिद्धांतों में जीवन का सच्चा मार्ग दिखाई दिया।

वर्ष 2005 तक इस छोटी-सी शुरुआत को तुलसी के रूप में एक नई पहचान और चेहरा भी मिल गया। यदि आज की बात करें, तो जापान में मुख्य रूप से तीन प्रसिद्ध जैन मंदिर हैं, जिनमें कोबे का महावीर स्वामी जैन मंदिर सबसे प्रमुख माना जाता है। भारतीय मीडिया की रिपोर्टों के अनुसार, अब जापान में मूल जापानी जैन श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसी कारण उनके लिए नए जैन मंदिर (देरासर) बनाने की योजनाएँ भी तैयार की जा रही हैं। जापानी मनोचिकित्सक चुरुसु बनी तुलसी, जापान में विश्व का पहला जैन गुरु मंदिर बनने जा रहा है।

आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि जापान में पांच हजार से अधिक लोग जैन धर्म का पालन कर रहे हैं। अब जापान में दुनिया का पहला जैन गुरु मंदिर बनने जा रहा है। जापान के लोग जयन्तसेन सूरिजी गुरुदेव की प्रतिमा को विमान से जापान ले जाकर के स्थापित करेंगे। जापान में जैन धर्म का प्रचार कैसे हुआ ? 5 हजार से अधिक लोगों ने मांस खाना छोड़ दिया।

जापान में लगभग पांच हजार से अधिक लोग जैन धर्म का पालन कर रहे हैं। वे जैनाचार्य जयन्तसेन सूरीश्वरजी की गुरुमूर्ति का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। जापान के लोग जिन्होंने अब जैन धर्म स्वीकार कर लिया है, वह जापान में अपने गुरु की मूर्ति स्थापित करने के इच्छुक हैं। जापानी जैन भक्त जापानी मनोवैज्ञानिक डॉक्टर चुरूसु जैन धर्म से प्रभावित होकर तुलसी बन गये हैं। वे गुरु महाराज की प्रतिमा लेने के लिए गुजरात भी आये हैं। तुलसी के कारण ही जापान में हजारों लोग जैन धर्म से प्रभावित हुए हैं। गुरुजी की प्रतिमा को जापान ले जाने के लिए एक विशेष विमान की व्यवस्था की गई है, जिसमें गुरुजी की प्रतिमा के लिए भी टिकट लिया गया है।

पहला जैन गुरु मंदिर जो जैनाचार्य जयंतसेन सूरीश्वर की गुरुमूर्ति को जापान के लोग बनासकांठा के नेनावा से विमान से जापान ले जाएंगे। जैनाचार्य की प्रेरणा से जापान में हजारों लोगों ने मांस खाना छोड़ दिया है. जैन शासन की एक अभूतपूर्व घटना इस समय गुजरात में हो रही है। जापान से एक ग्रुप गुजरात आया है। वे जैनाचार्य जयंतसेन सूरीश्वर की गुरुमूर्ति को बनासकांठा जिले के नेनावा गांव से विमान से जापान ले जाने वाले हैं। जहां प्रतिमा स्थापित कर पूजा-अर्चना की जायेगी। जैन विचारधारा से प्रभावित एक जापानी

समूह केवल यह समूह ही नहीं, जापान में हजारों लोग जैन धर्म का पालन करते हैं। जापान से जैन विचारधारा वाले करीब 12 सदस्यों का एक दल 12 जुलाई को दिल्ली आया था। वहां से यह दल गुजरात पहुंचा।

वे नेनावा से जयन्तसेन सूरिजी गुरुदेव की प्रतिमा के साथ विमान से जापान के लिए प्रस्थान करेंगे। अगर इस मूर्ति को सामान माना जाए तो विमान में एक टिकट कम लेना होगा लेकिन जापानी जैनियों का मानना है कि यह हमारे लिए सिर्फ प्रतिमा नहीं हैं, जीवित गुरु भगवंत हैं!. अमृत शाह, ट्रस्टी, त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत का शुभ मनोरथ है । अमृतभाई शाह 45 वर्षों से सूरत त्रिस्तुतिक जैन संघ के ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने कहा कि विदेशों में जैन देरासर है, लेकिन गुरु मंदिर पहली बार बन रहा है। जैनाचार्य जापान के नागानोकेन में जयन्तसेनसूरीश्वर की गुरुमूर्ति स्थापित करेंगे। ये जापानी जैन सख्त जैन लोकाचार का पालन करते हैं। गुरुदेव की प्रेरणा और जापान की गुरुदेव की अनन्य भक्त तुलसीबेन की शुभ इच्छा से जापान में अब तक 5000 हजार से अधिक लोग मांस का त्याग कर चुके हैं।

जापान में जैन धर्म की महीमा के बारे में अमृतभाई ने आगे बताया कि साल 2005 में जापान से एक दल भारत में राजस्थान के दौरे पर आया था कि कैसे वे जापानी गुरुदेव और जैन धर्म से प्रभावित हैं। उस ग्रुप में एक महिला थी, जिसका नाम चुरूसी था. अपने मार्गदर्शक की सलाह पर वे जैनाचार्य जयन्तसेन सूरिश्वर जी से मिलने गये, जहां वे गुरुदेव की वाणी और व्यवहार से बहुत प्रभावित हुए। गुरुदेव ने चुरुसी बेन को नवकार मंत्र भी दिया और उसका जाप करने को कहा । बाद में जापान लौटकर तीन माह बाद वे पुनः भारत आये और गुरुदेव के दर्शन किये।

उन्होंने नवकार की प्राप्ति के लिए गुरुजी के आदेश पर प्रतिदिन 15 से 18 घंटे तक जप करना शुरू कर दिया, हिंदी भी सीखी। गुरुदेव ने उन्हें नया नाम तुलसी दिया। वह एक मनोचिकित्सक थे। बहन तुलसी एक तरह से अब पूर्ण जैन बन गये इतना ही नहीं, उन्होंने जापान में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार भी प्रारम्भ किया। उनकी बदौलत जापान में 5000 से ज्यादा लोगों ने मांस खाना छोड़ दिया है। जापान में पिछले छह वर्षों से नियमित संध्या गुरु आरती होती आ रही है । गुरुदेव की पुण्य तिथि हर माह मनाई जाती है। तुलसी बहन का नवकार जाप आज भी प्रतिदिन 8 घंटे से अधिक चलता है । 108 दानों की माला से प्रतिदिन 108 दानों का जाप होता है। अध्ययनकर्ता मनोवैज्ञानिक डॉ तुलसीबेन गुरुजी के मुताबिक, मरीज को दवा नहीं बल्कि आराम दिते है, जिससे हजारों मरीज ठीक हो चुके हैं. इस मंत्र ने लकवे में भी अच्छे परिणाम दिए हैं। बहन तुलसी दीक्षा चाहती थीं लेकिन जैनाचार्य ने कहा कि दीक्षा के बाद तुम भारत नहीं छोड़ सकतीं. आपको जापान में बहुत सारे धार्मिक कार्य करने होंगे।

जैनाचार्य जयन्तसेनसूरि आचार्य जयन्तसेनसूरि के शिष्य मुनि निपुणरत्न विजयजी के अनुसार जयन्तसेन सूरी की महिमा देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी है। जापान में ऐसे कई भक्त हैं, जो पूज्यश्री को गुरु के रूप में पूजते हैं. अब यहां से गुरु की मूर्ति को जापान ले जा रहे हैं. जयन्तसेनसूरी का जन्म थराद के पास पेप्परल में हुआ था। उन्होंने 17 वर्ष की आयु में दीक्षा ली और 47 वर्ष की आयु में आचार्य की उपाधि प्राप्त की. संयम ने अपने संयम जीवन में देश के 14 राज्यों में 1 लाख किलोमीटर से अधिक की यात्रा की और कई लोगों को नशामुक्त और शाकाहारी बनाया। उन्होंने 240 दीक्षा दाताओं, 275 पुस्तक लेखन-संपादन, गौशाला, चिकित्सालय जैसे अनेक समाज सेवा कार्यों को प्रेरित किया है। पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने उन्हें राष्ट्रसंत की उपाधि दी थी. अप्रैल 2016 में गुरुदेव का निधन हो गया। गुरुदेव के चरणों में कोटि कोटि नमन के साथ यही कहेंगे कि समस्त सृष्टि पर गुरु कृपा सदैव बनी रहे।

VIRAASAT
THE Sifr EDITION
AHMEDABAD - SATELLITE | ASHRAM ROAD | RATANPOLE | NAVA VADAJ
SURAT - PARLE POINT
asopalav.com | follow us on
AsōPalav®

मित्रता का अर्थ संसार को कृष्ण-सुदामा की मैत्री ने समझाया

मैत्री की बात आती तब तब कृष्ण - सुदामा की मैत्री की मिशाल संसार में हर कोई देता है। सुदामा जब श्रीकृष्ण को मिलने आते हैं तब श्री कृष्ण ने अपने मित्र को देखकर भावविभोर हो गये अपने महल में उन्होंने सुदामा का बड़ा आदर सत्कार किया और जब सुदामा से बातें करते-करते श्रीकृष्ण कब उनके चरण दबाने लगे, इसका सुदामा को बिल्कुल भी एहसास नहीं हुआ। थके-हारे सुदामा तो कब के गहरी नींद में सो चुके थे, लेकिन श्रीकृष्ण अपने ही विचारों में खोए हुए उनके चरण दबाते-दबाते बचपन की बातें करते जा रहे थे। तभी पीछे से आकर रुक्मिणी ने उनके कंधे पर हाथ रखा। श्रीकृष्ण एकदम चौंक गए। पहले उन्होंने रुक्मिणी की ओर देखा, फिर सुदामा की ओर, और बात समझकर धीरे से वहाँ से उठकर अपने कक्ष में चले गए...

श्रीकृष्ण की ऐसी भाव-विभोर अवस्था देखकर रुक्मिणी स्वयं को रोक न सकीं। उन्होंने पूछा, "स्वामी, आज आपका व्यवहार अत्यंत अद्भुत और कुछ अलग ही प्रतीत हो रहा है।" "जब इस संसार के सबसे बड़े सम्राट भी द्वारका आते हैं, तब भी आप तनिक भी प्रभावित नहीं होते। लेकिन अपने मित्र के आने का समाचार मिलते ही आप इतने भावुक हो गए कि भोजन बीच में छोड़कर नंगे पाँव उन्हें लेने दौड़ पड़े।"

"आप, जिन्हें कभी कोई दुःख, कष्ट या चुनौती रुला नहीं सकी—यहाँ तक कि गोकुल छोड़ते समय माता यशोदा के आँसू देखकर भी आपकी आँखें नम नहीं हुईं—वही आप अपने मित्र के फटे, घायल और काँटों से छलनी पैरों को देखकर इतने भावुक हो गए कि अपने आँसुओं से ही उनके चरण धो डाले।"

"कूटनीति, राजनीति और ज्ञान के शिखर पुरुष आप, अपने मित्र को देखकर इतने मग्न हो गए कि बिना कुछ सोचे-समझे उन्हें त्रिलोक की समस्त संपत्ति और समृद्धि देने का निश्चय कर लिया।"

श्रीकृष्ण उसी प्रेमपूर्ण मुस्कान के साथ बोले, "वह मेरा बचपन का भेरूबंध (प्रिय सखा) है, रुक्मिणी!" तभी सत्यभामा ने जिज्ञासा से पूछा, "लेकिन बचपन में तो गुरु माता ने जो चने तुम दोनों को बाँटकर खाने के लिए दिए थे, सुदामा ने उन्हें भी आपसे छिपाकर अकेले ही खा लिया था, है न?"

श्रीकृष्ण मधुर मुस्कान के साथ बोले, "सत्यभामा, सुदामा ने ऐसा कार्य किया है, जिसके लिए समस्त सृष्टि को उसका आभार मानना चाहिए।" "उसने वे चने भूख के कारण नहीं खाए थे। उसने इसलिए खाए थे कि वह नहीं चाहता था कि उसका मित्र कृष्ण जीवन में कभी दरिद्रता देखे। उसे पता था कि वे चने आश्रम में चोर छोड़ गए थे और यह भी जानता था कि वे चोर उन्हें एक निर्धन ब्राह्मणी के घर से चुराकर लाए थे।" "उसे यह भी मालूम था कि उस ब्राह्मणी ने श्राप दिया था कि जो भी उन चनों को खाएगा, वह जीवन भर दरिद्र रहेगा।"

"इसलिए सुदामा ने वे चने मुझसे छिपाकर स्वयं खा लिए, ताकि मैं सदैव सुखी रहूँ। वह मुझे ईश्वर का अंश मानता था। उसे लगा कि यदि ईश्वर ही दरिद्र हो जाएगा, तो पूरी सृष्टि ही दरिद्र हो जाएगी।" "समस्त सृष्टि के कल्याण के लिए सुदामा ने स्वयं दरिद्र बनने का निर्णय हँसते-हँसते स्वीकार कर लिया।" "इतना बड़ा त्याग...!" रुक्मिणी के मुख से अनायास ही निकल पड़ा।

श्रीकृष्ण बोले, "रुक्मिणी, मेरा मित्र ब्राह्मण है, और सच्चा ब्राह्मण सदैव ज्ञानी और त्यागी होता है।" "उसके हृदय में जनकल्याण की भावना कूट-कूटकर भरी होती है। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो ब्राह्मणों का स्वभाव ही ऐसा होता है।"

"अब तुम ही बताओ, ऐसे मित्र के प्रति हृदय में प्रेम न जागे तो और क्या जागे, प्रिये? गोकुल छोड़ते समय मैं इसलिए नहीं रोया, क्योंकि यदि मैं रो पड़ता तो मेरी माँ यशोदा अपने प्राण ही त्याग देतीं।" "लेकिन जब मैंने अपने मित्र के पैरों में वे घाव, वे दरारें और उसकी ऐसी दयनीय अवस्था देखी, तो मेरा हृदय भर आया, रुक्मिणी।" "उसके पैरों में ये घाव और उसके जीवन की यह दशा केवल इसलिए आई, क्योंकि वह जीवन भर अपने इस मित्र का ही भला चाहता रहा। जानती हो रुक्मिणी, परिवार के अतिरिक्त किसी ने भी इस कृष्ण का इतना हित कभी नहीं चाहा।" "लोग तो मेरे पास केवल अपना कल्याण माँगने आते हैं। लेकिन सुदामा जैसे मित्र ही होते हैं, जो अपने मित्र के सुख के लिए स्वेच्छा से दरिद्रता और कष्ट का वस्त्र ओढ़ लेते हैं।" "ऐसे मित्र अत्यंत दुर्लभ होते हैं। न जाने कितने जन्मों के पुण्यों से ऐसे मित्र प्राप्त होते हैं। ऐसे मित्र को यदि त्रिलोक की समस्त संपत्ति भी दे दी जाए, तो भी वह कम ही होगी।"

यह कहते-कहते श्रीकृष्ण का स्वर अत्यंत भावुक और भर्राया हुआ हो गया। कक्ष के भीतर यह संवाद सुनकर सभी रानियों की आँखें नम हो गईं, और वहीं कक्ष के बाहर द्वार पर खड़े सुदामा की आँखों से भी गंगा-यमुना बहने लगी। सच्ची मित्रता वही होती है, जहाँ स्वार्थ नहीं, बल्कि त्याग और निस्वार्थ प्रेम का वास होता है। धन, वैभव और सामर्थ्य सब छोटे पड़ जाते हैं, जब हृदय में ऐसा निष्कलंक प्रेम और अटूट स्नेह बसता हो।

हरे कृष्ण

मिलावटखोरों पर गीरी है गाज

उनका सफाया कर रहे हैं एफडीए के सिंघम सम्राट तुकाराम मुंढे

भारत देश में पुरे साल तीज त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। विविध पकवानों से थाल सजता है। पर इस मीठी सोडम और स्वाद में जहर घोलते हैं ये मिलावटखोर खोया, मिठाई, तेल, दुध , मिर्च मसाला , आइस्क्रीम मतलब हर जगह ये मिलावटखोर सेंधमारी कर रहे हैं। कहते हैं ना जब-जब धरती पर पाप बढ़ता है तब मसीहा आता है। इन दिनों एफडीए कमिश्नर तुकाराम मुंढे इन मिलावटखोरों पर गाज बनकर उनका सफाया कर रहे हैं।

आपको गंगाजल मूवी का वह डायलॉग याद है? अजय देवगन अपने नीचे काम करने वाले अफसरों से कहते हैं सिस्टम चाहे जैसा भी हो उसको चलाने वाला सही होना चाहिए। मंत्री हो या कानून वो सिर्फ नियम बना सकते हैं। पर उन नियमों को जमीन पर लागू करना हमारा काम है। अगर इस वर्दी के अंदर बैठा हुआ हर ऑफिसर अपनी जिम्मेदारी निभाने लगे तो किसी नेता की ताकत नहीं है जो सिस्टम को रोक सके। यह डायलॉग सुनकर आपको आईएएस अफसर और महाराष्ट्र के फूड और ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन यानी एफडीए के कमिश्नर तुकाराम मुंढे की याद नहीं आती? कि ऐसे एक अफसर ने कुछ ही दिनों में खाने-पीने के पदार्थों के साथ मिलावट, धोखाधड़ी करने वालों के सबसे बड़े नाइट मेयर बन चुके हैं। सरकार कानून बना सकती है, इंप्लीमेंट कर सकती है, इंप्लीमेंटेशन फोर्स कर सकती है। लेकिन ग्राउंड लेवल पर फॉलो हो रहा है या नहीं यह जिम्मेदारी ब्यूरोक्रेसी की होती है, अफसरों की होती है।

आज अगर हम ब्रॉडर पर्सपेक्टिव से देखें तो सिस्टम आपको सही लगेगा। कौन से देश में कुछ-कुछ दिक्कतें नहीं होती? 140 करोड़ लोगों का देश परफेक्ट नहीं होता। उसे परफेक्ट बनाना पड़ता है आप और हम जैसे नागरिकों द्वारा। इस बार महाराष्ट्र एफडीए के कमिश्नर का चार्ज लेते ही इस वन मैन आर्मी ने साफ कर दिया कि वो सिर्फ दफ्तर में बैठकर फाइल्स पर दस्तखत करने नहीं आए हैं। मुंढे के आते ही महाराष्ट्र का मिलावटखोर और मुनाफाखोर माफिया थर-थर कांपने लगा। उन्होंने सबसे पहले हाथ डाला मुंबई के उन इलाकों और उन आइकॉनिक ठिकानों पर जहां जाने से पहले बड़े-बड़े अधिकारी भी 100 बार सोचा करते थे। बात करते हैं दक्षिण मुंबई के भिंडी बाजार और मोहम्मद अली रोड की। जो लोग खाने के बहुत शौकीन है वो नूर मोहम्मददी होटल का नाम बखूबी जानते होंगे। सालों पुरानी विरासत वो मशहूर नल्ली निहारी लेकिन जब मुंढे की टीम ने वहां दस्तक दी तो स्वाद के पीछे छिपा था एक खतरनाक सच।

तुकाराम मुंढे को सम्मानित करते हुए रुणानुबंध ट्रस्ट के ट्रस्टी वसंत गलिया

हाईकोर्ट ने कहा, 'सरकारी कैंटीन क्यों नहीं करते चेक', अगले दिन कोर्ट के कैंटीन पर ही मार दिया छापा

बॉम्बे हाईकोर्ट ने महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA) की कार्रवाई को लेकर पूछा कि कार्रवाई सिर्फ प्राइवेट होटल और रेस्टोरेंट पर ही क्यों हो रही है, सरकारी कैंटीनों की जांच क्यों नहीं की जा रही। कोर्ट ने यह टिप्पणी एक होटल की याचिका पर सुनवाई के दौरान की थी। इस टिप्पणी के अगले ही दिन FDA की टीम ने मुंबई हाईकोर्ट परिसर की कैंटीन का निरीक्षण किया। इस कार्रवाई का नेतृत्व खुद FDA आयुक्त तुकाराम मुंढे ने किया। हाल के दिनों में महाराष्ट्र FDA ने मुंबई, पुणे और अन्य शहरों में कई बड़े होटल, रेस्टोरेंट, डेयरी और खाद्य प्रतिष्ठानों पर छापेमारी की थी।

किचन के अंदर इतनी गंदगी कि आप देखकर उल्टी कर देंगे। बिना जाली की खिड़कियां जहां से मक्खियां और कौवे सीधे खुले पड़े खाने पर बैठ रहे थे। फर्श पर जमा तेल और कालिक की इतनी मोटी-मोटी परतें जो सालों की लापरवाही की गवाही दे रही थी। पानी की शुद्धता का कोई रिकॉर्ड नहीं। नतीजा इस ऐतिहासिक होटल का लाइसेंस सीधे सस्पेंड कर दिया गया। एक्शन सिर्फ यहीं तो नहीं रुका। इसी भिंडी बाजाऱ के दो और बड़े नाम शालीमार हॉस्पिटिटी और रहमानिया रेस्टोरेंट। इन्हें पहले भी चेतावनी दी गई थी। पर इन्हें लगा कि अरे हमारा तो इतना बड़ा नाम है। हमें कौन छुएगा? लेकिन यह भूल गए कि सामने कोई आम अफसर नहीं तुकाराम मुंढे खड़े हैं। नियमों की अनदेखी और हाइजीन के साथ खिलवाड़ करने की वजह से इनके किचन पर भी ताला लटका दिया गया।

इसी के साथ मुंढे ने मुंबई के धारावी में एक अवैध एनर्जी ड्रिंक की पूरी फैक्ट्री पकड़ी जो बिना किसी मानक बिना किसी लाइसेंस के बच्चों और युवाओं की सेहत में जहर घोल रही थी। वहीं साकी नाका में छापेमारी कर भारी मात्रा में नकली सोया सॉस और चिली सॉस जप्त किया गया। जिसे हम बहुत मजे से चाउमीन और मोमोज के साथ खाया करते हैं। सवाल यह नहीं है कि हमारे देश में कड़े नियम या कानून नहीं है। सच तो यह है कि हमारे पास फूड सेफ्टी और हाइजीन को लेकर सख्त गाइडलाइंस पहले से मौजूद है। पर फिर भी यह मिलावटखोर इतने बेखौफ कैसे घूम रहे थे? दिक्कत कानून में नहीं है, नियत में है। जब सिस्टम के रक्षक यानी वह भ्रष्ट अधिकारी जो हर महीने सिर्फ पगार लेते हैं। नियमों को देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। तब ऐसे मिलावटखोरों के हौसले बुलंद होते हैं।

जब तक एक फूड इंस्पेक्टर सिर्फ हफ्ता वसूली के लिए सैंपलिंग का नाटक करता रहेगा तब तक कागजों पर लिखे नियम हमारी थाली तक कभी नहीं पहुंच पाएंगे। इसीलिए कहा जाता है कि सिस्टम को बाहर से गाली देने से कुछ नहीं होता। सिस्टम को अंदर से बदलना पड़ता है और यही बदलाव लाने के लिए हमें चाहिए होते हैं तुकाराम मुंढे जैसे सख्त अधिकारी। अगर आपको लगता है कि मुंढे साहब का एक कड़क अंदाज सिर्फ होटल्स और किचन तक लिमिटेड है तो आपको उनके करियर का ट्रैक रिकॉर्ड देखना चाहिए। तुकाराम मुंढे सिर्फ एक अधिकारी नहीं बल्कि प्रशासनिक गलियारों में डेमोलेशन मैन और संकट मोचक के नाम से जाने जाते हैं। यह जहां भी गए जनहित को सबसे ऊपर रखा।

जब नवी मुंबई म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के कमिश्नर बने तो उन्होंने करोड़ों रुपए के अवैध निर्माणों पर हथौड़ा चलवा दिया। कई बड़े रसूखदार बिल्डर्स रियलस्टेट माफिया की नींद हराम करके रख दी। उस वक्त उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव तक लाया गया लेकिन नवी मुंबई की जनता उनके समर्थन में सड़कों पर उतर आई थी। सोलापुर में उन्होंने पानी के अवैध कनेक्शंस पर ऐसी कारवाई की कि सालों से चल रहा पानी का माफिया धंधा एकदम चौपट हो गया। वहीं नासिक म्युनिसिपल कॉरपोरेशन में रहते हुए उन्होंने प्रशासनिक खर्चों में कटौती करके टैक्स चोरी करने वालों पर सीधे नकेल कसी। वहीं जालना में डीएम रहते हुए उन्होंने अवैध रेत खनन करने वालों के खिलाफ खुद रात-रात भर छापेमारी की। नागपुर स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट और कोरोना काल के दौरान भी उनके कड़े और सूझबूझ भरे फैसलों ने हजारों जाने बचाई थी। यह इनका ट्रैक रिकॉर्ड है। सिस्टम को बदलने में सबका योगदान होता है।

बस फर्क यह है कि वो योगदान कितना कड़क और निष्ठापूर्ण है। सरकार नीतियां बना सकती है। दिशा निर्देश दे सकती है। लेकिन जब तक ग्राउंड लेवल पर बैठा हर एक अधिकारी अपनी रीड की हड्डी को सीधा नहीं रखेगा तब तक कानून का डर किसी के मन में नहीं बैठेगा। और बदलाव की शुरुआत सिर्फ अधिकारियों से तो नहीं हमसे भी होती है। 140 करोड़ के इस देश में अगर हम सब चलता है कहकर चुप बैठे रह तो आज जो मिलावट नूर मोहम्मद या शालीमार के किचन में मिल रही है वो कल हमारे घर की रसोई तक पहुंच जाएगी। अगली बार जब आप कहीं बाहर खाएं और आपको जरा भी गंदगी दिखे तो चुपचाप वहां से निकलने के बजाय आवाज उठाइए। शिकायत दर्ज कीजिए। क्योंकि जब एक जागरूक नागरिक और एक ईमानदार अफसर दोनों मिलकर सिस्टम को अंदर से बदलने की ठान लेंगे तो यकीन मानिए देश को परफेक्ट बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। देश में कई ऐसे अधिकारी हैं जो सीधे जनता से जुड़ जाते हैं। आमतौर पर लोग बड़े अधिकारियों से मिलने और अपनी समस्याएँ बताने में हिचकिचाते हैं, लेकिन अधिकारी का व्यवहार ही जनता का विश्वास जीतता है। ऐसे ही एक अधिकारी हैं आईएएस तुकाराम मुंढे, जिनका 16 वर्षों की सेवा में 19 बार तबादला हुआ, फिर भी उन्होंने कभी अपने कर्तव्य और ईमानदारी से समझौता नहीं किया। वर्ष 2005 बैच के इस अधिकारी ने जहाँ भी काम किया, वहाँ अपनी अलग पहचान बनाई।

महाराष्ट्र के बीड़ जिले के तारसोना गाँव में जन्मे तुकाराम मुंढे बचपन से ही अन्याय के खिलाफ खड़े रहने वाले व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते हैं। स्कूल से लौटने के बाद वे अपने पिता के साथ खेतों में काम करते और सब्जियाँ बेचते थे। दसवीं के बाद वे औरंगाबाद में पढ़ाई के लिए गए, फिर मुंबई से पोस्ट ग्रेजुएशन कर यूपीएससी की तैयारी शुरू की। पहले प्रयास में असफल होने के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और अंततः आईएएस अधिकारी बने। उनकी पहली नियुक्ति सोलापुर में हुई, जहाँ उन्होंने जॉइन करते ही अवैध शराब के अड्डों पर कार्रवाई शुरू कर दी। राजनीतिक दबाव और जान से मारने की धमकियों के बावजूद वे पीछे नहीं हटे।

बाद में जहाँ-जहाँ उनकी पोस्टिंग हुई, वहाँ उन्होंने अतिक्रमण हटाने, अवैध कारोबार पर रोक लगाने, भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करने और प्रशासनिक सुधार लागू करने जैसे कई साहसिक फैसले लिए। अपने पूरे प्रशासनिक जीवन में तुकाराम मुंढे का बार-बार तबादला होता रहा, लेकिन उन्होंने कभी इसे निराशा का कारण नहीं बनाया। उनका मानना था कि जहाँ भी अवसर मिले, वहाँ ईमानदारी से जनता के लिए काम करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य है।

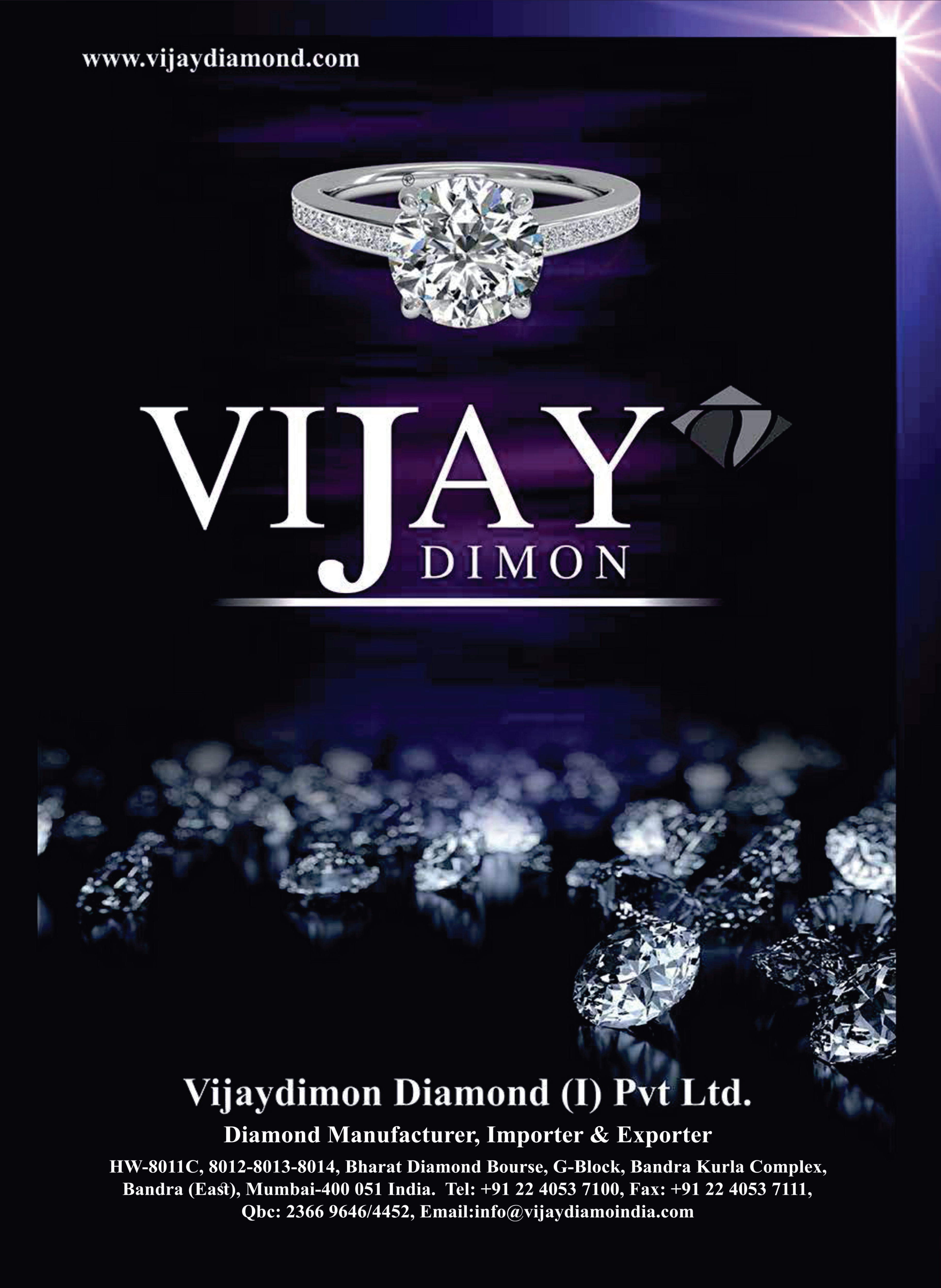
www.vijaydiamond.com
VIJAY
DIMON
Vijaydimon Diamond (I) Pvt Ltd.
Diamond Manufacturer, Importer & Exporter
HW-8011C, 8012-8013-8014, Bharat Diamond Bourse, G-Block, Bandra Kurla Complex,
Bandra (East), Mumbai-400 051 India. Tel: +91 22 4053 7100, Fax: +91 22 4053 7111,
Qbc: 2366 9646/4452, Email:info@vijaydiamoindia.com

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की पुण्यतिथि : राष्ट्र के लिए समर्पित एक अमर जीवन

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अनेक ऐसे महान सपूत हुए, जिन्होंने अपना जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। उन्हीं महान राष्ट्रनायकों में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का नाम अत्यंत सम्मान और गर्व के साथ लिया जाता है। उनका व्यक्तित्व केवल एक स्वतंत्रता सेनानी का नहीं था, बल्कि वे साहस, संकल्प, अनुशासन, राष्ट्रभक्ति और त्याग की ऐसी मिसाल थे, जिसने करोड़ों भारतीयों के मन में स्वतंत्रता की लौ प्रज्वलित की। उनकी पुण्यतिथि हमें उस महान व्यक्तित्व को स्मरण करने का अवसर देती है, जिसने अपने जीवन की सुख–सुविधाओं को त्यागकर भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने का सपना देखा और उस सपने को साकार करने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक में हुआ था। बचपन से ही उनमें देश, समाज और राष्ट्र के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती थी। उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और भारतीय सिविल सेवा जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा में सफलता हासिल की, लेकिन अंग्रेजी शासन की नौकरी उनके राष्ट्रवादी मन को स्वीकार नहीं थी। उन्होंने उस सम्मानजनक नौकरी को छोड़कर देश की स्वतंत्रता के संघर्ष का रास्ता चुना। यह निर्णय अपने आप में बताता है कि उनके लिए व्यक्तिगत सफलता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भारत की स्वतंत्रता थी।

सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि भारत को स्वतंत्रता केवल मांगने से नहीं मिलेगी, बल्कि इसके लिए मजबूत संकल्प, संगठन और संघर्ष की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं में राष्ट्रभक्ति और आत्मविश्वास जगाने का कार्य किया। उनके विचारों में भारत केवल एक भौगोलिक सीमा नहीं था, बल्कि करोड़ों भारतीयों की आशाओं, भावनाओं और आत्मसम्मान का प्रतीक था।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नेताजी का संघर्ष अनेक कठिन परिस्थितियों से होकर गुजरा। वे कई बार गिरफ्तार हुए, नजरबंद किए गए और अंग्रेजी शासन ने उनके बढ़ते प्रभाव को रोकने का पूरा प्रयास किया। लेकिन परिस्थितियां उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकीं। उन्होंने देश की आजादी को अपने जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बना लिया था। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का सबसे प्रेरणादायक पक्ष उनका अदम्य साहस था। उनका प्रसिद्ध आह्वान "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" उस दौर के भारतीय युवाओं के लिए केवल एक नारा नहीं था, बल्कि मातृभूमि के लिए सर्वस्व अर्पित करने का संदेश था।

उन्होंने आजाद हिंद फौज के माध्यम से भारतीयों को संगठित किया और स्वतंत्र भारत का सपना लेकर आगे बढ़े। "जय हिंद" जैसे शब्द आज भी देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूती प्रदान करते हैं।

आज जब हम नेताजी को याद करते हैं तो हमारे सामने केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं आता, बल्कि एक ऐसा व्यक्तित्व खड़ा दिखाई देता है, जिसने हमें सिखाया कि कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटना चाहिए। उन्होंने यह संदेश दिया कि राष्ट्र निर्माण केवल सरकारों का काम नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

नेताजी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनके लिए देश सर्वोपरि था। उन्होंने व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं, सुख-सुविधाओं और सुरक्षित भविष्य की चिंता किए बिना राष्ट्र के लिए संघर्ष का मार्ग चुना। आज के समय में जब व्यक्ति अपने व्यक्तिगत हितों में उलझता जा रहा है, नेताजी का जीवन हमें यह सोचने के लिए मजबूर करता है कि क्या हम भी अपने समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को उतनी ही गंभीरता से समझते हैं?

उनकी पुण्यतिथि केवल श्रद्धांजलि देने का अवसर नहीं होनी चाहिए। यह आत्ममंथन का दिन भी होना चाहिए। हमें यह विचार करना चाहिए कि जिस स्वतंत्रता के लिए हमारे वीरों ने अपना जीवन दिया, क्या हम उस स्वतंत्रता का सम्मान कर रहे हैं? क्या हम देश के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन कर रहे हैं? क्या हमारे भीतर समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदना है? क्या हम जाति, भाषा, क्षेत्र और स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को प्राथमिकता दे रहे हैं?

आज भारत एक मजबूत और तेजी से आगे बढ़ता हुआ राष्ट्र है। लेकिन किसी भी देश की वास्तविक शक्ति केवल उसकी आर्थिक प्रगति या तकनीकी विकास में नहीं होती। उसकी वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों के चरित्र, अनुशासन, ईमानदारी और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी में होती है। नेताजी का जीवन हमें इसी चरित्र निर्माण का संदेश देता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम नेताजी सुभाष चंद्र बोस को केवल जयंती या पुण्यतिथि पर याद करने तक सीमित न रहें। उनके विचारों को अपने जीवन में उतारें। देश के प्रति ईमानदार रहें, अपने कर्तव्यों का पालन करें, समाज में भाईचारा बढ़ाएं और आने वाली पीढ़ी को भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान इतिहास से परिचित कराएं। विशेष रूप से युवाओं को नेताजी के जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। यदि युवा अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित, अनुशासित और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार हों तो देश को आगे बढ़ने से कोई शक्ति रोक नहीं सकती। नेताजी ने युवाओं की शक्ति को पहचाना था और उन्हें राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण आधार माना था।

नेताजी का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि मन में दृढ़ संकल्प हो तो रास्ते निकाले जा सकते हैं। उनका संघर्ष हमें साहस देता है, उनका त्याग हमें संवेदनशील बनाता है और उनकी राष्ट्रभक्ति हमें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है।

आज नेताजी सुभाष चंद्र बोस की पुण्यतिथि पर हम उनके चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हैं। हम उस महान आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिसने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनका शरीर भले ही हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके विचार, उनका साहस, उनका संघर्ष और उनकी राष्ट्रभक्ति सदैव भारतवासियों को प्रेरित करती रहेगी।

आइए, इस पुण्यतिथि पर हम केवल पुष्प अर्पित न करें, बल्कि उनके सपनों के भारत के निर्माण का संकल्प लें। ऐसा भारत, जहां नागरिक अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझें, जहां समाज में एकता और भाईचारा हो, जहां ईमानदारी और अनुशासन का सम्मान हो और जहां राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखा जाए। यही नेताजी सुभाष चंद्र बोस को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस अमर रहें। जय हिंद।

नितिन जैन
मोबाइल : 9215635871

प्रिंट मीडिया के आख़िरी महानायक: बाबा शिंगोटे

“आज की लाइक्स, व्यूज़, सब्सक्रिप्शन, फॉलोअर्स और वायरल जैसे शब्दों के बीच पली-बढ़ी पीढ़ी शायद सर्कुलेशन या अख़बार की बिक्री (खप) जैसे शब्दों से भी परिचित न हो। इसकी वजह यह है कि इक्कीसवीं सदी में मीडिया का विस्तार इतनी तेज़ी से हुआ कि प्रिंट मीडिया—यानीकी अख़बार, साप्ताहिक और पत्रिकाएँ—कब इतिहास के पन्नों में सिमट गए, किसी को पता ही नहीं चला। 2020 में आई कोविड महामारी ने पहले से ही संघर्ष कर रहे प्रिंट मीडिया पर ऐसा अंतिम प्रहार किया कि उसमें काम करने वाले अनुभवी लोग भी समझ नहीं पाए कि यह सब कब और कैसे हो गया। रेलवे स्टेशन, बस अड्डों और चौराहों पर दिखाई देने वाले अख़बारों के स्टॉल कब गायब हो गए, यह भी अब किसी को याद नहीं। इंटरनेट, फेसबुक, ईमेल और सोशल मीडिया की सुनामी ने पिछले दस वर्षों में पारंपरिक मीडिया की पूरी दुनिया को बहा दिया।

आज यह सब याद करने की वजह है उस दुनिया के आख़िरी महानायक को श्रद्धांजलि देना। क्योंकि जिस व्यक्ति की याद ताज़ा करनी है, वह पत्रकारिता जीवन और प्रिंट मीडिया की दुनिया के अंतिम महानायक थे। वह महानायक थे मुरलीधर उर्फ़ बाबा शिंगोटे। जब उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कहा, तब प्रिंट मीडिया भी मानो महाभारत के भीष्म पितामह की तरह मृत्युशैया पर अपने अंतिम क्षण गिन रहे थे।

मुरलीधर शेट शिंगोटे जैसे विलक्षण व्यक्ति चार पंक्तियों की ख़बर भी ठीक से न लिख पाने वाले यह व्यक्ति मुंबई में एक सायंकालीन दैनिक निकालने का जोखिम उठाने जा रहा थे। आमतौर पर ऐसा जोखिम वही उठा सकते है जिसके पास अथाह धन हो या पुश्तैनी संपत्ति। इसे जोखिम इसलिए कहा जाता है, क्योंकि अख़बार का व्यवसाय हमेशा अनिश्चितताओं से भरा रहा है।

लेकिन बाबा शिंगोटे ने यह जोखिम इसलिए उठाया क्योंकि वे अख़बार बेचने की कला के उस्ताद थे। वे जानते थे कि अख़बार को पाठकों तक कैसे पहुँचाया जाता है। जब नीलूभाऊ खाडिलकर का नवाकाल आर्थिक संकट से जूझ रहा था, तब बाबा शिंगोटे ने उसकी एजेंसी ली और अपनी साइकिल पर पूरे मुंबई में अख़बार पहुँचाने के लिए अथक परिश्रम किया। उसी मेहनत की बदौलत मराठी पाठकों को एक महान संपादकीय लेखक मिला। आर्थिक रूप से कमज़ोर नीलूभाऊ खाडिलकर और अथक मेहनत करने वाले मुरलीधर शिंगोटे की जोड़ी ने प्रिंट मीडिया में सचमुच चमत्कार कर दिखाया।

एक ओर नीलूभाऊ को अपनी लेखनी पर अटूट विश्वास था, तो दूसरी ओर बाबा शिंगोटे उस लेखनी को हर पाठक तक पहुँचाने के लिए दिन-रात मेहनत करते थे। प्रिंट मीडिया की दुनिया में यह जोड़ी एक अनोखा और शायद आख़िरी चमत्कार थी।

कुछ कारणों से 1 मई 1994, महाराष्ट्र दिवस के दिन, यह जोड़ी अलग हो गई। बाबा को नवाकाल की एजेंसी छोड़नी पड़ी। उस समय उनके पास कई अन्य अख़बारों के वितरण का भी काम था और उन्होंने उसके लिए बहुत बड़ा नेटवर्क खड़ा किया था। लेकिन नवाकाल का वितरण छूटने के बाद उनके साथ काम करने वाले अनेक कर्मचारियों की रोज़ी-रोटी पर संकट आ गया, क्योंकि बाकी अख़बारों का वितरण पर्याप्त नहीं था। अपने कर्मचारियों का पेट भरने के लिए बाबा शिंगोटे ने अपना ही अख़बार निकालने का निर्णय लिया। उन्होंने चार पन्नों का छोटा-सा शाम का अख़बार ₹मुंबई चौफेर₹ शुरू किया।

लेकिन इतने कम समय में ही चौफेर ने पचास हज़ार प्रतियों का आँकड़ा पार कर लिया और बाबा का आत्मविश्वास कई गुना बढ़ गया। इसी आत्मविश्वास के बल पर उन्होंने विजयादशमी 1994 के शुभ अवसर पर सुबह का दैनिक ₹आपला वार्ताहर₹ शुरू करने का निर्णय लिया। उस समय 1995 के विधानसभा चुनाव सामने थे। वहीं से हमारी और नवाकाल के बीच सीधी प्रतिस्पर्धा शुरू हुई।

चुनाव तक वार्ताहर ने बड़ी सफलता हासिल कर ली और अपना मज़बूत पाठक वर्ग बना लिया। यद्यपि नवाकाल का प्रसार पाँच-छह लाख था और हमारा अख़बार लगभग एक लाख प्रतियों तक ही पहुँच पाया था, फिर भी बिना किसी आर्थिक या राजनीतिक समर्थन के इतना बड़ा पाठक वर्ग तैयार करना अपने आप में एक रिकॉर्ड था। बाबा शिंगोटे ने यह सिद्ध कर दिया कि शून्य पूँजी से भी एक सफल मीडिया संस्थान खड़ा किया जा सकता है।

नीलूभाऊ खाडिलकर की लेखनी महान थी, लेकिन उस लेखनी को पाठकों तक पहुँचाने वाले मुरलीधर शिंगोटे भी उतने ही महत्वपूर्ण थे। वे अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी केवल किसी समाचार की हेडलाइन देखकर यह समझ जाते थे कि वह कितनी प्रभावशाली होगी और लोग उसे पढ़ेंगे या नहीं। यही उनकी असाधारण प्रतिभा थी।

इसी प्रतिभा के बल पर उन्होंने सैकड़ों पत्रकारों को रोज़गार देने वाली मीडिया संस्था खड़ी की। स्वयं शुद्ध और प्रभावशाली मराठी लिख पाने में सक्षम न होने के बावजूद उन्होंने सैकड़ों पत्रकारों की रचनाओं को सही पाठकों तक पहुँचाने को अपना कर्तव्य माना। उन्होंने मराठी के साथ-साथ तमिल, कन्नड़, हिंदी और अंग्रेज़ी सहित छह-सात भाषाओं के दैनिक अख़बार शुरू किए और उन्हें सफलतापूर्वक चलाया। वे ऐसे व्यक्ति थे जो पाठकों से पहले किसी लेखक की क्षमता पहचान लेते थे।

कोरोना काल में उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कहा। वास्तव में उनकी मृत्यु केवल कोरोना से नहीं, बल्कि लॉकडाउन से भी जुड़ी हुई थी। समय पर अख़बार पाठकों तक पहुँचाने का जुनून रखने वाले बाबा को किसी ने कभी घर में आराम करते नहीं देखा था। उन्होंने चाहे कितना भी धन कमाया हो, लेकिन आराम से बैठकर उसका आनंद लेना उनकी प्रकृति में कभी नहीं था। लेकिन नई तकनीक ने समय और इंसानों की आदतें दोनों बदल दी थीं। कंप्यूटर, स्मार्टफ़ोन, पोर्टल और वेबसाइट जैसे नए माध्यमों ने काग़ज़ के अख़बारों की दुनिया को लगातार छोटा कर दिया। ख़बर पाने के लिए अब लोग अख़बार पर निर्भर नहीं रहे थे। प्रिंट मीडिया अपने अंतिम दौर में पहुँच चुका था।

ऐसे समय में प्रिंट मीडिया के इस महान वितरक का युग भी समाप्ति की ओर बढ़ रहा था। लॉकडाउन ने अंतिम आघात किया और जो थोड़े-बहुत पाठक अख़बार पढ़ते थे, वे भी मजबूरी में टीवी चैनलों और स्मार्टफ़ोन की दुनिया में चले गए। संयोग देखिए कि उसी समय बाबा को भी चार दीवारों के भीतर बंद होकर रहना पड़ा। जो व्यक्ति पूरी ज़िंदगी खुली हवा में दौड़ता-भागता रहा हो, उसके लिए यह घुटन असहनीय थी। मानो उन्हें महसूस हो गया था कि यह दुनिया अब उनके लिए नहीं रही।

6 अगस्त 2020 का वह दिन था। कोरोना महामारी अपने चरम पर थी। बाबा भी कोरोना की चपेट में आए और इसी दौरान उनका निधन हो गया। बाबा इस दुनिया से चले गए, लेकिन अपनी विरासत अपने दोनों बेटों अरविंद और प्रवीण को सौंप गए। बाबा की ही तरह अथक मेहनत करते हुए दोनों बेटों ने उनके मीडिया समूह का विस्तार किया है और आज भी उसे आगे बढ़ा रहे हैं। अब अगली पीढ़ी भी इसी क्षेत्र में आगे आ रही है, यह वास्तव में संतोष की बात है। पूरा विश्वास है कि बाबा आज स्वर्ग से अपने बच्चों और उनके द्वारा विशाल वटवृक्ष में बदले गए इस साम्राज्य को देखकर गर्व और संतोष का अनुभव करते होंगे तथा उन्हें आशीर्वाद दे रहे होंगे।

जिस मुंबई में बाबा ने अथक परिश्रम से अपनी पहचान और अपना साम्राज्य खड़ा किया, उसी मुंबई में एक महत्वपूर्ण चौक का नाम उनके नाम पर रखा जाना और उसके नामकरण समारोह में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री तथा अनेक प्रतिष्ठित नेताओं का उपस्थित होना, उनके योगदान का सबसे बड़ा सम्मान है। बाबा शिंगोटे का कार्य कितना विशाल था, इसका वास्तविक एहसास हर उस व्यक्ति को होगा जो पुण्यनगरी के ₹बाबा शिंगोटे चौक₹ पर खड़े होंगे।

“मेरे पूज्य पिता, आदरणीय मुरलीधर (बाबा) शिंगोटे का 'एक समाचार-पत्र वितरण संस्था से लेकर सीधे एक बड़े समाचार-पत्र समूह के संचालक' बनने तक का सफ़र अत्यंत प्रेरणादायी रहा है। उन्होंने जिस निष्ठा, समर्पण और अथक परिश्रम से 'पुण्यनगरी' का पौधा लगाया था, वह आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। बाबा की यही संघर्षपूर्ण विरासत और निर्भीक होकर 'सत्य का अनुसरण' करने की उनकी सीख को हम आज गर्व के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। आज हम सभी तेज़ी से बदलते डिजिटल युग में जी रहे हैं, यह सत्य है; लेकिन इस डिजिटल युग में भी 'प्रिंट मीडिया' (मुद्रित माध्यमों) का महत्व और उसकी विश्वसनीयता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। सूचना के इस अथाह सागर में भी छपे हुए शब्दों का महत्व और सत्य की शक्ति कभी कम नहीं हो सकती। इन्हीं मूल्यों पर दृढ़ रहते हुए 'पुण्यनगरी' समूह आज भी आम जनमानस की आवाज़ बनकर अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है।

प्रसिद्ध गुजराती पत्रिका 'हीरा माणेक' तथा उनके सभी सम्मानित पाठकों को 'दैनिक पुण्यनगरी' समूह की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ!

— प्रवीण शिंगोटे

संचालक, दैनिक पुण्यनगरी समूह

RSBL®
RIDDISIDDHI BULLIONS LTD.

The Power of Trust

One of the largest bullion dealers in India.

• • •

RSBL has its presence across 17 cities in the country.

• • •

In India, RSBL is ranked among the top 10 unlisted companies in terms of turnover.

• • •

Bullion House, 115, Tambakata Lane, Opp Dagina Bazaar, Pydhonie, Mumbai- 400 003. India
Tel.: +91 22 6124 5555 l Fax.: +91 22 6124 5572 l Email.: info@rsbl.co.in l Web.: www.rsbl.co.in

IPO में वित्तीय आंकड़ों की हेराफेरी सट्टेबाजी पर नकेल कसने का समय आ गया है

– रमेश बागरेचा

IPO और सट्टेबाजी (सट्टे) पर नकेल कसने के लिए कड़े नियम, निगरानी और वित्तीय शिक्षा की जरूरत है, जिसमें मुख्य उपाय हैं कड़े नियम लागू करना, ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप्स पर प्रतिबंध और पारदर्शिता बढ़ाना। नियम और कानूनी कार्रवाईकड़े नियम: आईपीओ लाने वाली कंपनियों के फंड के इस्तेमाल पर सख्त नजर रखी जाए।सट्टेबाजी पर बैन: अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप्स और वेबसाइटों को तुरंत ब्लॉक किया जाए। तेज जांच: नियमों का उल्लंघन करने वालों पर भारी जुर्माना और कानूनी कार्रवाई हो। पारदर्शिता और निगरानीबाजार निगरानी: सेबी (SEBI) जैसी संस्थाएं आईपीओ में कृत्रिम मांग (artificial demand) बनाने वालों को पकड़ें। लेनदेन पर नजर: बैंक खातों और डिजिटल वॉलेट से होने वाले सट्टेबाजी के पैसों के लेन-देन को रोका जाए।जागरूकतावित्तीय शिक्षा: आम लोगों को बिना सोचे-समझे आईपीओ में पैसा लगाने और सट्टेबाजी के जोखिमों के बारे में जागरूक किया जाए।

इस बारे में रमेश बागरेचा ने अपने विचार साझा करते हुए इसकी विस्तृत जानकारी दी है

विषयः प्राथमिक बाजार (Main Board एवं SME IPOs) में वित्तीय आंकड़ों की हेराफेरी, कृत्रिम वैल्यूएशन एवं सट्टेबाजी पर नकेल कसने बाबत।

सेवा में,
अध्यक्ष एवं निदेशक मंडल,
भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) सेबी भवन, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई - 400051

महोदय/महोदया,

मैं इस पत्र के माध्यम से प्राथमिक बाजार (Mainboard एवं SME IPOs) में तेजी से बढ़ रही कुछ ऐसी गतिविधियों की ओर सेबी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, जो आम निवेशकों के हितों और बाजार की निष्पक्षता के लिए बेहद चिंताजनक हैं। आजकल देखा जा रहा है कि कई कंपनियाँ बाजार में अपना आईपीओ (IPO) लाने से पूर्व अपने वित्तीय आंकड़ों में कृत्रिम समायोजन (Financial Adjustments) और हेराफेरी करके कंपनी के वास्तविक मूल्य (Real Valuation) को अनुचित रूप से बढ़ाकर पेश करती हैं।

इसके अतिरिक्त, आईपीओ की प्रक्रिया को पूरा करने, विभिन्न अनुमतियाँ प्राप्त करने एवं प्रचार-प्रसार में अत्यधिक लागत आती है, जिससे प्रति शेयर की वास्तविक लागत कृत्रिम रूप से बढ़ जाती है।

इस प्रक्रिया में निम्नलिखित गंभीर बिंदु उभरकर सामने आ रहे हैं:

वित्तीय आंकड़ों में फेरबदल:
आईपीओ से ठीक पहले वित्तीय विवरणों को आकर्षित दिखाने के लिए अकाउंटिंग ट्रिक्स और एडजेस्टमेंट का सहारा लिया जाता है, जिससे आम निवेशकों के सामने कंपनी की सही स्थिति पेश नहीं होती।

सिंडिकेट और सट्टेबाजी का प्रभाव:
कुछ प्रमोटर्स, दलाल और सट्टेबाज आपस में मिलकर बाजार में आईपीओ का झूठा माहौल (Artificial Hype) बनाते हैं। ग्रे मार्केट प्रीमियम (GMP) को भी प्रभावित कर आम निवेशकों को अधिक-से-अधिक आवेदन (Apply) करने के लिए आकर्षित किया जाता है।

लिस्टिंग के दिन कृत्रिम तेजी:
आईपीओ को लिस्टिंग के दिन ऊंचे दामों पर लिस्ट कराकर प्रमोटर्स एवं सिंडिकेट अपने शेयर बेचकर निकल जाते हैं, जबकि बाद में शेयर की कीमत तेजी से गिरती है और आम निवेशक भारी नुकसान में फंस जाता है।

भारतीय पूंजी बाजार में छोटे और साधारण निवेशकों का विश्वास बनाए रखने के लिए सेबी से विनम्र अनुरोध है कि निम्नलिखित बिंदुओं पर कठोर और विशेष कदम उठाए जाएं:

सख्त ऑडिट एवं वित्तीय जांच:
आईपीओ लाने वाली कंपनियों (विशेषकर SME सेगमेंट) के पिछले 3-5 वर्षों के वित्तीय विवरणों की थर्ड-पार्टी स्वतंत्र ऑडिट कराई जाए।

ग्रे मार्केट एवं दलालों पर नकेल:
आईपीओ के नाम पर सट्टेबाजी करने वाले दलालों और कृत्रिम हाईप बनाने वाले सिंडिकेट्स पर कड़ी निगरानी रखी जाए।

वैल्यूएशन के नियमों को पारदर्शी बनाना:
अत्यधिक वैल्यूएशन (Overvaluation) तय करने वाले मर्चेंट बैंकरों की जवाबदेही तय की जाए।

दोषियों पर सख्त कार्रवाई:
जो भी प्रमोटर या संस्था वित्तीय विवरणों में हेराफेरी में लिप्त पाई जाए, उस पर भारी जुर्माना और बाजार से स्थायी प्रतिबंध लगाया जाए। यदि इन अनियमितताओं पर समय रहते सख्त कदम नहीं उठाए गए, तो आम निवेशक खुद को ठगा हुआ महसूस करेगा और प्राथमिक बाजार से छोटे निवेशकों का विश्वास उठ जाएगा।

आशा है कि सेबी इस विषय की गंभीरता को समझते हुए निवेशकों के हित में शीघ्र एवं उचित कार्रवाई करेगी।
धन्यवाद।
भवदीय- रमेश कुमार बागरेचा

विचारणीय लेख

क्या सचमुच होता है “गणपति का विसर्जन”?

सर्जनकर्ता भगवान का विसर्जन क्यों?

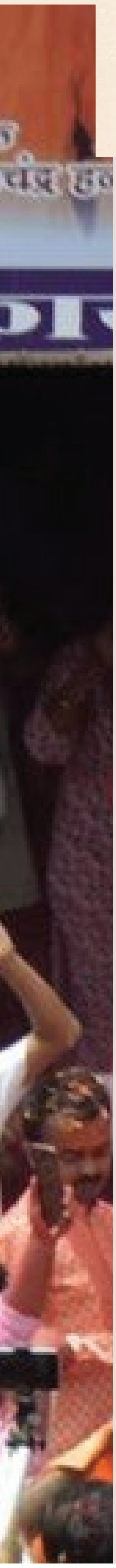

हर वर्ष गणेशोत्सव पूरे देश में अपार श्रद्धा, उल्लास और भक्ति के साथ मनाया जाता है। घर-घर और सार्वजनिक पंडालों में भगवान श्री गणेश की स्थापना होती है। दस दिनों तक आरती, भजन, पूजा, प्रसाद और सेवा का क्रम चलता है। फिर अनंत चतुर्दशी के दिन लाखों श्रद्धालु “गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ” का उद्घोष करते हुए भगवान की प्रतिमा को जल में प्रवाहित करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया को हम वर्षों से एक ही नाम देते आए हैं—”गणपति विसर्जन”।

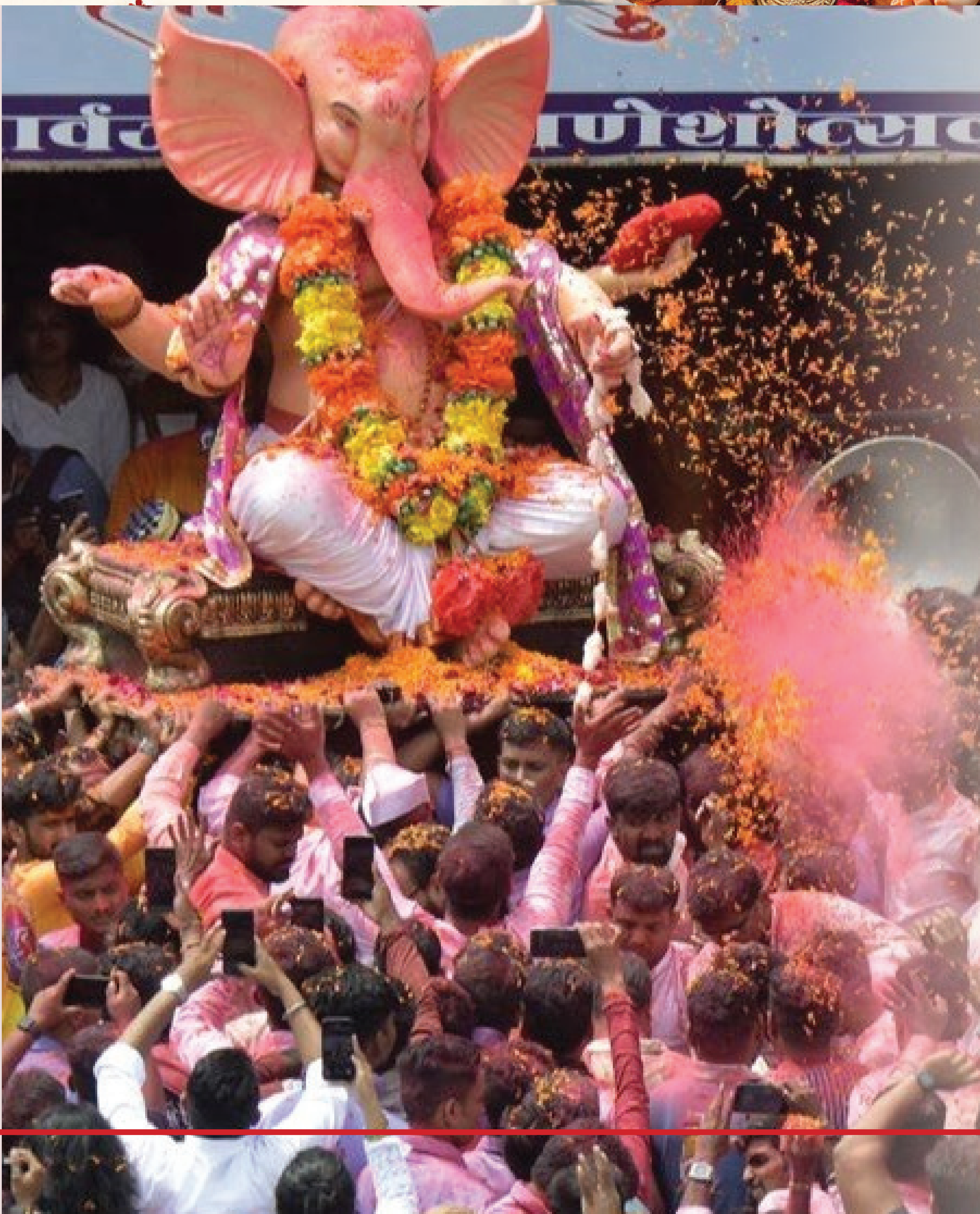

किन्तु क्या हमने कभी इस शब्द पर गंभीरता से विचार किया है?

क्या वास्तव में भगवान का विसर्जन होता है? क्या उस परम सत्ता का विसर्जन संभव है, जो स्वयं इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सर्जक, संचालक और पालनकर्ता है? जो प्रत्येक कण में विद्यमान है, जिसका न आदि है और न अंत, उसका विसर्जन कैसे हो सकता है? यह प्रश्न किसी परंपरा का विरोध नहीं, बल्कि हमारी धार्मिक भाषा और भावनाओं पर पुनर्विचार का निमंत्रण है।

भगवान प्रतिमा में सीमित नहीं हैं

हम सभी जानते हैं कि पूजा के लिए स्थापित की गई प्रतिमा हमारी श्रद्धा का माध्यम है। शास्त्र भी बताते हैं कि भगवान सर्वव्यापक हैं। वे केवल पत्थर, धातु या मिट्टी की प्रतिमा तक सीमित नहीं हैं। जब हम गणेशजी का आवाहन करते हैं, तब हम अपनी श्रद्धा, विश्वास और भक्ति के माध्यम से उस प्रतिमा को पूज्य बनाते हैं। पूजा समाप्त होने के बाद मिट्टी की प्रतिमा पुनः प्रकृति में विलीन हो जाती है। यह प्रकृति के चक्र का सम्मान है, भगवान का अंत नहीं। फिर प्रश्न उठता है कि जब जल में केवल प्रतिमा का विलय होता है, तो हम बार-बार "भगवान का विसर्जन" क्यों कहते हैं?

शब्द बदलें तो भाव भी बदलेंगे

भारतीय संस्कृति में शब्दों का विशेष महत्व है। हमारे ऋषियों ने वाणी को भी साधना माना है। शब्द केवल ध्वनि नहीं होते, वे विचार और संस्कार भी निर्मित करते हैं। "विसर्जन" शब्द सुनते ही सामान्य व्यक्ति के मन में त्याग, समाप्ति या दूर कर देने का भाव आता है। जबकि गणपति बप्पा के प्रति भक्त का भाव तो इसके ठीक विपरीत होता है। वह तो कहता है— "अगले वर्ष जल्दी आना।" जिसे अगले वर्ष पुनः बुलाना है, उसे विदा किया जाता है, विसर्जित नहीं।

यदि हम "गणपति बप्पा की मंगलमय विदाई", "प्रतिमा का जल-विलय", "शुभ विदाई" या "पुनः आगमन की कामना के साथ विदाई" जैसे शब्दों का प्रयोग करें, तो हमारी भाषा में श्रद्धा और आत्मीयता दोनों का सुंदर समन्वय दिखाई देगा।

शास्त्र क्या कहते हैं?

यह भी सत्य है कि वैदिक एवं आगमिक परंपराओं में "विसर्जन" शब्द का एक विशिष्ट आध्यात्मिक अर्थ है। पूजा के अंत में देवता का अनादर नहीं किया जाता, बल्कि सम्मानपूर्वक उन्हें उनके सर्वव्यापक दिव्य स्वरूप में पुनः प्रतिष्ठित करने की विधि को भी "विसर्जन" कहा गया है। अर्थात शास्त्रीय दृष्टि से यह शब्द अनुचित नहीं है। लेकिन आज सामान्य समाज इस शब्द के शास्त्रीय अर्थ से अधिक उसके सामान्य अर्थ को समझता है। इसलिए यदि हमारी भाषा श्रद्धा के अनुरूप अधिक संवेदनशील बन सकती है, तो इस पर विचार करने में कोई हानि नहीं है।

धर्म का उद्देश्य भावना है, विवाद नहीं

यह विषय किसी परंपरा को बदलने का अभियान नहीं है और न ही किसी धार्मिक मान्यता का विरोध। यह केवल एक विनम्र विचार है कि क्या हमारी भाषा हमारी श्रद्धा के अनुरूप हो सकती है? यदि कोई श्रद्धालु "विसर्जन" शब्द का प्रयोग करता है, तो वह भी अपनी परंपरा के अनुसार सही है। यदि कोई "विदाई" कहना पसंद करता है, तो उसकी भावना भी उतनी ही पवित्र है। धर्म का सार शब्दों की कठोरता में नहीं, बल्कि भावनाओं की पवित्रता में है।

समय के साथ भाषा भी बदलती है

समाज बदलता है, अभिव्यक्तियाँ बदलती हैं और भाषा भी समय के साथ अधिक संवेदनशील होती जाती है। पहले जिन शब्दों का प्रयोग सहज था, आज उनके स्थान पर अधिक सम्मानजनक शब्द अपनाए जा रहे हैं। तो क्या गणेशोत्सव के समापन पर हम भी एक छोटा-सा परिवर्तन नहीं कर सकते?

क्या हम यह नहीं कह सकते—

"आज गणपति बप्पा की मंगलमय विदाई है। प्रतिमा का जल-विलय होगा, लेकिन बप्पा हमारे हृदय में सदैव विराजमान रहेंगे।"

निष्कर्ष

भगवान श्री गणेश न जल में समाते हैं, न मिट्टी में समाप्त होते हैं। वे हमारी श्रद्धा, हमारी संस्कृति और हमारे जीवन के प्रत्येक शुभ कार्य के प्रथम पूज्य हैं।

जल में विलीन होती है केवल मिट्टी की प्रतिमा।

अमर रहती है आस्था।
अक्षुण्ण रहता है विश्वास।
और जीवित रहती है वह पुकार—
"गणपति बप्पा मोरया!
पुढच्या वर्षी लवकर या!"

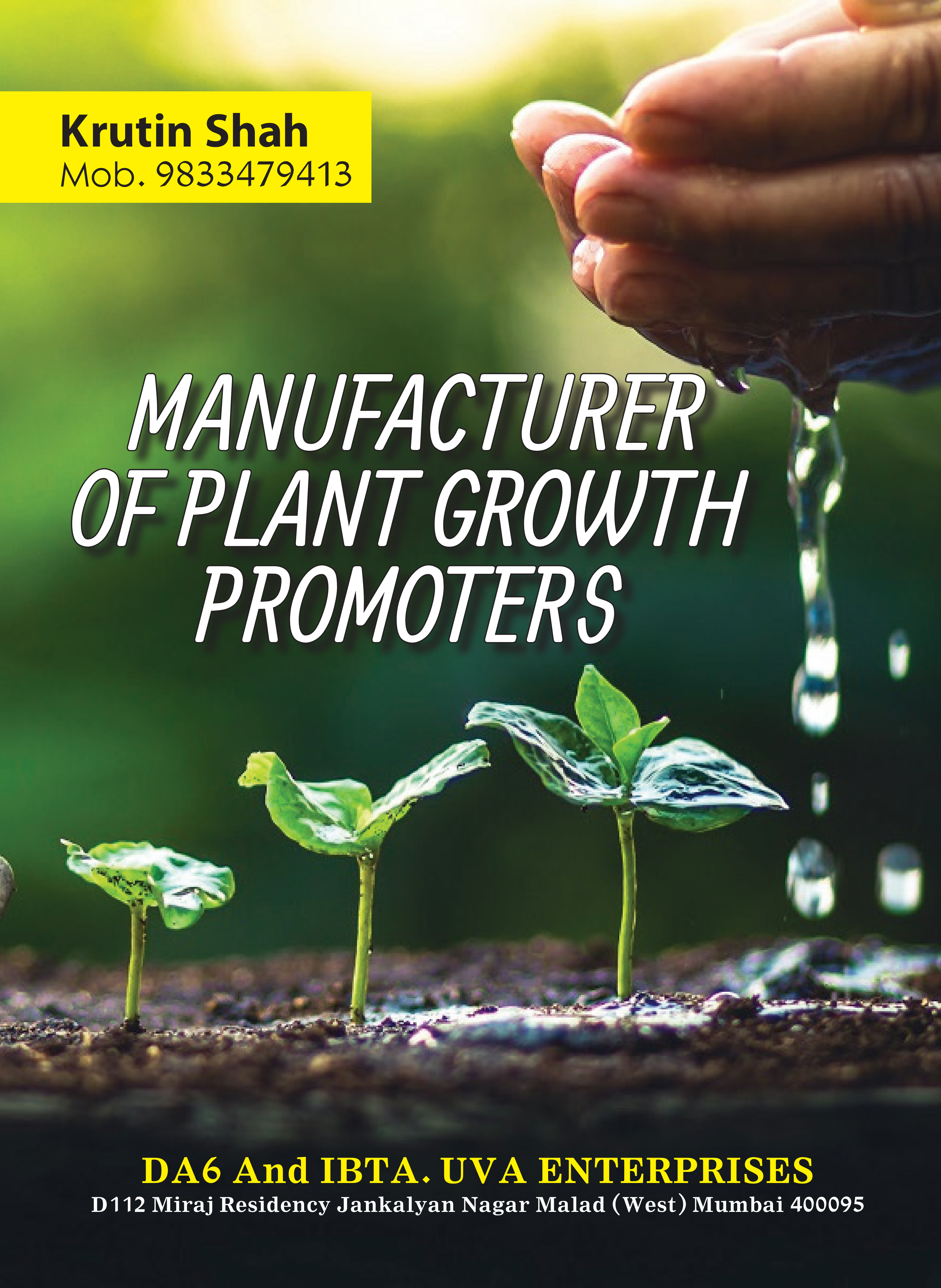
Krutin Shah
Mob. 9833479413
MANUFACTURER
OF PLANT GROWTH
PROMOTERS
DA6 And IBTA. UVA ENTERPRISES
D112 Miraj Residency Jankalyan Nagar Malad (West) Mumbai 400095

मुंबई का हरियाली तीज समारोह बना आकर्षण का केंद्र

150 से अधिक महिलाओं ने बिखेरे प्रतिभा के रंग 'मिसेज तीज-2026' का ताज अनन्या शर्मा के नाम, नृत्य में उमा और गायन में जूही ने मारी बाजी

मुंबई। सावन की हरियाली, पारंपरिक परिधानों की खूबसूरती और महिलाओं के उत्साह से पश्चिम भारत सनाढ्य गौड़ सभा, मुंबई का हरियाली तीज समारोह यादगार बन गया।

सभा की ओर से आयोजित 'मिसेज तीज प्रतियोगिता-2026' में 150 से अधिक महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास का शानदार प्रदर्शन किया। संगीत, नृत्य, अभिनय और पारंपरिक साज-सज्जा ने पूरे समारोह को आकर्षक बना दिया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री शान्ति प्रेम शुक्ला जी, धर्मपत्नी श्री प्रेम शुक्ला जी, राष्ट्रीय प्रवक्ता, भाजपा रहीं। विशेष अतिथि रश्मि दवे जी, सब-एडिटर, स्टार रिपोर्ट मैगजीन, ने भी समारोह में उपस्थित होकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। वहीं 75 वर्ष से अधिक आयु की श्रीमती शकुंतला राजेंद्र शर्मा जी की ऊर्जा और उत्साह ने सभी का विशेष ध्यान आकर्षित किया।

'मिसेज तीज-2026' प्रतियोगिता में अनन्या शर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विजेता का खिताब अपने नाम किया। रेनू शर्मा द्वितीय और उमा शर्मा तृतीय स्थान पर रहीं। वंदना शर्मा को अर्ली बर्ड पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतिभागियों ने पारंपरिक परिधान, साज-सज्जा, व्यक्तित्व और आत्मविश्वास के साथ मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

समारोह में आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में उमा शर्मा ने प्रथम, शीतल ने द्वितीय और रेखा शर्मा ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। गायन प्रतियोगिता में जूही प्रथम तथा रेखा शर्मा द्वितीय रहीं। 'घर-घर की बातें' नामक लघु नाटिका की प्रस्तुति ने भी दर्शकों को खूब गुदगुदाया और सामाजिक संदेश दिया।

कार्यक्रम में आयोजित लक्की ड्रॉ में नेहा शर्मा और राधा शर्मा विजेता रहीं। समारोह की सफलता में श्रीमती कुसुम शर्मा, सुश्री सुरेखा शर्मा, महिला प्रकोष्ठ की सभी सदस्यों एवं समस्त आयोजक मंडल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। पश्चिम भारत सनाढ्य गौड़ सभा की ओर से सभी अतिथियों, प्रतिभागियों, विजेताओं और सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। समारोह ने एक बार फिर साबित किया कि जब समाज की महिलाएं अपनी संस्कृति, परंपरा और प्रतिभा के साथ एकजुट होती हैं, तो उत्सव केवल आयोजन नहीं रहता, बल्कि समाज को जोड़ने वाला उत्सव बन जाता है।

अनिल गलगली:
संघर्ष, पत्रकारिता और जनहित की आवाज़ का सफर

14 सितंबर 1975 को जन्मे अनिल गलगली के जीवन के 50 वर्ष केवल उम्र का एक पड़ाव नहीं, बल्कि संघर्ष, सामाजिक सरोकार, पत्रकारिता, जनजागरण और व्यवस्था से सवाल पूछने की निरंतर यात्रा हैं। पांच दशकों के इस सफर में उन्होंने अपने लिए केवल एक पहचान बनाने का प्रयास नहीं किया, बल्कि आम नागरिकों की समस्याओं को अपनी आवाज बनाने का रास्ता चुना। मुंबई की सामाजिक और प्रशासनिक परिस्थितियों को करीब से देखते हुए अनिल गलगली के मन में शुरू से ही यह सवाल रहा कि आम आदमी अपनी समस्याओं के लिए आखिर किसके पास जाए और जब व्यवस्था जवाब न दे तो उससे सवाल कौन पूछे। यही सवाल आगे चलकर उनके सार्वजनिक जीवन की दिशा बना।

अनिल गलगली ने मुंबई विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र विषय में कला स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा के दौरान ही समाज, अर्थव्यवस्था और प्रशासन के बीच के संबंधों को समझने की उनकी रुचि विकसित हुई। आगे चलकर पत्रकारिता उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी। उनके लिए पत्रकारिता केवल समाचार लिखने का माध्यम नहीं रही, बल्कि समाज की आवाज को सामने लाने का एक प्रभावी साधन बनी।

वे 'अग्निशिला' हिंदी मासिक के संपादक एवं प्रकाशक के रूप में 22 साल से सामाजिक और जनहित के विषयों को सामने रखते रहे हैं। उनके लेखन और पत्रकारिता में आम नागरिक, प्रशासनिक जवाबदेही, सार्वजनिक धन और पारदर्शिता जैसे विषय लगातार प्रमुख रहे हैं।

अनिल गलगली के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण अध्याय सूचना के अधिकार अधिनियम, 2005 से जुड़ा है। RTI को उन्होंने केवल सरकारी जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे आम नागरिक के हाथ में आया एक लोकतांत्रिक अधिकार माना। सरकारी विभागों से जानकारी मांगना, दस्तावेज प्राप्त करना, उनके आधार पर सवाल उठाना और जरूरत पड़ने पर लगातार उसका अनुसरण करना उनके सार्वजनिक जीवन की पहचान बन गया।

मुंबई महानगरपालिका, एमएमआरडीए, म्हाडा, झोपड़पट्टी पुनर्वसन प्राधिकरण, मेट्रो परियोजनाओं और मुंबई की विभिन्न नागरिक सुविधाओं से जुड़े अनेक विषयों पर उन्होंने सवाल उठाए हैं। सार्वजनिक धन का उपयोग, प्रशासनिक निर्णयों में पारदर्शिता, नागरिक सुविधाएं, विकास परियोजनाएं और आम लोगों के अधिकार जैसे मुद्दे उनके कार्य के केंद्र में रहे हैं।

उनकी कार्यशैली की एक विशेषता यह रही है कि वे केवल आरोप लगाने के बजाय दस्तावेज और तथ्यों के आधार पर सवाल उठाने पर जोर देते हैं। उनका मानना है कि किसी भी व्यवस्था को जवाबदेह बनाने के लिए जानकारी सबसे प्रभावी माध्यम है। यही कारण है कि उनके लिए RTI एक कागजी प्रक्रिया नहीं, बल्कि लोकतंत्र को मजबूत करने का साधन है।

अनिल गलगली के व्यक्तित्व को समझने के लिए केवल उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों को देखना पर्याप्त नहीं है। उनके जीवन में लेखन, अध्ययन, सामाजिक संवाद और लोगों की समस्याओं को समझने की निरंतर रुचि भी दिखाई देती है। वे मानते हैं कि किसी समस्या पर बोलने से पहले उसके तथ्यों को समझना जरूरी है। शायद यही कारण है कि दस्तावेजों और सरकारी रिकॉर्ड के अध्ययन को उन्होंने अपने सामाजिक कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया।

पांच दशकों के इस सफर में उन्हें समर्थन भी मिला और आलोचना भी। सार्वजनिक जीवन में सक्रिय व्यक्ति के लिए यह स्वाभाविक है। जब कोई व्यक्ति व्यवस्था से सवाल करता है तो उसके सामने अनेक प्रकार की चुनौतियां आती हैं। कभी जवाब नहीं मिलता, कभी जानकारी अधूरी होती है, कभी प्रक्रिया लंबी होती है और कभी सवाल ही असुविधाजनक बन जाता है। लेकिन अनिल गलगली की यात्रा की खासियत यही है कि उन्होंने कठिनाइयों को अपने प्रयासों का अंत नहीं बनने दिया।

उनके लिए किसी व्यक्ति का विरोध करना लक्ष्य नहीं रहा। उनका जोर व्यवस्था को जवाबदेह बनाने पर रहा है। जहां उन्हें प्रशासन का अच्छा निर्णय दिखाई देता है, वहां वे उसका स्वागत करते हैं और जहां उन्हें पारदर्शिता या जवाबदेही की कमी दिखाई देती है, वहां सवाल उठाते हैं। यही दृष्टिकोण उनके सार्वजनिक जीवन को अलग पहचान देता है।

अनिल गलगली की सबसे बड़ी ताकत शायद उनका यह विश्वास है कि एक सामान्य नागरिक भी व्यवस्था से सवाल पूछ सकता है। उनके अनुसार लोकतंत्र केवल मतदान करने का अधिकार नहीं है। लोकतंत्र में नागरिक को यह जानने का भी अधिकार है कि उसके नाम पर लिए गए निर्णय कैसे लिए जा रहे हैं और जनता के पैसे का इस्तेमाल किस प्रकार किया जा रहा है।

जिस व्यक्ति के सर पर गुरु का हाथ हो उसकी किस्मत का हर पन्ना इतिहास बन जाता है

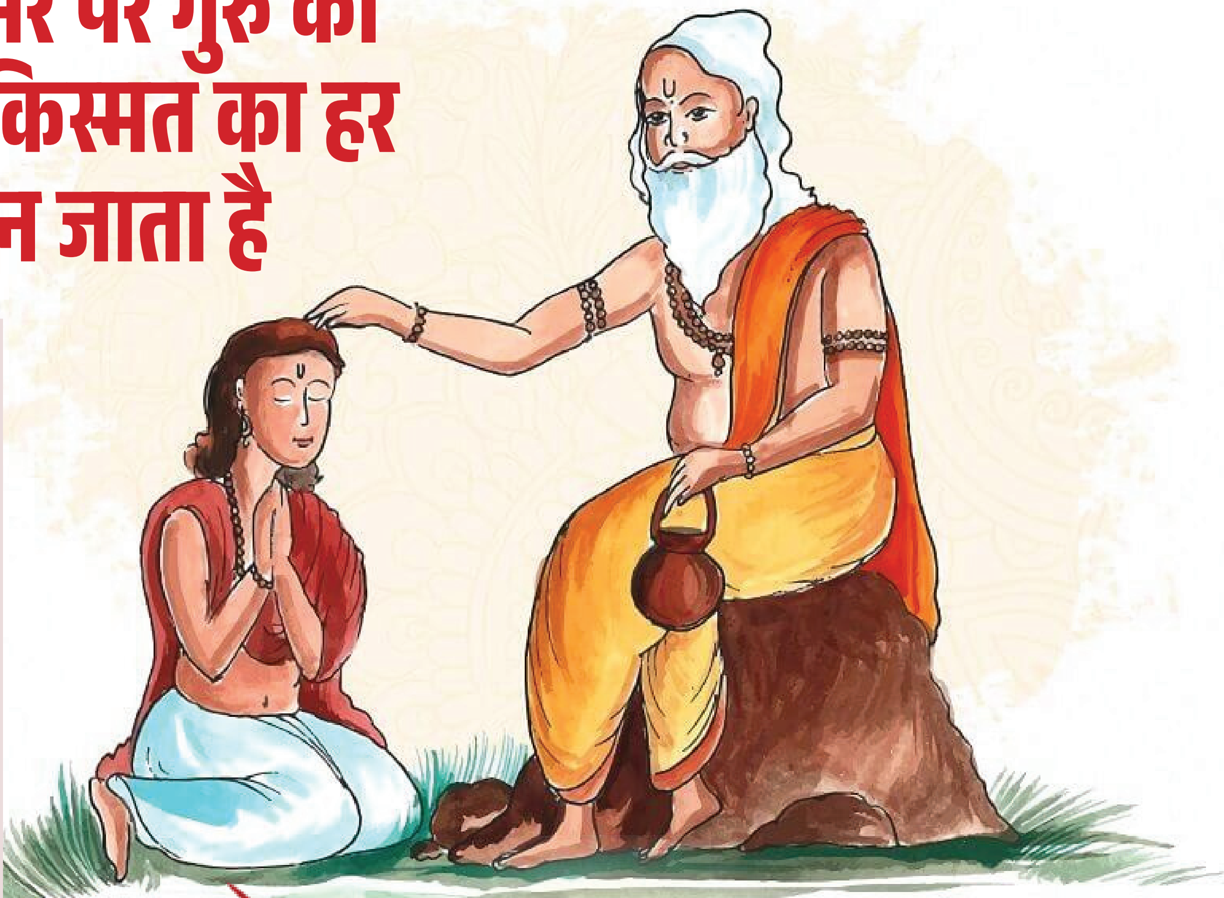

स्टार रिपोर्ट मेगेज़िन के प्रधान संपादक और अपने जीवन में परम आदरणीय माता पिता को प्रथम गुरु का सम्मान देते हुए उन्होंने बहुत ही सटीक बात कही है की अनंत उपकारी माँ और पिताजी से बड़े कोई गुरु नहीं है। आज अलग अलग गुरुओं के साथ अनेक इमेज़ अलग अलग-अलग महानुभावों की मिलेगी। हार्दिक भाई ने कहा कि यह इमेज़ आज के दिन रखने वालो से मेरा सवाल है की खुद गुरु की कीतनी आज्ञा का पालन करते हो? वो खुद सोचे। गुरु दुःखी हो ऐसा कोई कार्य ना करें वहीं गुरु का परम भक्त हैं।

गुरु की शिक्षा जीवन की दिशा बदल देती है तथा हमारे दोषों को खत्म करके जीवन को उन्नति की ओर मोड़ देती है। इस पुनीत पर्व पर हमें अपने गुरुजन का आशीर्वाद लेना चाहिए तथा उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लेना चाहिए। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरूर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरु पूर्णिमा अपने गुरुओं के प्रति आदर, श्रद्धा और कृतज्ञता प्रकट करने का एक पवित्र त्योहार है। यह आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। गुरु पूर्णिमा का अर्थ और महत्वशब्द का अर्थः 'गु' का अर्थ अंधकार (अज्ञान) और 'रु' का अर्थ उसे मिटाने वाला होता है।

जो अज्ञान का अंधकार मिटाकर ज्ञान का प्रकाश दे, वह गुरु है। वेद व्यास जी का जन्म इस दिन महान ऋषि महर्षि वेद व्यास का जन्म हुआ था। उन्होंने चारों वेदों का विभाजन किया और महाभारत व पुराणों की रचना की।सम्मान का दिनः यह पर्व अध्यात्मिक गुरुओं, शिक्षकों और माता-पिता को समर्पित है जो हमें सही जीवन मार्ग दिखाते हैं। गुरुपूर्णिमा गुरु, ईश्वर के सगुण रूप होते हैं ! ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर है, गुरुपूर्णिमा । क्योंकि, इस दिन गुरुतत्त्व नित्य की तुलना में सहस्त्र गुना सक्रिय रहता है । इसलिए, इस दिन की हुई सेवा और त्याग का फल सहस्त्र गुना मिलता है ।

गुरु का महत्व - मैने एक आदमी से पूछा कि गुरू कौन है! वो सेब खा रहा था,उसने एक सेब मेरे हाथ मैं देकर मुझसे पूछा इसमें कितने बीज हें बता सकते हो? सेब काटकर मैंने गिनकर कहा तीन बीज हैं! उसने एक बीज अपने हाथ में लिया और फिर पूछा इस बीज में कितने सेब हैं यह भी सोचकर बताओ? मैं सोचने लगा एक बीज से एक पेड़, एक पेड़ से अनेक सेव अनेक सेबो में फिर तीन तीन बीज हर बीज से फिर एक एक पेड़ और यह अनवरत क्रम!

वो मुस्कुराते हुए बोले : बस इसी तरह गुरु की कृपा हमें प्राप्त होती रहती है! बस हमें उसकी भक्ति का एक बीज अपने मन में लगा लेने की ज़रूरत है! गुरू एक तेज हे जिनके आते ही, सारे सन्शय के अंधकार खतम हो जाते हैं! गुरू वो मृदंग है जिसके बजते ही अनाहद नाद सुनने शुरू हो जाते है! गुरू वो ज्ञान हैं जिसके मिलते ही भय समाप्त हो जाता है । गुरू वो दीक्षा है जो सही मायने में मिलती है तो भवसागर पार हो जाते है! गुरू वो नदी है जो निरंतर हमारे प्राण से बहती हैं! गुरू वो सत चित आनंद है जो हमें हमारी पहचान देता है! गुरू वो बांसुरी है जिसके बजते ही मन और शरीर आनंद अनुभव करता है!

गुरू वो अमृत है जिसे पीकर कोई कभी प्यासा नही रहता है! गुरू वो कृपा ही है जो सिर्फ कुछ सद शिष्यों को विशेष रूप मे मिलती है और कुछ पाकर भी समझ नही पाते हैं! गुरू वो खजाना है जो अनमोल है! गुरू वो प्रसाद है जिसके भाग्य मे हो उसे कभी कुछ भी मांगने की ज़रूरत नही पड़ती हैं। सभी गुरुजनों को कोटि कोटि नमन!

पत्रकारिता में सफलता की जिद्द सपनों को साकार करने की जीत

वरिष्ठ पत्रकार इन्द्रजीत

कुछ पाने की, कुछ कर दिखाने की ज़िद जिसे सरल भाषा में कहेंगे तो एक वो सपना जिसे सफल करने के लिए रात दिन एक करके उस सपने के पीछे भागकर हासिल करना। जीत उसीकी होती है जिसने अपने सपने को साकार करने के लिए पुरुषार्थ कीया हो और सफलता के शिखर को छु कर के अपनी जीत दर्ज करवाई हो। पत्रकारिता के क्षेत्र में वरिष्ठ पत्रकार इन्दजीत सिंह अपनी महेनत और लगन से सफलता का मुकाम हासिल किया है।

उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर ज़िले की जखनियां तहसील के छोटे से गाँव कोठियाँ में 5 मार्च 1974 को जन्मे इंद्रजीत सिंह की कहानी मेहनत, जिज्ञासा और दृढ़ संकल्प की प्रेरणादायक मिसाल है। उनके पिता राम नगीना सिंह एक सम्मानित किसान थे। परिवार खेती-किसानी से समृद्ध था। बचपन में परिवार के पास दो जीप और खेती के लिए ट्रैक्टर था, जो उस दौर में ग्रामीण समृद्धि का प्रतीक माना जाता था। सिंह परिवार क्षेत्र के प्रतिष्ठित कृषक परिवारों में गिना जाता था।

इंद्रजीत सिंह का बचपन एक संयुक्त परिवार में बीता। परिवार के सबसे बड़े बेटे होने के कारण उन्हें दादा-दादी और दोनों चाचाओं का भरपूर स्नेह और मार्गदर्शन मिला। यही पारिवारिक संस्कार आगे चलकर उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी ताकत बने। पढ़ाई में वे औसत छात्र रहे, लेकिन ज्ञान अर्जित करने की उनकी ललक हमेशा असाधारण रही। इसी जिज्ञासा ने उन्हें एम.एससी. तक की पढ़ाई पूरी करने के लिए प्रेरित किया। पढ़ाई के बाद वे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे थे, तभी किस्मत उन्हें मुंबई ले आई—एक ऐसा शहर जिसने उनकी ज़िंदगी की दिशा ही बदल दी। मुंबई में एक दिन वे अपने एक मित्र के साथ एक न्यूज़ चैनल गए। संयोग से उस मित्र की उसी दिन फील्ड ड्यूटी लग गई और इंद्रजीत भी उसके साथ कार्यक्रम कवर करने निकल पड़े। वहाँ उन्होंने पहली बार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की दुनिया को बेहद करीब से देखा। एक ट्रेनी रिपोर्टर के साथ होने के बावजूद उन्हें देश के बड़े नेताओं के साथ पहली पंक्ति में बैठने का अवसर मिला। पत्रकारों को मिल रहे सम्मान और उनके प्रभाव ने इंद्रजीत सिंह के मन में एक नया सपना जगा दिया। उसी दिन उन्होंने तय कर लिया कि उनका भविष्य पत्रकारिता में ही होगा। परिवार ने भी उनके इस फैसले का पूरा समर्थन किया।

पत्रकारिता का सफर हिंदुजा समूह के इन टाइम न्यूज़ से शुरू हुआ। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अपने करियर में उन्होंने टीवी9, इंडिया न्यूज़, एनडीटीवी सहित कई प्रतिष्ठित समाचार संस्थानों में अपनी सेवाएँ दीं। इस सफर में अनेक चुनौतियाँ और उतार-चढ़ाव आए, लेकिन उनकी मेहनत, ईमानदारी और पेशेवर प्रतिबद्धता ने उन्हें हमेशा आगे बढ़ाया। चाहे मुंबई हो या दिल्ली, उन्होंने अपनी योग्यता के दम पर पत्रकारिता की दुनिया में लगातार अपनी पहचान बनाई।

पिछले 12 वर्षों से वे न्यूज़24 से जुड़े हैं और वर्तमान में महाराष्ट्र के ब्यूरो चीफ के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा रहे हैं। पत्रकारिता में उनकी सबसे बड़ी रुचि इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिज्म है। सत्ता से सवाल पूछना, भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना और जनहित से जुड़े मुद्दों को सामने लाना उनकी पेशेवर पहचान है। उनकी कई खोजी रिपोर्टों ने व्यापक चर्चा बटोरी और समाज पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ा।

गाँव की मिट्टी से निकला एक साधारण किसान परिवार का बेटा आज भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में एक सशक्त और भरोसेमंद पत्रकार के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुका है। इंद्रजीत सिंह की यात्रा इस बात का प्रमाण है कि यदि सपनों के साथ मेहनत, ईमानदारी और सीखने की भूख हो, तो कोई भी मंज़िल दूर नहीं रहती।

सफ़ीन हसन को सफल बनाने के लिए माता ने हीरे घीसे रोटी बनाई और बेटे को आईपीएस बनाया

माँ अपने बच्चों के लिए क्या नहीं करती ! वो ठान लें तो कंहा हार मानती है माँ ..... !

प्रेरणादायक संघर्षः

सफ़ीन एक बेहद साधारण परिवार से आते हैं। उनकी माता ने उनकी पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए हीरे की फैक्ट्रियों में काम किया, शादियों में रोटियां बनाई और घरों में खाना तक पकाया। मेन्स परीक्षा के दौरान उनका एक्सीडेंट भी हो गया था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और परीक्षा दी। सबसे कम उम्र के IPS ऑफिसर सफीन हसन के बारे में मिली जानकारी अनुसार सफीन हसन ने वर्ष 2018 की यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा (UPSC CSE Exam) में 570वीं रैंक हासिल की थी। यह उनका पहला प्रयास था। तब वह सिर्फ 22 के थे।

सफीऩ जब कॉलेज में गए तो उनके इंग्लिश बोलने के लहजे का मज़ाक उड़ता था। लेकिन उन्होंने इंग्लिश बोलना जारी रखा। उन्होंने अपना यूपीएससी का इंटरव्यू इंग्लिश में दिया। पूरे देश में उनके सेकेंड हाईएस्ट मार्क्स आए थे। उनका कहना है कि यूपीएससी आपकी सिर्फ नॉलेज चेक नहीं करता। उन्होंने बताया कि 'यूपीएससी मेन्स के दिन सुबह 8 बजे मेरा एक्सीडेंट हो गया था। जीएसटी का पेपर था। एक हाथ घायल था। लेकिन राइड हैंड सेफ था। लेकिन मैंने परीक्षा लिखने का फैसला किया। 23 मार्च को मेरा इंटरव्यू था। 20 फरवरी को बॉडी में इंफेक्शन होने की वजह से अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। काफी तेज फीवर था। 1 मार्च को ठीक हो गया।

2 मार्च को दिल्ली आया, 3 मार्च को फिर से टांसिलएटाइस का अटैक हुआ। फिर अहमदाबाद में अस्पताल में भर्ती हुआ। 15 मार्च को अस्पताल से छुट्टी मिली। फिर 16 मार्च को दिल्ली वापस आया। मेरे साथी एक माह से इंटरव्यू की तैयारी कर रहे थे। लेकिन मेरे अंदर पूरा कॉन्फिडेंस था। मैंने इसे एक खुद को प्रूव करने के मौके के तौर पर लिया।'

'चाणाक्य का कहना है कि जो लोग दूसरों के अनुभव से सीखते हैं, वो लोग जल्दी आगे बढ़ते हैं क्योंकि खुद से अनुभव लेकर सब कुछ सीखने के लिए जिंदगी काफी छोटी है। इसलिए मैंने कॉलेज के दिनों में टॉपरों के काफी इंटरव्यू और ब्लॉग पढ़े। मैंने जाना कि उन्होंने कौन सी गलतियां की थीं और मुझे वो नहीं करनीं।' करेंट अफेयर्स की तैयारी को लेकर सफीन ने कहा, 'यूपीएससी अभ्यर्थी अखबार से करेंट अफेयर्स के नोट्स बनाते हैं लेकिन मैंने कभी नहीं बनाए। मेरा मानना है कि हम कोचिंग इंस्टीट्यूट की इतनी मोटी फीस देते हैं, वो लोग हमें काफी अच्छी मंथली मैगजीन उपलब्ध कराते हैं, हम वो ही पढ़ लें, काफी होती है। जब वो लोग हमारे लिए इतनी मेहनत से नोट्स बना रहे हैं, तो फिर मैं खुद से नोट्स बनाकर समय बर्बाद क्यों करूं।'

उन्होंने आगे बताया कि IAS ज्वॉइन करना चाहते थे। उन्होंने फिर से सिविल सेवा परीक्षा भी दी। लेकिन वह परीक्षा पास नहीं कर सके। फिर उन्होंने आईपीएस अफसर के तौर पर ही देश सेवा करने का फैसला किया।

“ सबसे कम उम्र में बेटे को IPS बनाना एक माता की मेहनत और विश्वास से यह संभव हुआ है। जी हाँ, सफ़ीन हसन भारत के सबसे कम उम्र में आईपीएस (IPS) अधिकारी बनने वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने महज 22 साल की उम्र में यह ऐतिहासिक सफलता हासिल की थी। सफ़ीन ने साल 2017 की यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा अपने पहले ही प्रयास में पास की थी। उन्होंने इस परीक्षा में ऑल इंडिया 570वीं रैंक हांसिल की और भारतीय पुलिस सेवा (IPS) के लिए चुने गए।उनका जन्म 21 जुलाई 1995 को गुजरात के पालनपुर (कनोदर गांव) में हुआ था और उन्हें गुजरात कैडर ही आवंटित किया गया।

भारत की प्रसिद्ध कलमकारी कला!

भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी ने ओबामा को भेंट किया कच्छ की रोगन आर्ट कला का पेन्टींग

रोगन शिल्प: 300 साल पुरानी भारतीय कला

संस्कृति और धर्म का संगम होने के कारण, भारत अनेक पारंपरिक कला रूपों का घर है। ऐसी ही एक कला है 300 साल पुरानी रोगन कला। यह कला हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हुई, जिन्होंने 2014 में व्हाइट हाउस की अपनी यात्रा के दौरान तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को जटिल पैटर्न वाली 'जीवन वृक्ष' रोगन पेंटिंग भेंट की थी। व्हाइट हाउस की दीवारों पर सजी यह मनमोहक भारतीय कला विश्व भर में पहचानी जाती है और अब हमारे देश का गौरव है।

फारसी में रोगन कला का अर्थ 'तेल आधारित' होता है, और इसमें इस्तेमाल होने वाला रंग स्थानीय रूप से उगाए गए अरंडी के तेल से बनाया जाता है। लगभग 300 साल पहले फारस में इसकी उत्पत्ति हुई थी, और इस कला का उपयोग पारंपरिक रूप से क्षेत्रीय जनजातियों के विवाह वस्त्रों को सजाने के लिए किया जाता था। लेकिन जैसे-जैसे यह कला एक के बाद एक सीमाओं को पार करती गई, यह धीरे-धीरे अपने रचनाकारों की सामूहिक स्मृति से लुप्त होने लगी। लेकिन गुजरात के कच्छ जिले के सुदूर गांव नीरोना में रहने वाला एक अकेला मुस्लिम परिवार, खत्री, इस सदियों पुरानी कला का अंतिम जीवित संरक्षक है।

बिना किसी ट्रेसिंग या ड्राइंग के बनाई गई, रोगन कला पूरी तरह से एक कलाकार की अपनी कल्पना है जो कपड़े के एक टुकड़े पर उकेरी जाती है, और अक्सर इसके लिए बहुत अधिक रचनात्मकता और धैर्य की आवश्यकता होती है। "ये डिज़ाइन पहले से तय नहीं होते। ये बस हमारे भीतर से निकलते हैं और इसीलिए कोई भी रोगन कला की नकल नहीं कर पाता।"

अरंडी के तेल से आधार तैयार करना एक लंबी और जटिल प्रक्रिया है, जिसमें आमतौर पर दो-तीन दिन लगते हैं। सबसे पहले, तेल को एक विशेष बर्तन में गर्म किया जाता है और 12 घंटे से अधिक समय तक लगातार हिलाया जाता है ताकि वह जले नहीं। दो दिन बाद, बचे हुए मिश्रण को ठंडे पानी में मिलाया जाता है, जो धीरे-धीरे गाढ़ा होकर रोगन नामक एक चिपचिपा पेस्ट बन जाता है। अंत में, कलाकार की पसंद के अनुसार प्राकृतिक रंगद्रव्य (पत्थरों या पौधों से बने) को तेल के आधार में मिलाया जाता है, जिससे एक गाढ़ा रंग बनता है, जिसे बाद में मिट्टी के बर्तनों में संग्रहित किया जाता है। इससे रंग नम और लचीला बना रहता है।

कलाकार ज़मीन पर बैठते हैं और जिस कपड़े पर वे काम करने वाले होते हैं, उसके दोनों सिरों को अपने मेज़ के फ्रेम पर पिन से लगा लेते हैं। फिर, अपनी हथेलियों पर थोड़ी मात्रा में गाढ़ा चिपचिपा रंग लगाकर, वे बड़ी-बड़ी कुंद सुइयों या छड़ियों का उपयोग करके जटिल आकृतियाँ बनाते हैं।

कपड़े के नीचे रखा उनका दूसरा हाथ रंग को फैलाने और आकृतियों को आकार देने में मदद करता है ज्यामितीय फूल, मोर, पक्षी, जीवन वृक्ष आदि, जो मुख्य रूप से कच्छ क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति के साथ-साथ प्रकृति से प्रेरित होते हैं। क्योंकि डिज़ाइन ज़्यादातर कपड़े के एक किनारे पर बनाए जाते हैं, इसलिए एक बार पैटर्न पूरा हो जाने पर कपड़े को बीच से मोड़कर दूसरी तरफ़ हूबहू उसकी छवि बनाई जाती है।

बाद में, कपड़े पर बनी हर आउटलाइन पर बारीक कारीगरी की जाती है। इन बारीक और जटिल डिज़ाइनों को पूरा करने में 10 दिन से लेकर एक महीने से ज़्यादा और कभी-कभी एक साल तक का समय लग जाता है। इस चित्रकला तकनीक की एक असाधारण विशेषता यह है कि रंग को सावधानीपूर्वक घुमाकर आकृतियाँ बनाने की पूरी प्रक्रिया के दौरान कलम कपड़े के संपर्क में कभी नहीं आती। इसलिए, यह तकनीक उन कलाकारों द्वारा ही की जाती है जो कपड़े पर आकृतियाँ उकेरने में निपुण होते हैं।

सूखने के बाद, रोगन पेंटेड कपड़े का उपयोग रजाई के कवर, साड़ियों, सजावटी दीवार पर टांगने वाली वस्तुओं, स्टोल, कुशन कवर, मेज़पोश और अन्य उपयोगी वस्तुओं जैसे स्लिंग और शॉपिंग बैग, मोबाइल कवर और यहां तक कि फाइल फोल्डर बनाने के लिए किया जाता है। खत्री समुदाय ने तीन शताब्दियों से अधिक समय से इस प्राचीन कला रूप को दृढ़ता से कायम रखा है, जिससे नीरोना का शांत गांव रोगन कला रूप को संरक्षित रखने वाला एकमात्र केंद्र बन गया है। आठ पीढ़ियों से इस कला का अभ्यास करते आ रहे इस परिवार ने अपनी 300 साल पुरानी विरासत को इतिहास के पन्नों में खो जाने से बचाने के लिए अथक प्रयास किया है।

खत्री परिवार के मुखिया अब्दुल गफूर खत्री ने महज 13 वर्ष की आयु में ही इस भारतीय कला में महारत हासिल कर ली थी। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके सभी बेटे, भाई और रिश्तेदार इस कला को इसके मूल रूप में सीखें। गफूर भाई, जिन्हें लोग इसी नाम से जानते हैं, ने लोक कला रोगन को समकालीन आवश्यकताओं और मांगों के अनुरूप ढालने और उसे लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रोगन की पुरानी शान को बरकरार रखने में योगदान देते हुए, उन्होंने 1988 में गुजरात सरकार से राज्य पुरस्कार और 1997 में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। हाल ही में 2019 में, उन्हें भारत सरकार द्वारा चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, पद्म श्री से भी सम्मानित किया गया।

भारत एक खोज यह वाक्य वास्तव में भारत की विशाल बेमिसाल, अद्भुत अकल्पनीय कला , संस्कृति और साधना से रुबरु करवाता है। हमारा भारत देश समृद्ध देश है। कला, साहित्य, विज्ञान के क्षेत्र में सर्वाधिक आगे है। सदियों पुरानी कला भारत देश के छोटे छोटे कस्बों में, गांव में जीवीत है, प्रसिद्ध है। स्टार रिपोर्ट मेगेज़िन में रोगन आर्ट कला के बारे में यह लेख प्रकाशित हो रहा है तब इस कला की प्रसिद्ध के बारे में बहुत गौरवशाली पल का भी जिक्र करना जरूरी है। अमेरिकन के तत्कालीन प्रेसिडेंट श्री ओबामा से भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने जब भेंट की तब उन्होंने श्री ओबामा को यह पारंपरिक रोगन आर्ट कला से बनी पेन्टींग भेंट की थी। यह इस कला कोई जीवंत रखने वाले कलाकारों के लिए बहुत बहुत गौरवशाली पल है।

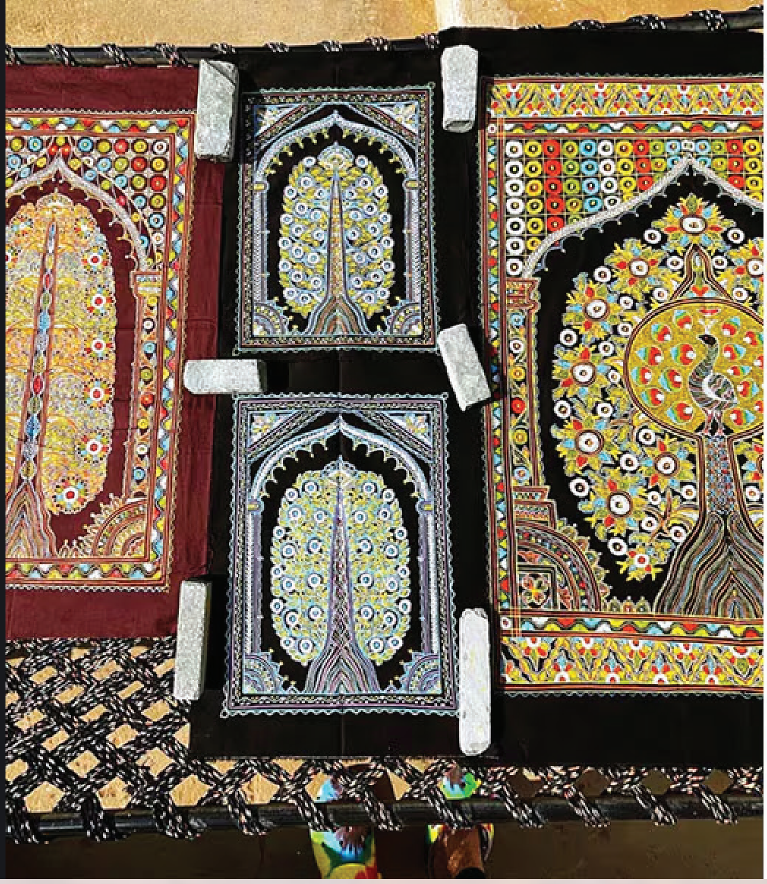

उनके पास एक ऐसी विजिटर बुक भी है जो जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, स्पेन और ऑस्ट्रेलिया सहित दुनिया भर के लोगों की प्रभावशाली प्रशंसाओं से भरी हुई है।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यह एक सपना सच होने जैसा है।" गफूरभाई खत्री ने 2019 में पद्म श्री पुरस्कार जीतने पर यह बात कही। उनके परिवार के सदस्यों ने भी अनेक पुरस्कार (18 राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कार) जीते हैं और विश्व भर से उन्हें पहचान मिली है। नरेंद्र मोदी, राहुल गांधी से लेकर शशि थरूर तक, और अमिताभ बच्चन, आशा पारेख, वहीदा रहमान, शबाना आज़मी जैसे कई दिग्गज अभिनेता और फिल्म निर्माता, सभी निरोना गांव में आकर उनकी अद्भुत कलाकृतियों को देख चुके हैं और परिवार से मिल चुके हैं। वे सभी का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं, खरीदारों को अपनी कलाकृतियां दिखाते हैं और अपनी कला में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीकों के बारे में भी बताते हैं।

इस प्राचीन भारतीय कला को और अधिक लोकप्रिय बनाने के प्रयास में, परिवार अपने घर पर ही हर आगंतुक के लिए लाइव प्रदर्शन भी आयोजित करता है। 30 मिनट के प्रदर्शन में, कलाकार धैर्यपूर्वक प्रश्नों के उत्तर देते हैं और रोगन पेंटिंग बनाने की पूरी प्रक्रिया समझाते हैं रंग बनाने से लेकर कपड़े पर सटीक रूप से लगाने तक। औसतन, परिवार को प्रतिदिन 150 आगंतुक मिलते हैं। हालांकि, रण उत्सव और कच्छ रेगिस्तान उत्सव के दौरान यह संख्या बढ़कर 250 या 300 हो जाती है।

पहले यह कला केवल खत्री परिवार के पुरुष सदस्यों तक ही सीमित थी, लेकिन अब उन्होंने इस दुर्लभ कला को महिलाओं और युवतियों सहित अन्य शिल्पकारों को भी सिखाना शुरू कर दिया है। वे नियमित रूप से कार्यशालाएँ आयोजित करते हैं और 200 से अधिक महिलाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण दे चुके हैं, जिनमें से कुछ को उन्होंने कपड़ों पर बारीक कारीगरी के काम में लगा रखा है। गफूरभाई विभिन्न परिवारों के बच्चों को यह दुर्लभ भारतीय कला सिखाने के लिए एक स्कूल खोलने की प्रक्रिया में भी सक्रिय रूप से लगे हुए हैं।

खत्री परिवार के प्रयासों के फलस्वरूप, उनका गाँव अब कई युवा शोधकर्ताओं और फ़ैशन छात्रों का केंद्र बन गया है, जो उनके जीवन को दस्तावेज़ित करना चाहते हैं और उनकी अनूठी कला से प्रेरणा लेकर कपड़े बनाना चाहते हैं। रोगन कला के इतिहास पर एक कार्यक्रम लोकप्रिय टेलीविजन चैनल नेशनल ज्योग्राफिक पर भी प्रसारित किया गया था। इसके अलावा, हाल ही में इस कला को डिजिटल बाज़ार में भी जगह मिली है, जहाँ कई रोगन पेंटिंग विभिन्न ऑनलाइन आर्ट गैलरी में बिक्री के लिए उपलब्ध हैं ।

खत्री परिवार के लिए यह एक लंबा सफर रहा है - प्राचीन कला को पुनर्जीवित करने से लेकर जनहित जगाने और भुज भूकंप के भीषण झटके से उबरने तक। लेकिन आज उनके प्रयासों का अच्छा फल मिला है, कला के प्रति लोगों की रुचि फिर से जागृत हो गई है और यह न केवल देश भर में बल्कि विश्व स्तर पर लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही है।

कोई कड़ी प्रतिस्पर्धा नहीं

पारसी कढ़ाई, अजराख जैसी अन्य प्रकार की वस्त्र कलाओं के विपरीत, जिन्हें सस्ते कारखाने में बने उत्पादों और मशीनों के उपयोग के कारण काफी संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है, रोगन कला को ऐसी किसी प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना पड़ता है, लेकिन आधुनिक बाजार की मांग को पूरा करना काफी चुनौतीपूर्ण रहा है।

"रोगन की कलाकृतियाँ आपको बाज़ारों में अन्य कलाकृतियों की तरह आसानी से नहीं मिलेंगी। ऐसा इसलिए नहीं है कि हम इन्हें लोगों तक पहुँचाना नहीं चाहते, बल्कि इसलिए है क्योंकि हमारे पास सीमित संसाधन हैं। हम साल में देश भर में पाँच या छह प्रदर्शनियों में जाते हैं और बाकी समय घर पर रहकर काम करते हैं।" नई पीढ़ी द्वारा गहन परिश्रम से रची गई रोगन कला की विरासत को आगे बढ़ाने की अनिच्छा के कारण मानव संसाधन की भारी कमी हो गई है। यदि वे इस कला को सीखकर देश के विभिन्न हिस्सों में जाकर दूसरों को इसकी तकनीक सिखाते, तो रोगन कला की समृद्धि और जागरूकता का व्यापक प्रसार होता। इस कला को प्रभावित करने वाला एक अन्य कारक शहरी आबादी की मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यक उत्पाद विविधता है।

इस प्राचीन भारतीय कला को देशभर में अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए, राज्य सरकार ने रोगन कला के कलाकारों को प्रोत्साहन देना शुरू कर दिया है। कई गैर सरकारी संगठन और स्टार्टअप भी कलाकारों को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप ढलने का प्रशिक्षण दे रहे हैं और उन्हें नए पैटर्न, रूपांकन, डिज़ाइन और यहां तक कि रंग संयोजन के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

इससे उन्हें ऐसे उत्पाद बनाने में मदद मिलेगी जो अलग तरह से आकर्षक हों, किफायती हों और व्यापक स्तर पर लोगों तक पहुंच सकें, जिससे उनके लिए एक बाजार तैयार हो सके। कच्छ के खत्री समुदाय के निरंतर और अथक प्रयासों के कारण, रोगन की यह शानदार कला समय के साथ लुप्त नहीं हुई, बल्कि नई ऊंचाइयों को छू रही है और वह पहचान हासिल कर रही है जिसकी वह हकदार है।

चार दशकों से अधिक की चिकित्सा यात्रा, शोध और कैंसर उपचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के उपचार में चिकित्सक की भूमिका केवल रोग का इलाज करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि मरीज के जीवन में उम्मीद, विश्वास और साहस जगाना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। चिकित्सा विज्ञान के इसी मानवीय और शोधपरक पक्ष को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर चार दशकों से अधिक समय से निरंतर सेवाएं देने वाले डॉ. नागराज हुइलगोल चिकित्सा जगत में एक प्रतिष्ठित नाम हैं।

कैंसर उपचार के क्षेत्र में समर्पण की मिसाल हैं डॉ. नागराज हुइलगोल

मुंबई स्थित नानावटी मैक्स सुपर स्पेशलिटी अस्पताल के कैंसर उपचार संस्थान में विकिरण कैंसर विज्ञान एवं विकिरण शल्य चिकित्सा के वरिष्ठ विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत डॉ. नागराज हुइलगोल ने कैंसर उपचार, अनुसंधान, चिकित्सा शिक्षा और नई उपचार पद्धतियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षा से विशेषज्ञता तक का सफर कर्नाटक के धारवाड़ में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने वाले डॉ. हुइलगोल ने वर्ष १९७५ में कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ से चिकित्सा स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने मुंबई के चिकित्सक एवं शल्य चिकित्सक महाविद्यालय से वर्ष १९७७ में स्त्री रोग एवं प्रसूति विज्ञान में डिप्लोमा प्राप्त किया। कैंसर उपचार के क्षेत्र में विशेषज्ञता हांसिल करने के उद्देश्य से उन्होंने नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में उच्च शिक्षा प्राप्त की और वर्ष १९८० में विकिरण कैंसर विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि हांसिल की। चिकित्सा शिक्षा के दौरान उनकी प्रतिभा को राष्ट्रीय योग्यता छात्रवृत्ति से भी सम्मानित किया गया।

अध्ययन के साथ-साथ शोध और चिकित्सा के प्रति उनकी गहरी रुचि ने आगे चलकर उन्हें कैंसर उपचार के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान दिलाई। टाटा स्मारक अस्पताल से नानावटी तक की यात्रा डॉ. नागराज हुइलगोल का चिकित्सा जीवन मुंबई के प्रतिष्ठित अस्पतालों से शुरू हुआ। उन्होंने बॉम्बे अस्पताल में चिकित्सक के रूप में सेवाएं दीं। इसके बाद नानावटी अस्पताल में शल्य चिकित्सा एवं कैंसर शल्य चिकित्सा तथा आकस्मिक चिकित्सा विभाग में भी कार्य किया।

वर्ष १९७७ में उन्होंने मुंबई के प्रतिष्ठित टाटा स्मारक अस्पताल के विकिरण कैंसर विज्ञान विभाग में चिकित्सक के रूप में कार्यभार संभाला। इसके बाद उन्होंने इसी विभाग में रजिस्ट्रार और वरिष्ठ रजिस्ट्रार के रूप में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष १९८१ में वे बेंगलुरु स्थित किदवई स्मारक कैंसर संस्थान में विकिरण चिकित्सा विभाग के सहायक प्राध्यापक के रूप में भी कार्यरत रहे। इसके पश्चात वे नानावटी अस्पताल से जुड़े और विकिरण कैंसर विज्ञान विभाग के प्रमुख के रूप में अपनी दीर्घकालिक यात्रा शुरू की। आज चार दशकों से अधिक के अनुभव के साथ वे कैंसर उपचार के क्षेत्र में अपने व्यापक ज्ञान और अनुभव के लिए जाने जाते हैं।

कैंसर अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान

डॉ. हुइलगोल ने अपना जीवन केवल मरीजों के उपचार तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने कैंसर के कारणों, उपचार की नई पद्धतियों और चिकित्सा विज्ञान के विकास के लिए लगातार अनुसंधान किया है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिकाओं में उनके लगभग एक सौ शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा उन्होंने कैंसर से संबंधित कई पुस्तकों के संपादन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे कैंसर अनुसंधान एवं संचार संस्था के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। उन्होंने कैंसर उपचार और अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी सक्रिय रूप से कार्य किया है। विकिरण चिकित्सा से संबंधित उपकरणों के अनुज्ञापन एवं नियमन के क्षेत्र में उन्होंने परमाणु ऊर्जा नियामक मंडल सहित विभिन्न सरकारी संस्थाओं के साथ भी अपनी विशेषज्ञ सेवाएं दी हैं।

अति ताप चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष योगदान

डॉ. नागराज हुइलगोल के कार्य का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र अतिताप चिकित्सा है। कैंसर के उपचार में शरीर के प्रभावित हिस्से के तापमान को नियंत्रित रूप से बढ़ाकर उपचार को अधिक प्रभावी बनाने की इस पद्धति पर उन्होंने लंबे समय से अनुसंधान किया है। वे भारतीय अतिताप कैंसर विज्ञान एवं चिकित्सा संघ के अध्यक्ष रह चुके हैं तथा भारतीय कैंसर विज्ञान संस्था में संयुक्त सचिव के रूप में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं। उन्होंने विशेष रूप से सिर एवं गर्दन के कैंसर तथा एचआईवी से संबंधित उपचार में अतिताप चिकित्सा की भूमिका का अध्ययन किया है। उनके इन अनुसंधान कार्यों को भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद का समर्थन भी प्राप्त रहा है। उनका चिकित्सकीय एवं प्रयोगशाला अनुसंधान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, पवई तथा भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के सहयोग से भी जुड़ा रहा है।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान

डॉ. हुइलगोल की विशेषज्ञता और शोध कार्यों को भारत के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा जगत में भी पहचान मिली है। वे अमेरिका की विकिरण उपचार एवं कैंसर विज्ञान से संबंधित प्रतिष्ठित संस्थाओं, विकिरण अनुसंधान संस्थाओं तथा यूरोप की अतिताप कैंसर विज्ञान से संबंधित संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। विज्ञान एवं चिकित्सा क्षेत्र में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें भारतीय विज्ञान अकादमी का फेलो चुना गया। डॉ. नागराज हुइलगोल की यात्रा इस बात का उदाहरण है कि चिकित्सा केवल एक पेशा नहीं, बल्कि मानव जीवन को बेहतर बनाने की निरंतर साधना है। उनका ज्ञान, अनुभव, अनुसंधान और सेवा भाव आने वाली पीढ़ियों के चिकित्सकों एवं शोधकर्ताओं के लिए निश्चित रूप से प्रेरणा का स्रोत है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रमुख राजनीतिक प्रदिप जैन आदित्य के सुपुत्र गौरव के विवाह में सामाजिक एंव राजनैतिक हस्तियां ने दिये अनमोल आर्शीवाद

विवाह समारोह में आर्शीवाद का अपना एक महत्व रहता है। नव दंपती को आर्शीवाद देकर उनके मंगल भविष्य की कामना करते हुए हर कोई उत्साह के साथ अपने आर्शीवाद देकर समारोह को भव्य बनाता है। विवाह प्रसिद्ध परीवार में हो तब पुरा परीवार मित्र वर्तुल सहीत स्नेही सब उपस्थित रहते हैं।

पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य के सुपुत्र जो उच्च न्यायालय के अधिवक्ता एवं प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मीडिया प्रवक्ता गौरव मैत्रेय जैन के विवाहो परांत नई दिल्ली के होटल अशोका में प्रीतिभोज समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में पहुंचकर अतिथियों ने नवविवाहित दंपति को सुखद एवं मंगलमय वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएं दीं। प्रीतिभोज समारोह में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर, सांसद प्रमोद तिवारी, अमेठी सांसद किशोरी लाल शर्मा, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, अयोध्या सांसद अवधेश प्रसाद, सांसद धर्मेंद्र यादव, उद्योगपति एवं सांसद नवीन जिंदल सहित कcई प्रमुख राजनीतिक एवं सामाजिक हस्तियां मौजूद रहीं।

नई दिल्ली में एक भव्य शादी ने उस वक्त राजनीतिक गलियारों में भी चर्चा बटोर ली, जब एक ही छत के नीचे देश की राजनीति के कई बड़े चेहरे नजर आए। मौका था पूर्व केंद्रीय मंत्री और झांसी से लोकसभा सांसद रह चुके प्रदीप जैन आदित्य के बेटे गौरव जैन और ऐश्वर्या के विवाह समारोह का, पांच सितारा होटल में आयोजित इस भव्य समारोह में कांग्रेस से लेकर समाजवादी पार्टी और दूसरे राजनीतिक दलों के कई दिग्गज नेता पहुंचे।

पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन के बेटे की शादी में सियासी सितारों का जमावड़ा था। जिसमें राहुल, अखिलेश, प्रियंका समेत 100 से अधिक एमपी पहुंचे। समारोह में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी समेत बड़ी संख्या में सांसद और वरिष्ठ नेता शामिल हुए। राजनीतिक चेहरों के अलावा अफसरशाही, उद्योग जगत, न्यायपालिका और मीडिया से जुड़े कई नामचीन लोग भी समारोह में नजर आए।

राहुल-अखिलेश-प्रियंका अपने राजनीतिक व्यस्तता के बावजूद शादी में शरीक हुए और उन्हों ने प्रदीप जैन परिवार के साथ विवाह समारोह में आकर शुभकामनाएं दी। गौरव जैन और ऐश्वर्या के विवाह समारोह में राजनीतिक जगत की मौजूदगी सबसे ज्यादा चर्चा में रही। राहुल गांधी, अखिलेश यादव और प्रियंका गांधी के एक ही समारोह में पहुंचने से आयोजन की राजनीतिक अहमियत भी बढ़ गई। इसके अलावा धर्मेंद्र यादव, जयंविका पाल, प्रमोद तिवारी और किशोरी लाल शर्मा समेत कई सांसद और अन्य लोग भी शामिल हुए।

होटल अशोका में आयोजित हुआ इस समारोह में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर, सांसद प्रमोद तिवारी, अमेठी सांसद किशोरी लाल शर्मा, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, अयोध्या सांसद अवधेश प्रसाद, सांसद धर्मेंद्र यादव, उद्योगपति एवं सांसद नवीन जिंदल सहित कई प्रमुख राजनीतिक एवं सामाजिक हस्तियां मौजूद रहीं।

समारोह के दौरान उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय, यूपी प्रभारी राजेंद्र गौतम, पूर्व एमएलसी दीपक सिंह, पूर्व विधायक प्रदीप माथुर, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अमिताभ निगम, अमित श्रीवास्तव त्यागी, अनुराग श्रीवास्तव, डॉ. चंद्रपाल सिंह यादव President – ICA-AP, Vice Chairman – KRIBHCO, Chairman – KRIBHCO Fertilizers Limited (KFL), Governing Council Member – NCUI, सांसद अनुराग शर्मा वरिष्ठ पत्रकार उदय प्रताप सिंह, कृष्ण कुमार दुबे तथा सहित सहारा जीवन के संपादक संतोष श्रीवास्तव सहित अन्य लोग मौजूद रहे। समारोह में शामिल अतिथियों ने गौरव मैत्रेय जैन एवं उनकी जीवनसंगिनी को नवजीवन की शुरुआत पर बधाई देते हुए उनके सुख, समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रीतिभोज के दौरान राजनीतिक, सामाजिक एवं पत्रकारिता जगत की कई प्रमुख हस्तियों की मौजूद रहीं।

स्टार रिपोर्ट मेगेज़िन की और से नवदंपति को सुखी वैवाहिक जीवन के लिए हार्दिक बधाई।

मरीजों के लिए आशा का किरण है

डॉ. मनोज राजानी

वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट

मरीजों के लिए डॉक्टर वह प्रशिक्षित व्यक्ति हैं जो बीमारियों की पहचान करते है, मरीज़ के स्वास्थ्य की देखभाल करते है, और जीवन बचाते है। मुख्य भूमिकाएं निदान (Diagnosis): बीमारी का कारण पता लगाना। उपचार (Treatment): सही दवा और सलाह देना। देखभाल (Care): दर्द कम करना और स्वास्थ्य सुधारना। मरीजों के लिए महत्वपूर्ण बात है भरोसा। मरीज की बात है सुनकर सुरक्षित महसूस कराना।मार्गदर्शन स्वस्थ रहने के तरीके सिखाना।

मुंबई के उपनगर बोरिवली में डॉ. मनोज राजानी पिछले 17 वर्षों से मुंबई के पश्चिमी उपनगरों में वरिष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट (Senior Consultant Neurologist) के रूप में सेवाएँ दे रहे हैं। उन्हें न्यूरोलॉजी के क्षेत्र में 22 वर्षों से अधिक का अनुभव है। उन्होंने पश्चिमी उपनगर में पहले समर्पित न्यूरोसाइंस अस्पताल – WINS (Western India Neuroscience Hospital) की स्थापना की है। यह अस्पताल लकवा (Paralysis), स्ट्रोक (Stroke), कोमा (Coma), मस्तिष्क के ट्यूमर (Brain Tumours), मिर्गी (Epilepsy), चक्कर आना (Vertigo), न्यूरोमस्कुलर विकार (Neuromuscular Disorders) तथा अन्य जटिल तंत्रिका संबंधी रोगों के उपचार में विशेषज्ञता रखता है। इस लेख के माध्यम से हमारा अनुभव यंहा साझा करके एक भरोसा और १००% परीणाम से आप वाचक मित्रों से रुबरु करवाने का यह प्रयास है।

घटना कुछ इस तरह से हुई है की स्टार रिपोर्ट मेगेज़िन के प्रधान संपादक हार्दिक हुंडिया अपने कार्यालय से शाम के समय अपनी नीजी कार से घर जा रहे थे , अचानक बैचेनी होने लगी ड्राइवर के पास चोकलेट मांगी फिर भी तकलीफ़ कम नहीं हुई, वे घर पहुंचे । उनके धर्म पत्नी सुनिता बेन ने फोन पर परामर्श करके जुबान के नीचे रखने के लिए एक गोली दी। थोड़ा आराम मिला लेकिन देर रात फिर से वही प्रोब्लम शुरू हुई। सुबह में बेटी निराली और दामाद जी अनुज़ और सुनिताबेन डॉ. मनोज राजानी के होस्पिटल में पहुंच गए।

सबसे पहले तो हम जिस होस्पीटल में जाते हैं और अगर वहां का स्टाफ मरीज़ की देखभाल करने के लिए तत्पर हो तो समझिए मरीज़ बहुत जल्द ठीक हो जाते हैं। डॉ. मनोज राजानी की होस्पिटल न्यु विन्स में भी बहुत ही अच्छा रिस्पॉन्स मिला और बहुत ही त्वरित और आधुनिक ट्रिटमेंट हार्दिक भाई को मिली। एमआईआर, सारे टेस्ट के बाद दिमाग में क्लोट की वज़ह से ब्रेईन स्ट्रोक का निदान हुआ। आईसीयू में डॉ. मनोज राजानी के मार्गदर्शन में हार्दिक भाई को प्रोपर ट्रिटमेंट मीली। डॉ. मनोज राजानी की आधुनिक ट्रिटमेंट के कारण महज एक महीने में 80 % सुधार के साथ हार्दिक भाई फिर से अपने पैरों पर खड़े हो गये है। कोई भी बिमारी आती है लेकिन उस बिमारी को भरोसा दिला सके वैसे मनोज राजानी जैसे काबिल डोकटर मिल जाये तो मरीज़ को जल्दी रिकवरी मिल जाती है।

इस अस्पताल में आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जिनमें न्यूरो आईसीयू (Neuro ICU), स्ट्रोक यूनिट, अत्याधुनिक लैमिनर एयरफ्लो युक्त न्यूरोसर्जिकल ऑपरेशन थिएटर, Carl Zeiss (Germany) माइक्रोस्कोप, C-Arm जैसी उन्नत तकनीकों से सुसज्जित उपकरण शामिल हैं, जिनकी सहायता से जटिल न्यूरोसर्जरी सफलतापूर्वक की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, अस्पताल में Nihon Kohden (Japan) की अत्याधुनिक मशीन उपलब्ध है, जिसके माध्यम से EEG, NCS, EMG, SSEP, BAER तथा VEP जैसी उन्नत न्यूरोडायग्नोस्टिक जाँचें की जाती हैं। रोगियों के संपूर्ण पुनर्वास (Rehabilitationके लिए अस्पताल में फिजियोथेरेपी (Physiotherapy स्पीच थेरेपी Speech Therapy) तथा ऑक्यूपेशनल थेरेपी (Occupational Therapy) की भी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

डॉ. मनोज राजानी ने वर्ष 1992 में MBBS तथा वर्ष 2000 में DM (Neurology) की डिग्री किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज से प्राप्त की। इसके अतिरिक्त उन्होंने SGPGI (Sanjay Gandhi Postgraduate Institute of Medical Sciences) में भी विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनेक न्यूरोलॉजी सम्मेलनों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं तथा चिकित्सकों और विभिन्न चिकित्सा संगठनों के लिए अनेक Continuing Medical Education (CME) कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन भी कर चुके हैं।

हम सब चाहते हैं बिमारी ना आये पर अगर शरीर है अचानक कुछ संकेत जो गंभीर है तो तुरंत डॉक्टर के पास जाकर उसकी प्रोपर ट्रिटमेंट करवानी चाहिए। डॉ. मनोज राजानी पुरे दिन अपने मरीजों को जल्द से जल्द स्वस्थ करने के लिए प्रयास करते हैं। मरीजों के परीवार को बिमारी के बारे में समजाते है। इतनी व्यस्तता के बावजूद डॉ. मनोज राजानी सौम्य स्वभाव के धनी हैं। और होस्पिटल कि स्टाफ मरीजों कि हर संभव मदद करने के लिए तैयार रहते हैं।

परिमल नथवाणी उद्योग, जनसेवा और राष्ट्रसेवा के समर्पित व्यक्तित्व राज्यसभा के चौथी बार सदस्य बने परिमल नाथवाणी की बहुआयामी यात्रा भारतीय सार्वजनिक जीवन में कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं, जिनकी पहचान केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहती। उद्योग जगत से लेकर सामाजिक सेवा, खेल, संस्कृति और संसदीय जीवन तक अपनी सक्रिय भूमिका निभाने वाले परिमल नाथवाणी ऐसे ही बहुआयामी व्यक्तित्व हैं।

जगत के नाथ श्री कृष्ण में विशेष श्रद्धा रखते हैं परीमल नथवाणी

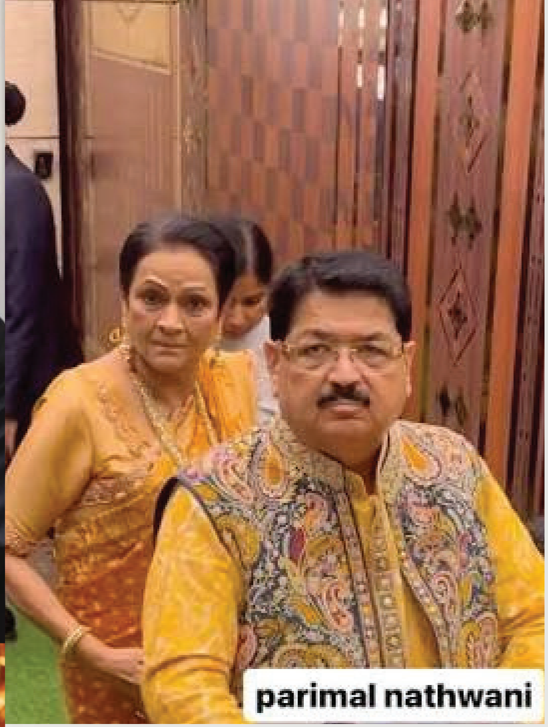

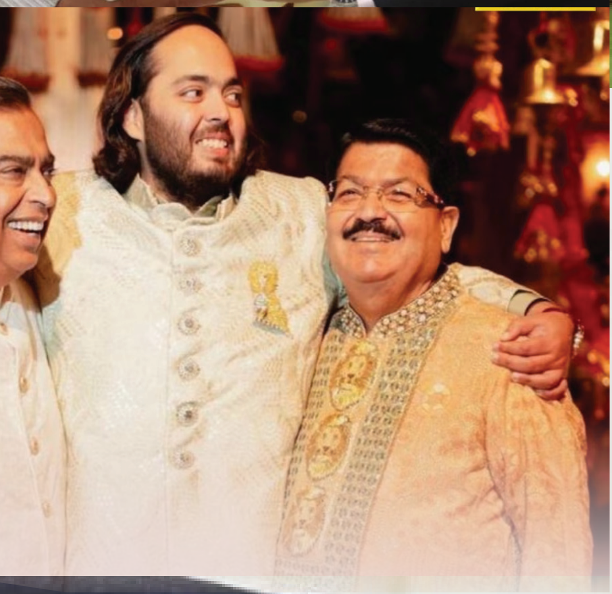

वर्ष २०२६ में झारखंड से राज्यसभा के लिए निर्वाचित होकर उन्होंने उच्च सदन में अपने चौथे कार्यकाल की शुरुआत की है। इस चुनाव के साथ उनकी संसदीय यात्रा एक बार फिर झारखंड से जुड़ गई है। इससे पहले वे वर्ष २००८ से २०२० तक झारखंड का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और वर्ष २०२० में आंध्र प्रदेश से राज्यसभा पहुंचे थे। झारखंड को वे केवल एक राजनीतिक क्षेत्र के रूप में नहीं, बल्कि अपनी कर्मभूमि के रूप में देखते हैं। राज्य के साथ उनका जुड़ाव लंबे समय से रहा है और जनसेवा तथा विकास के विभिन्न कार्यों के माध्यम से उन्होंने इस संबंध को मजबूत किया है। मुंबई से शुरू हुई यात्रा परिमल नाथवाणी का जन्म १ फरवरी १९५६ को मुंबई में हुआ। उनका पारिवारिक संबंध गुजरात के जामनगर जिले के खंभालिया से रहा है। मुंबई में शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में अपना करियर बनाया।

बाद में उनका जुड़ाव रिलायंस समूह से हुआ, जहां उन्होंने संस्थापक धीरूभाई अंबानी के साथ काम किया और आगे चलकर मुकेश अंबानी के साथ भी लंबे समय तक कार्य किया। उद्योग जगत में उन्होंने संस्थागत संबंधों, सरकारी समन्वय और महत्वपूर्ण परियोजनाओं से जुड़े कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रिलायंस से जुड़े उनके लंबे अनुभव ने उन्हें उद्योग और शासन व्यवस्था के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने की विशेष समझ दी। जामनगर में रिलायंस की विशाल औद्योगिक परियोजना के विकास से जुड़े कार्यों में भी उनके योगदान का उल्लेख मिलता है।

उद्योग से संसद तक

उद्योग जगत में अपनी पहचान बनाने के बाद परिमल नाथवाणी ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। वर्ष २००८ में वे पहली बार झारखंड से राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुए। इसके बाद वर्ष २०१४ में वे पुनः राज्यसभा पहुंचे। वर्ष २०२० में वे आंध्र प्रदेश से राज्यसभा सदस्य बने और २०२६ में एक बार फिर झारखंड से उच्च सदन के लिए निर्वाचित हुए। इस प्रकार वे राज्यसभा के चौथी बार सदस्य बने हैं उनकी संसदीय यात्रा की एक विशेषता यह भी रही है कि उन्होंने लंबे समय तक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में संसद में अपनी भूमिका निभाई है।

परिमल नाथवाणी भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं के प्रति भी गहरी आस्था रखते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उनकी विशेष श्रद्धा का उल्लेख राज्यसभा के आधिकारिक परिचय में भी किया गया है। द्वारकाधीश मंदिर से जुड़े दायित्वों तथा नाथद्वारा मंदिर से संबंधित संस्थाओं में भी उन्होंने विभिन्न भूमिकाएं निभाई हैं। धार्मिक संस्थाओं के साथ उनका जुड़ाव भारतीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के प्रति उनकी रुचि को दर्शाता है।

संसद में सक्रिय भागीदार

राज्यसभा में अपने लंबे कार्यकाल के दौरान परिमल नाथवाणी ने विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे और संसदीय कार्यवाही में भाग लिया है। उपलब्ध संसदीय आंकड़ों के अनुसार अप्रैल २०२६ तक उनके नाम पर लगभग १,९६० प्रश्न दर्ज हैं। यह उनकी संसदीय भूमिका के उस पक्ष को सामने लाता है, जिसमें वे विभिन्न मंत्रालयों और जनहित से जुड़े विषयों पर जानकारी प्राप्त करने तथा मुद्दों को सदन में उठाने का प्रयास करते रहे हैं।

लेखन के माध्यम से भी झारखंड से जुड़ाव

परिमल नाथवाणी ने झारखंड के साथ अपने अनुभवों और संबंधों को लेखन के माध्यम से भी सामने रखा है। उन्होंने 'झारखंड : मेरी कर्मभूमि' नामक पुस्तक लिखी है, जिसमें राज्य के प्रति उनके जुड़ाव और अनुभवों को अभिव्यक्ति मिली है। यह पुस्तक उनके लिए झारखंड के साथ केवल राजनीतिक संबंध नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक जुड़ाव का भी परिचायक है। बहुआयामी व्यक्तित्व की पहचान परिमल नाथवाणी की जीवन यात्रा को देखें तो इसमें उद्योग, प्रशासन, राजनीति, समाजसेवा, खेल और संस्कृति—इन सभी क्षेत्रों का समन्वय दिखाई देता है।

यह उस व्यक्ति की यात्रा है जिसने उद्योग जगत में काम करने के बाद सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी जिम्मेदारियां निभाईं। उनकी यात्रा में उद्योग की समझ, प्रशासनिक अनुभव, सामाजिक सरोकार, खेल के प्रति रुचि, संस्कृति के प्रति आस्था और संसदीय जिम्मेदारी—इन सभी का संगम दिखाई देता है।

आज जब वे चौथी बार राज्यसभा में पहुंचे हैं, तब उनके सामने झारखंड सहित देश के व्यापक जनहित से जुड़े विषयों पर अपनी भूमिका निभाने की नई जिम्मेदारी है। परिमल नाथवाणी का व्यक्तित्व इस बात का उदाहरण है कि सार्वजनिक जीवन में प्रभाव केवल पद से नहीं, बल्कि लंबे समय तक किए गए कार्यों, बनाए गए संबंधों और समाज के प्रति निभाई गई जिम्मेदारियों से निर्मित होता है। उद्योग से संसद तक और विकास से संस्कृति तक उनकी यात्रा इसी बहुआयामी व्यक्तित्व की कहानी कहती है।

दोस्त नंबर वन भी हैं गोविंदा

– हार्दिक हुंडिया

फ़िल्म स्टार गोविंदा का नाम याद आते ही एक हसता खेलता, सब को खुश कर देता चेहरा सामने आ जाता है। उनके साथ कई बार बैठने का मौक़ा मिला। हर बार नई खुशियाँ भरी बाते। एक बार उनके मुँह से माँ की बाते सुनी है देश भक्ति और देश प्रेम तो गोविंदा में कूट कूट के भरा है...

हार्दिक हुंडिया ने कहा, "गोविंदा कलाकार , तो कलाकार नंबर १ है, दोस्तों का दोस्त भी दोस्त नंबर १, जैसे हीरो नंबर १। फ़िल्मों में हास्य का बेताज बादशाह तो राजनीति में भी एक सफल राजनेता हैं। बड़े बड़े उद्योगपतियों से भी बहुत अच्छे तालुक हैं। हीरा बाज़ार के "मैन ऑफ़ द मिलेनियम" भरत भाई शाह हो या विश्व के हीरा बाज़ार में भारत का नाम रोशन करने वाले विजय भाई शाह हो। विजय भाई और भरत भाई प्यार से गोविंदा को चीची कहते हैं। एक समय देश का सबसे व्यस्त कलाकार गोविंदा आज भी सब के दिलो में छाया हुआ है।

गोविंदा बहुत ही भावुक कलाकार है। एक बार उनके पास बैठने का मौक़ा मिलता है तो घंटों तक उठने का मन नहीं करता। हार्दिक हुंडिया ने कहा इन की बातो में अपनापन दिखता है। वो जिसे अपना मानता है उन से दिल खोलकर अपनी बात बताते हैं। गोविंदा की जब फ़िल्म देखते हैं तब तीन घंटा कहा चला जाता है पता ही नहीं चलता।

उनका अभिनय, कॉमेडी आज भी पुरानी और नई फ़िल्म देखते हैं तो आज भी पूरी फ़िल्म देखकर ही खड़े होते हैं। देश के फ़िल्म जगत के मैन ऑफ़ द मिलेनियम अमिताभ बच्चन हो या दुनिया में हीरा उत्पादन में प्रथम स्थान पर हीरा बाज़ार के मैन ऑफ़ द मिलेनियम भरत भाई शाह हो, देश के दोनों महानुभावों के साथ संबंध रखने वाले गोविंदा कहीं भी, किसी भी कार्यक्रम में जाते है तो वो कार्यक्रम को चार चांद लगाते है मतलब उनकी हाजरी ही प्रोग्राम की शोभा बढ़ा देती है।

एक मातृ भक्त गोविंदा

वो अनंत उपकारी माँ के जब गुण गाते है तब लगता है की माँ के बारे में सुनते जाओ। विरार का छोरा मेहनत करके मुंबई का सबसे रिहायशी इलाक़ा जुहू तक का सफ़र यानी गोविंदा की तनतोड़ मेहनत। आज भी गोविंदा को जब भी विरार में लगता है की उन्हें जाना चाहिए तो तुरंत दौड़ जाते हैं। ये है उनका बचपन का प्रेम। गोविंदा बहुत अच्छे सिंगर भी हैं, उन्होंने गाने भी गाये है जो बहुत ही कर्णप्रिय है। एक बार जिनसे दोस्ती गोविंदा की हो जाती है वो दोस्ती गोविंदा जीवन भर निभाते हैं।

अभिनय, नृत्य और हास्य का बेमिसाल सितारा

गोविंदा ने 1980 और 1990 के दशक में बॉलीवुड में ऐसा दौर देखा, जब उनकी फिल्मों का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार रहता था। रोमांस हो, कॉमेडी हो या भावनात्मक किरदार—उन्होंने अलग-अलग भूमिकाओं में अपनी प्रतिभा साबित की। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस इतनी प्रभावशाली थी कि साधारण कहानी भी उनके अभिनय और अंदाज से मनोरंजक बन जाती थी। उनकी सबसे बड़ी खूबियों में से एक उनका नृत्य रहा है। गोविंदा का डांस किसी तय शैली तक सीमित नहीं था। उनके चेहरे के भाव, शरीर की लय और गीतों के साथ उनका स्वाभाविक तालमेल दर्शकों को बेहद पसंद आया। यही कारण है कि उनके कई डांस स्टेप्स और अंदाज आज भी लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा हैं।

कॉमेडी के क्षेत्र में भी गोविंदा का योगदान बेहद खास है। उन्होंने हास्य को केवल संवादों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि अपने हाव-भाव, संवाद बोलने के अंदाज और टाइमिंग से उसे एक अलग ऊंचाई दी। डेविड धवन के साथ उनकी फिल्मों की जोड़ी ने हिंदी सिनेमा में कॉमेडी फिल्मों के एक यादगार दौर को जन्म दिया। कुली नंबर 1, हीरो नंबर 1, बड़े मियां छोटे मियां, दुल्हे राजा और हसीना मान जायेगी जैसी फिल्मों ने उनकी लोकप्रियता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

गोविंदा की खासियत यह भी रही कि वे दर्शकों से जुड़ने में सफल रहे। उनके किरदारों में एक आम इंसान की सहजता, शरारत और भावनाएं दिखाई देती थीं। यही वजह है कि उनके प्रशंसकों ने उन्हें केवल एक अभिनेता के रूप में नहीं, बल्कि अपने मनोरंजन की दुनिया के एक खास चेहरे के रूप में स्वीकार किया।

समय के साथ फिल्म इंडस्ट्री में अभिनय की शैलियां और दर्शकों की पसंद बदलती गई, लेकिन गोविंदा की लोकप्रियता कम नहीं हुई। उनकी फिल्मों के गीत, संवाद और डांस आज भी सोशल मीडिया और युवा पीढ़ी के बीच चर्चा में रहते हैं। नई पीढ़ी भी उनके पुराने गीतों और फिल्मों को नए अंदाज में पसंद करती है।

गोविंदा का फिल्मी सफर यह साबित करता है कि एक कलाकार की असली पहचान केवल बॉक्स ऑफिस की सफलता से नहीं, बल्कि दर्शकों के दिलों में बनाई गई जगह से होती है। अभिनय, हास्य और नृत्य—इन तीनों क्षेत्रों में अपनी अलग छाप छोड़ने वाले गोविंदा हिंदी सिनेमा के उन सितारों में हैं, जिनका अंदाज किसी दूसरे कलाकार से आसानी से मेल नहीं खाता। गोविंदा सिर्फ एक सुपरस्टार नहीं, बल्कि एक ऐसा मनोरंजन-प्रतीक हैं, जिनकी मुस्कान, डांस और कॉमेडी ने कई पीढ़ियों को हंसाया और उनका मनोरंजन किया है।

मिच्छामी दुक्कड़म व्यवहार में नहीं है , एक बार मन , वचन, काया से बोलो , फिर दुबारा बोलने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हार्दिक हुंडिया का मिच्छामी दुक्कड़म का ये लेख आप एक बार जरूर पढ़े...

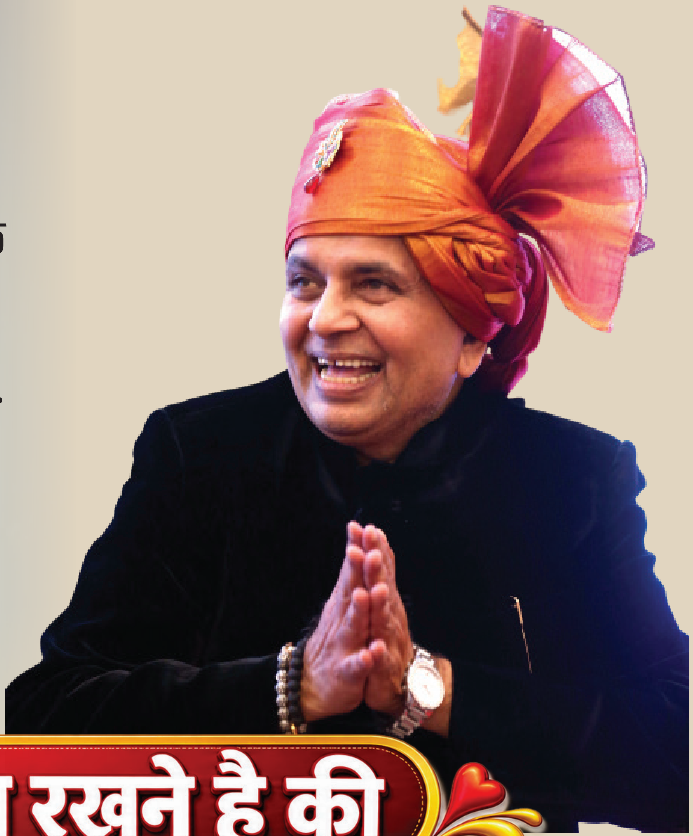

मुझे आप से ऐसे संबंध रखने है की जिंदगी में आप को कभी ना बोलू "मिच्छामी दुक्कड़म"

: हार्दिक हुंडिया

मिच्छामी दुक्कड़म शब्द में ग़ज़ब की ताक़त है, कई सालों से नहीं , कई भवो से चलती आ रही आप की बैर ज़ैर की भावना को नष्ट कर देगी और आप की ज़िंदगी में प्रेम का, प्यार का , मित्रता का नया दीपक शुरू होगा , जो कभी नहीं बुझेगा और आपके जीवन को नई रोशनी देगा । चातुर्मास बैठ गया है , लगभग ग्रुप्स में चौमासी चौदस का मिच्छामी दुक्कड़म । चातुर्मास शुरू होने के पहले मेरी कोई गलती हुई हो तो मिच्छामी दुक्कड़म, ये अद्भुत ताक़तवर शब्द को सिर्फ़ हमने व्यवहार बना दिया।

व्यवहार नहीं एक बार जिनके साथ आप के कोई ऐसे शब्द से , आप के कोई व्यवहार से तकलीफ़ हुई हो ? आप को पता चले की मेरी गलती हुई है , सामने वाले को ठेस पहोची हो तो उनके घर जा के एक बार मन में बिना कपट जा के दिल से बोलो की मेरी बहुत बड़ी गलती हुई है अब दुबारा नहीं होगी , मैं दो हाथ जोड़ के आप से माफ़ी माँगता हूँ मुजे माफ़ करो , मेरा मिच्छामी दुक्कड़म स्वीकार करे। देखो फिर परिणाम । दोनों की आँखोमे प्यार के , ख़ुशी के आँसू !

आप को दुबारा मिच्छामी दुक्कड़म कहने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी फिर कभी आपस में कोई छोटी मोटी घटना हो गई तो दोनों एक ही बात सोचेंगे , जाने दो ये जान बुजकर नहीं हुई है । आपस में प्रेम भाईचारा बढ़ेगा । हार्दिक हुंडिया का कहना है कि एक बार जान बुजकर भी कितना भी बड़ा ऐसा बनाव आपस में बन गया हो की आप के सर्प नेवला जैसा संबंध हो गया हो? वहाँ जा के एक बार मिच्छामी दुक्कड़म बोलके तो देखो ? क्या चमत्कार होगा? साप और नेवला साथ में खाना खाते नजर आयेंगे !

भगवान महावीर ने चंडकौशिक जैसे भयंकर सर्प को कहा था की बुझ बुझ चंड कोशिया? क्या चमत्कार हुआ? चंडकौशिक के क्रोध के सामने भगवान का प्यार जीता। आज हमारे शास्त्रों में चंडकौशिक का भी इतिहास लिखा गया ।

मिच्छामी दुक्कड़म अब से व्यवहार या इमेज में नहीं दिल से बोलो , सामने वाले का ऐसा मन जीतो की आप के व्यवहार में कभी छोटी मोटी गलती हो भी जाये तो दोनों के मन में एक ही बात आए की मेरा कल्याणी मित्र मुजे कुछ बोल गया तो कही मेरी गलती हुई होगी ? अब ध्यान रखूँगा की वापस वो गलती ना हो? मेरे संपर्क में जो भी आए , उन सभी से मैं ऐसा व्यवहार करूँ की ये भव हो, या परभव, कभी भी मिच्छामी दुक्कड़म कहना ना पड़े । आओ आज से मेरे सभी कल्याणी मित्रो तय करे की एक बार मिच्छामी दुक्कड़म जैसा ताक़तवर शब्द का उपयोग वहाँ करे , जहाँ जीवन भर अँधेरा समाप्त हो ज़िन्दगी में उजाला ही उजाला हो ऐसी उच्च भावनाओ के साथ अंतिम बार मेरा मिच्छामि दुक्कड़म स्वीकार करे ।

आदमी मुसाफ़िर है , आता है जाता है , आते जाते रस्तेमे , कुछ ना कुछ घटना घट जाती है तो पर्वाधिराज पर्युषण महा पर्व का प्रतिक्रमण करने से पहले उन आत्मा को जरूर मिच्छामी दुक्कड़म कहना।

हम आभारी हैं
अमित शाह
भूपेन्द्र पटेल
सुमेर हुंडिया
आशिष मेहता
महेन्द्र परीख
आसित मेहता
जगदीश कुंभट
धर्मेश बोथरा
परिमल झवेरी
अजय शाह
पिनाकिन शाह
समीर शाह
मौलिक शाह
अरविंद देसाई
शांतिलाल कवाड़
भैरू चौधरी
ब्रम्हदेव शुक्ला
रोशन संघवी
दिव्यकांत शाह
नचीकेता ब्रम्हभट्ट
राजेश रूपावत
प्रकाश हेक्कड़
महेन्द्र गांधी
अजय मेहता
दिनेश सोलंकी
उदय चिनॉय
वसंत गलिया
प्रवीण आम्बानी
विनोद डोंगा
धनसुख कांकरिया
संजय पिलंकर
किशोर झाटकिया
राकेश हुंडिया

स्टार के सुपरस्टार
बिपिन गाला